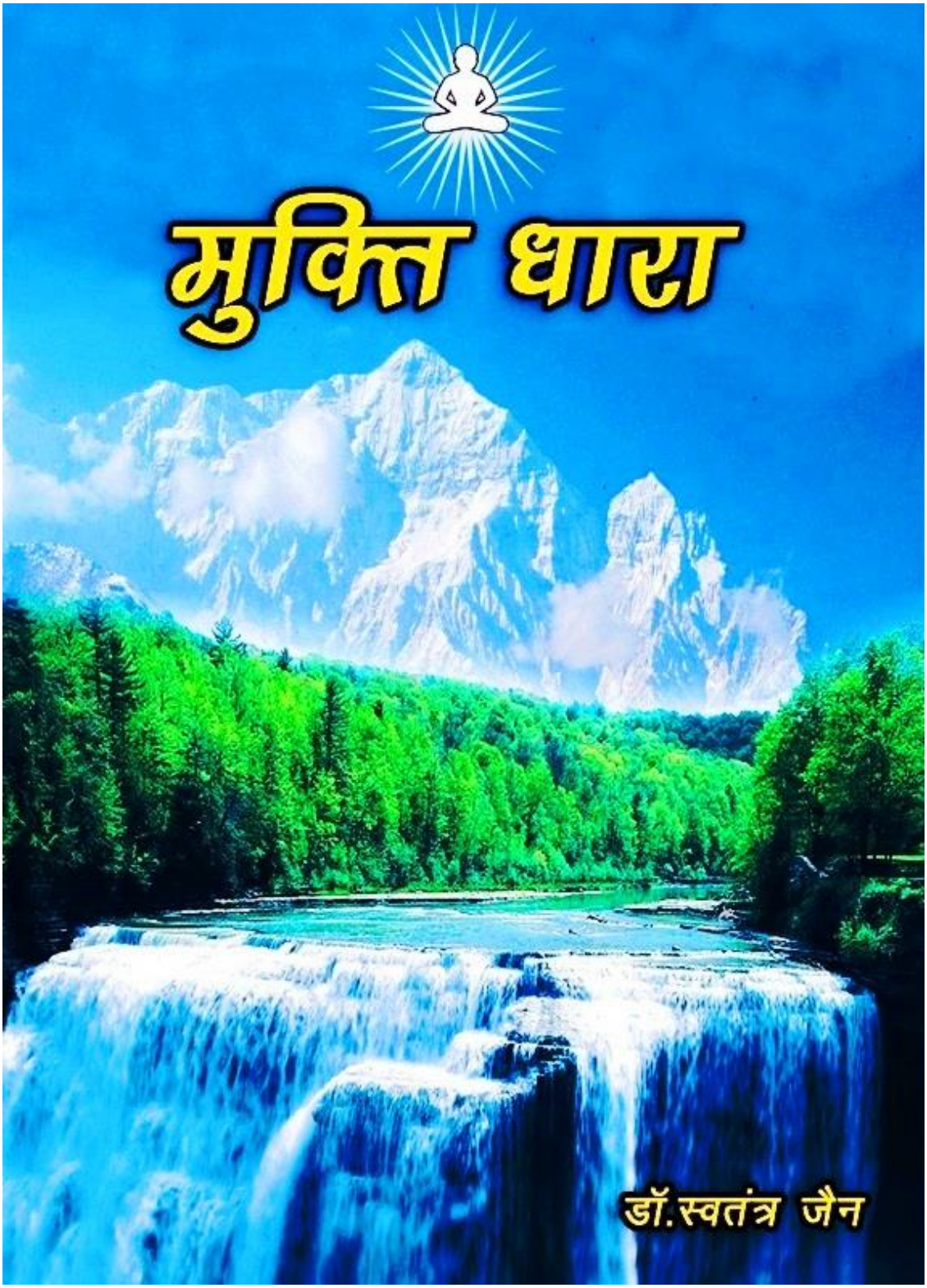
मुक्ति धारा
डॉ.स्वतंत्र जैन

वीर
अखिल भारतीय दिगम्बर जैन परिषद का मुखपत्र, नई दिल्ली
दिसम्बर 2006

(समीक्षा)

मुक्तियाँ

आप इस ब्रह्माण्ड जैसे विशाल और शक्तिशाली हो सकते हैं, लेकिन कैसे ? यह संसार दुःख का सागर है, फिर आपको सदाकाल रहने वाले सुख का अमृत कुछ मिले तो कैसे ? आप स्वयं सिद्ध बुद्ध हो, लेकिन कैसे ? आप स्वयं परमात्मा हो सकते हो, लेकिन कैसे ? सभी प्राणी, सभी मनुष्य समान हैं, क्योंकि सभी परमात्मा हैं, लेकिन कैसे ? इस संसार में सुख का साम्राज्य स्थापित हो सकता है, लेकिन कैसे ? ऐसे प्रश्नों का उत्तर देने के सद्प्रयास से सराबोर, शाश्वत सुख को दर्शाने वाली आध्यात्मिक कृति 'मुक्तियाँ' चिन्तन, मनन और अध्ययन की दृष्टि से एक प्रभावी कृति है जो मुक्ति को आत्मसात कर भगवान बनने की दृष्टि से विचारोत्तेजक एवं पठनीय कृति है।

लेखक ने जिनागम रत्नाकर के मंथन से अमृतरस से भरपूर एक सौ एक रत्नों को उदहारण देकर तत्व समझाने की अभिनव पद्धति से तत्वप्रेमियों को जिस कौशल से परोसा है, उसके लिए यह निश्चित ही एक विचारोत्तेजक, पठनीय और उपयोगी पुस्तक बन पड़ी है।

सन्मति सन्देश

आध्यात्मिक सदाचार एवं सत्य तथ्य प्रकाशक मासिक पत्रिका, दिल्ली

जुलाई 2002

समीक्षा

मुक्तियाँ

सुना है कि समुद्र मंथन से 14 रत्न निकले थे, उनमें एक अमृत और विष भी था । किन्तु जिनागम रत्नाकर के मंथन करने से 101 रत्न निकाले गये हैं। वे सभी मात्र अमृतरस से भरपूर हैं।

आत्मार्थी को सत्पथ प्रदर्शक मुक्ति के साधक ये बोल अनुभव की मथानी से मंथन किये गये हैं । उदाहरण देकर तत्व समझाने की अभूतपूर्व पद्धति है इसमें ।

तत्वप्रेमी को अपूर्व शांति रस की प्राप्ति होगी ।

मुक्ति-धारा

विवरणिका

1. प्रत्यक्ष सद्गुरु ही लाईट हाउस के समान परम उपकारी होते हैं
2. आप अभी संसार की खदान में रह रहे हीरक-परमात्मा ही हो
3. सम-द्रष्टि या ज्ञानी से ही आत्मदेव को समझें
4. मुक्ति के मार्ग पर बहुत सम्हल कर चलें
5. अविनाशी आत्मा का अनुभव करो
6. मोक्ष में रहने का समय आपके संसार में रहने के कुल समय से अनंत गुणा ज्यादा है
7. चैतन्यदेव का चिन्तन, मनन, गहन विचार कर धारण करे
8. मन और चित्त
9. विनम्र सेवक
10. वह चैतन्य प्रभो आप ही हो
11. मेरे अलावा अन्य कोई भी नहीं है
12. चैतन्य की सर्वोच्च गतिशीलता में रहो
13. शास्त्रों का बोझा नहीं उठायें
14. क्या आपकी इस जन्म की मेहनत बेकार जा रही है?
15. निज-चैतन्य तत्व में डूबें
16. त्रस पर्याय के पुण्य के नष्ट होने से पहले ही चेत जाओ
17. ज्ञानी बनने के लिए ज्ञानी महापुरुष के अन्तर्मन को जानो
18. शरीर आश्रित कर्मो का शमशान
19. आपकी आत्मा का शाश्वत एलबम
20. प्रत्येक जीव का कल्याण किस तरह सम्भव है?

21. क्या आप अपने स्वभाव से च्युत हो सकते हो?
22. भगवान के ज्ञान पटल पर सब अंकित है
23. कोई भी पर्याय आपकी है ही नहीं
24. क्या आपकी मेहनत बेकार जा रही है?
25. अब तो चैतन्य का स्पष्ट निर्णय करें
26. चैतन्य-नयन या ज्ञान-चक्षु को पाने का सरल मार्ग
27. सम्यकदर्शन सहित चंडाल भी पूज्य है
28. उत्तम बम्ह्चर्य धर्म
29. निगोद के कांटे को निकालो
30. उत्तम त्याग धर्म
31. चैतन्य-प्रभु बनने का मार्ग
32. ग्यारह अंग रूपी क्षयोपशमज्ञान
33. बोधिदुर्लभ भावना
34. उत्तम संयम धर्म
35. कोल्हू का बैल
36. लोक भावना
37. संसार चक्र
38. चतुर्गति का चक्र
39. सच्चे देव-शास्त्र-गुरु का त्रिभुज ही संसार को नष्ट करता है
40. केवली भगवन्त तो अभी ही सभी भव्य जीवो को अपने पास ही देख रहे हैं
41. अपने विलक्षण चैतन्य स्वरूप को हृदयंगम करो
42. मुक्तिपथ का पथिक
43. आत्म-दर्पण स्वच्छ, निर्मल, शुद्ध ही है
44. ईश्वर बनने का मार्ग
45. अवस्था या पर्याय में फेरफार असंभव है
46. चैतन्य-सम्राट भीख नहीं मांग सकता है
47. कोई भी जन्म लेने जैसा होता ही नहीं है

48. परमाणु के समान हम भी कभी भी नष्ट नही होते हैं
49. क्या केवलज्ञान की अनंत पर्यायें आपके द्रव्य में अभी भी विराजित हैं?
50. सांसारिक दलदल
51. अधोगति के निकृष्ट भवों से बचें

मुक्ति-धारा

1. प्रत्यक्ष सद्गुरु ही लाईट हाउस के समान परम उपकारी होते हैं

हे प्रभो, आप जानते ही हैं कि समुद्र के किनारे किसी भी बंदरगाह पर लाईट हाउस होता है.
यह लाईट हाउस समुद्र में भटक रहे या डूब रहे लोगो को प्रकाश दिखा कर उनको बचाता है और उनको किनारे पर लाता है.
साथ ही उनको अपने गंतव्य पर आगे बढ़ने का मार्ग भी बताता है.
इस तरह लाईट हाउस का काम ही भटक रहे या डूब रहे लोगो को जाकर बचाना ही होता है.
साथ ही अगर कोई समुद्री लुटेरा लोगो को ठगता है,
या इस लाईट हाउस के कार्य में बाधा डालता है,
तो इस लाईट हाउस के डायरेक्टर उस समुद्री लुटेरे को भी हटा देते हैं,
ताकि लोगो को बचाया जा सके और आगे इन लोगो को सुरक्षित मार्ग दिया जा सके.
इसी तरह हे प्रभो, सभी प्रत्यक्ष सद्गुरु भी लाईट हाउस के समान हैं

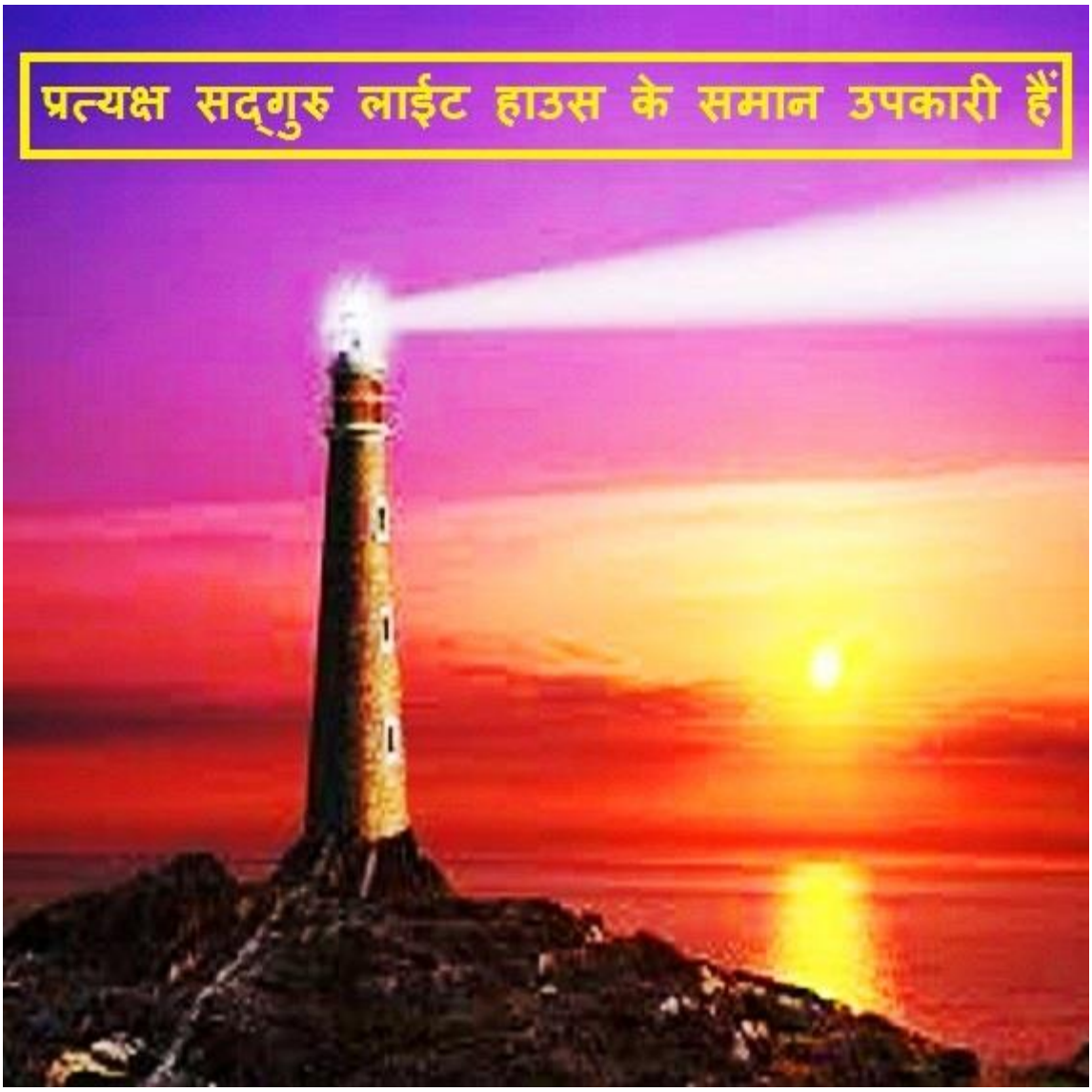

जो इस भव सागर में डूब रहे सभी लोगो को बचाने के लिए
अपनी हाउस बोट या बचाव कश्ती को उनके पास ले जाकर उन्हें बचाते हैं और
उन्हें इस भव सागर के किनारे पर ले आते हैं.
इस पंचम काल में आज तक हुए पूज्य कुन्दकुन्द आदि सभी आचार्य, टोडरमलजी,
श्रीमदजी, कानजीस्वामी आदि सभी परोक्ष ज्ञानी जन तो आज भव समुद्र में डूब रहे
जीव को दिशा दिखाने वाले ध्रुव तारे के समान ही हैं,
जो डूबते जीव को दिशा तो दिखाते हैं,
लेकिन अब उसका हाथ पकड़ कर उसे बचा नहीं सकते हैं.

इस तरह परोक्ष ज्ञानी आपके विचारों को एक दिशा देते हैं,
लेकिन वे अब आपको भव समुद्र में डूब रही अवस्था में बचाने नहीं आ सकते हैं.
लेकिन प्रत्यक्ष ज्ञानी तो आपकी दिशा के साथ ही दशा भी बदल सकते हैं
क्योकि वे तो अपनी हाउस बोट या बचाव कश्ती को आपके पास ले जाकर आपको बचाते हैं तथा फिर आपको इस भव सागर से किनारे पर ले आते हैं.
अतः आप चाहे तो जबतक आपकी साता वेदनीय का उदय है,
तब तक ध्रुव तारे के समान परोक्ष ज्ञानी से दिशा लेते रहे,
लेकिन कम से कम जब डूबने का खतरा दिखने लगे,
तब तो प्रत्यक्ष ज्ञानी की हाउस बोट या बचाव कश्ती का सहारा लेकर अपना यह मनुष्य जन्म सार्थक कर ले,
अन्यथा ऐसा उत्तम सुयोग पुनः आपको अनंत काल बाद ही मिलेगा.
श्रीमद राजचंद्रजी तो बार-बार कहते ही रहते हैं -
प्रत्यक्ष सद्गुरू सम नहीं
परोक्ष जिन उपकार
एवो लक्ष्य थया विना
उगे न आत्म विचार
आगे श्रीमद राजचंद्रजी समझाते हैं कि -
प्रत्यक्ष सद्गुरु प्राप्तिनो
गणे परम उपकार
त्रणे योग एकत्वथी,
वर्ते आज्ञाधार.
सच्चा शिष्य तो प्रत्यक्ष सद्गुरु की प्राप्ति का परम उपकार मानता है और मन-वचन और काय रूप तीनो योग की एकता से उन सद्गुरु की आज्ञानुसार आचरण करता है.
पुनः श्रीमद राजचंद्रजी वचनामृत 466 में सचेत करते हुए कहते हैं कि –
जैसे दूर के क्षीरसागर से यहाँ के तृषातुर या प्यासे जीव की तृषा शांत नहीं होती, परन्तु अगर एक मीठे पानी का कलश यहाँ हो, तो उससे जीव की तृषा अवश्य ही

शांत होती है.
इसीतरह पूर्व काल में हो गये अनंत ज्ञानी यद्धपि महाज्ञानी हो गये हैं, लेकिन उनसे जीव का कुछ दोष नहीं जाता है, अर्थात अगर इस समय जीव में कोई भूल या मान हो तो पूर्वकाल में हुए ज्ञानी कहने नहीं आयेंगे.
परन्तु हाल में जो प्रत्यक्ष ज्ञानी विराजमान हैं,
वे ही जीव के दोष बताकर उनको निकलवा सकते हैं.
इस बात पर बारम्बार विचार करें,
क्योकि इससे ही जीव का कल्याण जुड़ा है.
ॐ शांति.

2. आप अभी संसार की खदान में रह रहे हीरक-परमात्मा ही हो

1. किसी खदान के भीतर अत्यंत गहराई में पड़े हुए हीरे को अपने आप को क्या और कैसा मानना चाहिये?
2. क्या वह हीरा यह माने कि वह हीरा बनने की पात्रता रखता है?
3. या उसे यह मानना चाहिए कि वह तो खदान में रहने पर भी हीरा ही है.
4. क्या हीरे को अपने ऊपर पड़ी हुई पहाड़ सरीखी बुराई रुपी मिटटी-पत्थरों को अपनी अशुद्धि मान कर अपने आप को बीज रूप हीरा मानना चाहिये क्या?

आप अभी ही हीरक-परमात्मा हो

5. फिर उस अशुद्धि को हटाने में अपना बहुमूल्य मनुष्य जन्म का समय खर्च करना चाहिये?
6. फिर जब पहाड़ सरीखी बुराई रुपी मिटटी-पत्थर नष्ट हो जाएँ,
7. तभी उसे अपने को बीज-हीरे से पेड़ रुपी शुद्ध हीरक-परमात्मा मानना चाहिये?
8. आज का विज्ञान भी यह मानता है कि कोई भी हीरा जैसा है, वैसा ही रहेगा,
9. किसी भी छोटे बीज समान हीरे से वो बड़ा हीरा नहीं बन सकता है.
10. इसी तरह आप भी बीज से परमात्मा नहीं बन सकते हो.

11. अतः अब आप भी मान लो कि अभी ही आप संसार की खदान में रह रहे चैतन्य हीरक-परमात्मा हो और हमेशा रहोगे.

3. सम-द्रष्टि या ज्ञानी से ही आत्मदेव को समझें

इस संसार में रह रहे सभी लोगों को अब इस जन्म में तो अपने आत्म-कल्याण के लिए अवश्य ही प्रयत्न करना चाहिये.
इसके लिये उन्हें हमारे परम पूज्य कुन्दकुन्दस्वामी सरीखे आचार्यों और ज्ञानियों के मूल कोटेशन को ही समझने की कोशिश करना चाहिये
क्योकि पंडितों से तो हमारे पूज्य आचार्यों और ज्ञानियों के बोल या उनके अन्तरंग भाव संभल नहीं पाते हैं.
वे तो बस आचार्यों और ज्ञानियों के कथनों की भाषा की भूसी ही कूटते रहते हैं.
आप जानते ही हैं कि शास्त्रों के एक भी गलत निरूपण से उसके मानने वालों को जो दोष लगता है,
वह दोष तो उन सब के मिले-जुले कुल दोष से भी कई गुना ज्यादा दोष होता है.
बिना सम्यकदर्शन को प्राप्त किये खुद को पंडित मानकर दूसरों को शास्त्र समझाने या ज्ञानी जनों की देशना को समझाने वाले को गलत निरूपण करने का बहुत ज्यादा गंभीर दोष लगता है.

अहो, शास्त्रों में आता है कि सर्प द्वारा तो एक बार मरण होता है,
किन्तु कुगुरू अनंत बार मरण देता है;
अनंत बार बार के जन्म-मरण कराता है.
इसलिये हे भद्र जन, सर्प का गृहण तो भला है,
लेकिन कुगुरू का सेवन किसी भी तरह से भला नहीं है.
अतः प्रत्येक व्यक्ति को आत्म धर्म या जैन धर्म का निरूपण बहुत सावधानी से इस भव-भ्रमण से डरते-डरते करना चाहिये.
साथ ही पढ़ने और सुनने वालों को भी ध्यान रखना चाहिये कि वे समझाने वाले से पूंछ लें कि क्या वे सम-द्रष्टि हैं?

अगर हाँ, तो उनकी सभी बातों को अमृत वाणी मानकर सर्व भाव समर्पण करके गृहण करें.
अतः अब आप सम-द्रष्टि या ज्ञानी से ही आत्मदेव की प्राप्ति का मार्ग जानें.
तथा जब तक आपको कोई खुद को सम-द्रष्टि या ज्ञानी स्वीकारने वाला न मिले, तब तक आगम के मूल शास्त्रों का ही अभ्यास करते रहे.

4. मुक्ति के मार्ग पर बहुत सम्हल कर चलें

परम पूज्य आचार्यश्री उपदेश सिद्धांत रत्नमाला की गाथा 37 में प्रत्येक जीव को समझाते हैं कि
अहो, सर्प द्वारा तो एक बार मरण होता है,
किन्तु कुगुरू अनंत बार मरण देता है;

अनंत बार बार के जन्म-मरण कराता है.
इसलिये हे भद्र जन, सर्प का गृहण तो भला है,
लेकिन कुगुरू का सेवन भला नहीं है.
इस बात को जानकार मोक्ष के इच्छुक प्राणी को मुक्ति के मार्ग पर बहुत सम्हल कर चलना चाहिए.

5. अविनाशी आत्मदेव का अनुभव करें

परम पूज्य आचार्यश्री पूज्यपाद स्वामी समाधिशतक की गाथा 33 में प्रत्येक

जिज्ञासु व्यक्ति को समझाते हैं कि -
जो कोई भी जीवात्मा शरीर आदि पर पदार्थों से भिन्न
इस निर्मल, चैतन्य चमत्कार परम ज्योति स्वरुप अविनाशी आत्मदेव का अनुभव नहीं करता है,
वह उत्कृष्ट तप तपते हुए भी निर्वाण को नहीं पा सकता है.
अनादिकाल से आपने भी ऐसा ही अनंत बार किया है.

क्या आप परम पूज्य आचार्यश्री के इस कथन से सहमत हैं?
अगर हाँ, तो क्या आप खुद के इस अविनाशी आत्मदेव का अनुभव नहीं करना चाहेंगे?

6. आपके मोक्ष में रहने का समय संसार के कुल समय से अनंत गुणा ज्यादा है

क्या आप जानते हैं कि अनंत केवली भगवंत द्वारा यह बताया गया है
कि अगर आप अपने आपको भव्य मानते हैं,
तो आपका मोक्ष में रहने का समय आपके संसार में रहने के कुल समय से अनंत गुणा ज्यादा होता है.
फिर आप बूँद सरीखे इस संसार पर द्रष्टि क्यूँ कर रहे हो?
फिर आप बूँद सरीखे इस संसार पर राग-द्वेष क्यूँ कर रहे हो?
फिर आप बूँद सरीखे इस संसार पर ममत्व क्यूँ कर रहे हो?
जो भी महापुरुष इस बात को समझेगा और मानेगा, वह भव्य ही होता है.

इस तरह से अगर आप अपने आत्मदेव का चिन्तन, मनन और घोलन करते हैं,
अपने चैतन्यदेव में निमग्न होने की कोशिश करते हैं,
तो फिर आपको भी शीघ्र ही प्रभुता प्रगट होगी,
जो कि फिर आपको अनंत काल तक अक्षय सुख के समुद्र में निमग्न रखेगी.

7. गहन चिन्तन, मनन,

कर चैतन्यदेव को आत्मसात करे

हे आत्मदेव, आपकी पांच इन्द्रिय और मन के द्वारा आप इस संसार में -

1. जो भी जान रहे हो,
2. मान रहे हो;

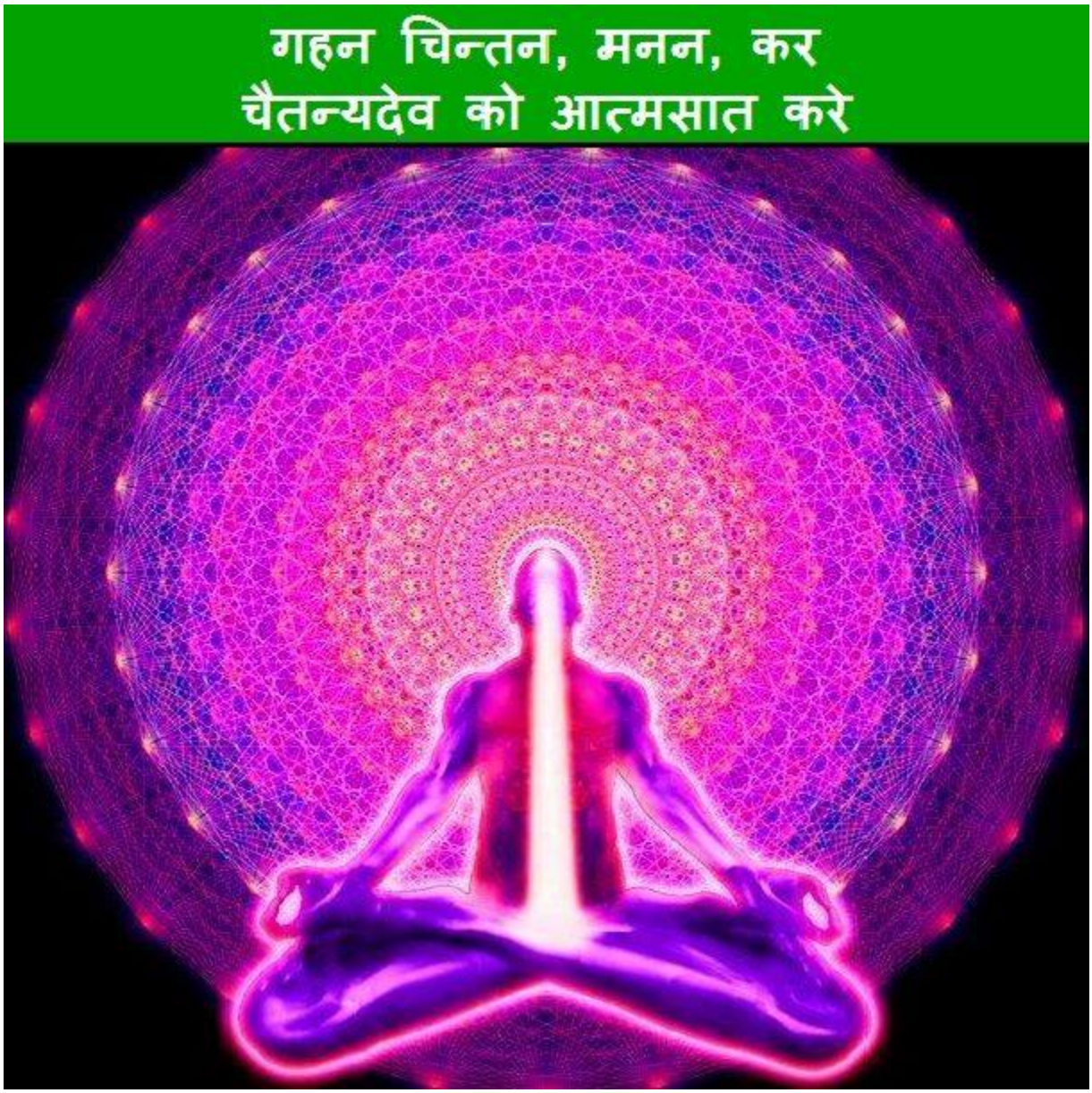

3. जिसकी भी भावना भा रहे हो;

4. वह सब क्षण भंगुर विकल्प ही है.
5. लेकिन आज तक किसी भी व्यक्ति को कभी भी किसी भी विकल्प से निर्विकल्पपना प्राप्त नहीं हुआ है.
6. यही अनादि-अनंत सच्चाई है.
7. इस तरह इस संसार में अभी तक आप जो कुछ भी जान और मान रहे हो, वह सब आपने पूर्व में अनंत बार जाना और माना है.
8. लेकिन जो तीन लोक की सबसे अलौकिक बात है;
9. जो आपके अनादि-अनंत शुद्ध चैतन्य द्रव्य की बात है;
10. उस आत्मदेव को आपने आज तक सिर्फ जाना ही है.
11. उस आत्मदेव को आपने आज तक माना ही नहीं है,
12. वह चैतन्य प्रभो की बात अब आपके सामने आई है.
13. अतः हे ज्ञान पुंज, अब आपको इस जन्म में निज चैतन्यदेव का बारम्बार गहन विचार, चिन्तन, मनन और फिर उसे धारण कर अपना कल्याण करना चाहिये.

8. मन और चित्त

जब चित्त कुछ चाहता है, कुछ सोचता है, कुछ ग्रहण करता है;
जब मन सुखी और दुखी होता है, तब जीवात्मा को बंध होता है.
जब मन न कुछ चाहता है, न कुछ सोचता है, न कुछ ग्रहण करता है; न सुखी होता है और न दुखी होता है; तभी उस भव्य आत्मा को मुक्त कहा जाता है.
मन, बुद्धि, अहंकार, क्रोध, मान, माया, मोह, वासना और शरीर की क्रियायें चित्त से भिन्न नहीं हैं, बल्कि चित्त की ही विभिन्न अवस्थाएँ हैं.
चित्त की शांत, अनासक्त, साक्षी और ज्ञाता-द्रष्टा रूप अवस्था ही मुक्ति है.
यह आत्मा सदाकाल निर्मल तथा सम्पूर्ण शुद्ध ही है
तथा मैं शरीर नहीं, अपितु आत्मदेव ही हूँ,
इसलिए मैं भी सम्पूर्ण चैतन्य-सम्राट ही हूँ.

तथा मन और चित्त राग और द्वेष की ही दो अवस्थायें रहती हैं.
अतः मन और चित्त मेरे आत्मदेव रुपी सिक्के के दो पहलू होते हैं.
लेकिन मुझ चैतन्य रुपी सिक्के में इनका नितांत अभाव है.
अतः अब आपको भी सिक्के के दोनो मन और चित्त रुपी पहलुओं को छोड़कर सिक्के की धातु या अपने निज चैतन्य-द्रव्य पर द्रष्टि को केन्द्रित करना चाहिये

हे प्रभो, क्या आप भी अब मन और चित्त से परे जाकर अपने चैतन्य-सम्राट को देखना चाहेंगे?

9. विनम्र सेवक हूं मैं आपका

1. हर व्यक्ति किसी न किसी जन्म में मेरे परिवार का ही अंग रहा है,
2. अतः मुझे अभी दिख रहे आप सभी लोग अच्छे हैं,
3. आप सभी लोग मेरे अपने हैं

4. साथ ही आप सभी लोग चैतन्य परमात्मा ही हैं.
5. अतः हे ज्ञान प्रभाकर, इस तरह इस संसार में रह रहा हर व्यक्ति मेरा परमात्मा है
6. तथा मैं आप सभी का विनम्र सेवक हूँ.
7. ॐ शांति.

10. वह चैतन्यदेव तो आप ही हो प्रभो

आपके आत्मदेव से जो भी द्रव्य या वस्तु या पदार्थ भिन्न है,

वह आपके गृहण करने योग्य होता ही नहीं है
तथा आपका आत्मदेव उसे गृहण करता ही नहीं है.

लेकिन जो आपके आत्मदेव का परम ज्योतिर्मय चैतन्य-स्वभाव है,
उसे आप सदाकाल गृहण किये रहते हो
उसे आपने कभी भी छोड़ा ही नहीं है;
इस तरह जो हमेशा आपके स्वानुभवगम्य है,
वह चैतन्यदेव तो आप ही हो प्रभो.

11. मुझे मेरे अलावा अन्य कोई दिखता ही नहीं है

परम पूज्य आचार्य श्री पूज्यपाद स्वामी
इष्टोपदेश गाथा 27 में अत्यंत करुणा पूर्वक समझाते हैं कि
मैं एक अकेला हूँ
तथा अन्य कोई भी नहीं है.

मैं निश्चय से शुद्ध हूँ,
योगियों के ध्यान गम्य हूँ.
तथा कर्मों के संयोग से होने वाले जितने भाव हैं,
वे सब मुझ से बिलकुल ही भिन्न हैं.
अतः मुझे मेरे अलावा अन्य कोई दिखता ही नहीं है
अष्टावक्र गीता प्रकरण 2, सूत्र 2 भावार्थ में भी समझाया गया है कि -

1. बड़े आश्चर्य की बात है कि मुझे संसार के इस जन समूह (भीड़) में भी

2. कोई दूसरा (द्वेत) दिखाई ही नहीं दे रहा है.
3. अहो, यह संसार तो अब मुझे अरण्यवत या जंगल के समान शांत लग रहा है.

4. यह जानकर अब मैं किससे प्रेम करूँ
5. किससे राग करूँ,
6. किससे द्वेष करूँ,
7. क्योकि मुझे तो कोई भी नहीं दिख रहा है.
8. अतः अब मैं साक्षी भाव (ज्ञाता-द्रष्टापना) को धारण कर
9. चैतन्य सम्राट बन इसमें विचरण करता हूँ.

10. अगर आप यह मानते हैं कि आत्मदेव की महिमा अद्भुत है, अपार है, अकल्पनीय है, अद्भुत है और आध्यात्म की चर्चा ही सर्वोत्कृष्ट श्रेणी की चर्चा होती है,

11. तो फिर इस अति गंभीर तथा उच्च कोटि की तत्व-चर्चा, आत्मचर्चा का आनन्द पाने के लिये आप सभी चैतन्यदेव के रुचिवंत भव्यात्माओं का स्वागत है.

12. चैतन्यदेव की सर्वोच्च गतिशील अवस्था में रहें

1. जो चैतन्यदेव इस संसार का साक्षी है,
2. जो चैतन्यदेव किसी का भी कर्ता न होकर मात्र ज्ञाता-द्रष्टा है
3. ऐसा मैं चैतन्य परमात्मा हूँ
4. यह चैतन्यता ही मेरा धर्म है.

5. अपने इस चैतन्य चमत्कार को ध्यान का केंद्र बनाने से ही आपका कल्याण हो सकता है.

6. अतः अब मन के विकल्प को भी हटाकर इस चैतन्य को धारण कर लें.

7. फिर धुएँ की तरह आपका यह मन भी गायब हो जाएगा.

8. अपने आप ही किसी ऐसी जगह पर चला जायेगा, जिसका आपको पता भी नहीं चलेगा.

9. अब आगे आने वाले समय में आपका यह अद्रश्य मन फिर क्या करता है, उससे आपको क्या प्रयोजन हो सकता है?

10. विकल्पातीत अवस्था ही चैतन्य परमात्मा की सर्वोच्च गतिशीलता की स्थिति होती है.

11. अब आपको अपने कल्याण के लिए और अनंत काल तक सर्वोच्च गतिशीलता की स्थिति में रहने के लिए इस चैतन्य-चमत्कार की अवस्था को प्राप्त करना चाहिए.
12. हे देव, क्या आप ऐसा करना चाहेंगे?

13. शास्त्रों का बोझा नहीं उठायें

1. जिस शास्त्र-ज्ञान को हम सब ने अनंत बार जाना हैं,
2. वह तो हमारे चैतन्यदेव में ही भरा हुआ है.
3. उस असंख्य शास्त्रों के ज्ञान को हम सभी कई बार जान कर फिर अगले जन्म में उसे फिर से भूल जाते हैं.

4. अब इस भव में आप फिर से इस शास्त्रज्ञान के किसी अंश को जानना चाहते

हो.

5. अतः अब आप इस जन्म में अपने आत्मदेव के चिन्तन-मनन करने के लिये जितना ज्ञान जरुरी है, वह ही शास्त्रों से जानना योग्य है.

6. फिर अपने इस ज्ञान का उपयोग किसी सद्गुरु को खोजने में लगाओ.

7. तब उनके श्रीचरणों में सर्व भाव समर्पण करके बाकी जीवन उनकी आज्ञानुसार बिताएं.

8. फिर भी अगर मोक्ष की प्राप्ति न हो, तो मुझ से ले लेवें.

9. अतः ज्ञानी बनने से पहले अब शास्त्रों का बोझा नहीं उठायें.

14. आपकी इस जन्म की हर मेहनत बेकार जा रही है

1. हे चैतन्य प्रभो, आप जानते ही हैं कि हमारे चैतन्य द्रव्य में अनंत गुण होते हैं.

2. प्रत्येक गुण की हर समय एक-एक पर्याय उस-उस गुण से निकलती रहती है.

3. इस तरह हमारे द्रव्य में एक साथ अनंत पर्यायें प्रति समय उदित होती हैं और नष्ट होकर दूसरे समय में दूसरी पर्यायें उदित होती है.

4. शास्त्रों में आता है कि आपके अनंत गुणों में से सिर्फ लगभग 25 गुणों की ही विभाव या विकारी पर्याय आती हैं और आपके अन्य सभी अनंत गुणों की स्वभाव पर्याय ही निकलती हैं.

5. फिर जब आपके अनंत गुणों में से मात्र लगभग 25 गुणों की ही प्रति समय विभाव या अशुद्ध पर्याय निकलती है,

6. तो यह तो आपके समुद्र बराबर गुणों के सामने बूँद बराबर अधुद्धि ही हुई;

7. फिर आप क्यों पूरे द्रव्य को अशुद्ध मानकर अपने आपको विकारी मान लेते हो?

8. क्या आपका यह मानना उचित है?

9. अगर किसी व्यक्ति के पास अरबों-खरबों सोने के सिक्के हों और

10. वह देखता है कि उसमे से मात्र 25 सिक्के खोटे हैं;

11. अब आप ही बताइये की क्या वह अपनी पूरी संपदा को ही खोटी मानकर,

12. उसे फेंक कर उनकी जगह दूसरी संपदा को लाने की कोशिश में जुट सकता है?
13. अहो, अनादिकाल से आपने यही किया है और आपके ऐसे सभी प्रयत्न हर बार निष्फल ही हुए हैं.
14. अगर आप अब भी नहीं संभले,
15. तो इस जन्म में की गयी आपकी सभी मेहनत फिर से बेकार चली जायेगी.
16. क्या अब इस जन्म में भी आप ऐसा होने देंगे?

15. निज-चैतन्य तत्व में डूबें

हे प्रभो, बहुत समय से हो रही अपनी आत्म-चर्चा में इतनी रुचि रखने वाले आप सभी धन्य हैं.
कृपया नीचे दिए बिन्दुओ पर भी गंभीरता से विचार करें -
1. हमारा जैन धर्म अनेकात्मक है, तो फिर कोई एकान्तिक होकर तत्व (आत्मा) को कैसे समझेगा?
2. जैन धर्म स्याद्वादी धर्म है, अतः वह दूसरे पक्ष का कभी भी निषेध नहीं करता है.
3. मोक्ष महल पर जाने के मार्ग में कई सीड़ियाँ हैं, ऊपर चढ़ने के लिए जिस सीढ़ी पर आप हो, उसे आपको छोड़ना ही पढ़ेगा, तभी आप अगली सीढ़ी पर चढ़ पायेंगे, अन्यथा जहाँ हैं, वही रह जायेंगे.
4. अतः आप जिस सीढ़ी पर अभी हैं, उसे आपको छोड़ कर अगली सीढ़ी पर चढ़ना ही पड़ेगा. तभी आप आगे बढ़ पायेंगे.
5. यह संसार मनुष्याकार है, जो कि जैन धर्म के प्रतीक चिन्ह से स्पष्ट है.
6. इस मनुष्याकार संसार में छः द्रव्य रहते हैं, जो आप में ही समाये हुए हैं.
7. हे प्रभो, आज जिसे आप अशुद्ध मान रहे हो, ऐसी कर्म रुपी पर्याय तो मात्र एक समय के बाद खुद ही नष्ट हो गयी है,
8. उस फिर नष्ट हुई पर्याय का आपके चैतन्यघन, चैतन्य चमत्कार परमात्मा में प्रवेश कैसे हो गया है, आज कैसे है और आगे कैसे होगा?

9. हर पर्याय स्वसमय होती है और निश्चित है. उसको न आप बना सकते हैं और न बिगाड़ सकते हैं.

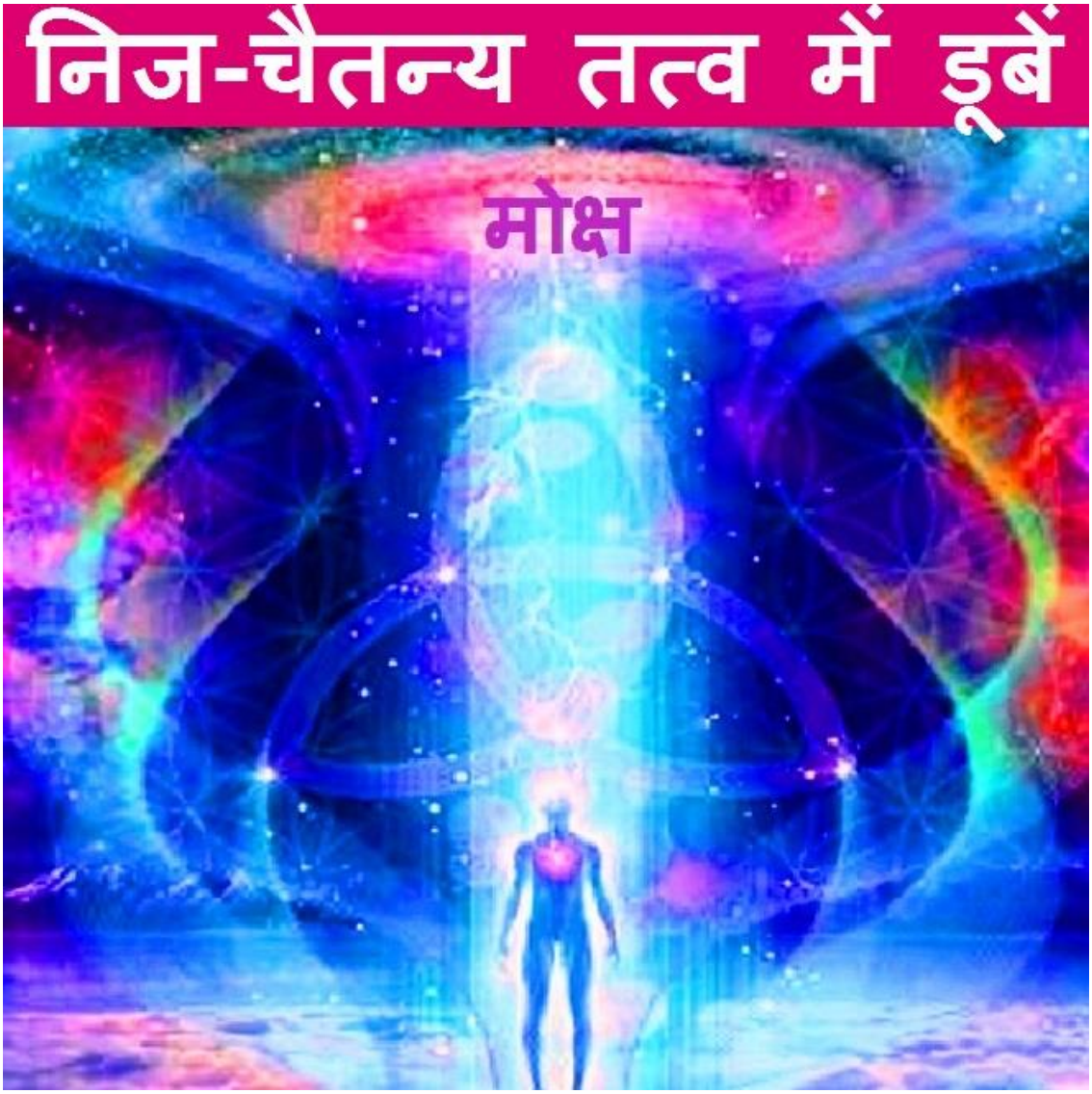

10. अतः शास्त्रों में उसे कई जगह सत कहा है और कई जगह सत का अर्थ शुद्ध ही बताया गया है.

11. अतः अब आप भी मान लो कि आपका स्वरुप तो परम-ज्योतिर्मय चैतन्यघन, अनन्तसुखधाम रूपी परमात्मा है।

12. अतः अब आप अपनी अनन्त-गुणात्मक शक्ति को पहचानों,

13. अब आप अनन्त तीर्थंकरों एवं केवलियों द्वारा बताये गये इस अनुपम-अदभुत-अलौकिक मुक्ति-शिखर रूपी अपने परमसुखदायक निज-आत्मा, परमात्मा के दर्शन करो.

14. अपने ही निज-अन्तर मार्ग पर अत्यन्त-अत्यन्त गहरे-गहरे चलते जाओ, चलते जाओ,

15. तभी आप अपने आगामी अनन्त भवों को छेदकर, भेदकर परम निर्वाण को प्राप्त कर सकोगे.

16. अहो, आप तो सहज रूप से सदाकाल, परमात्मा स्वरूप ही हो.

17. इसमें जानना क्या, मानना क्या, इसमें तो आपको बस समा जाना है, डूब जाना है.

18. क्या आप अब अपने निज-चैतन्य तत्व में डूबने के लिए तैयार हैं?

16. त्रस पर्याय के पुण्य के नष्ट होने से पहले ही चेत जायें

हम देखते हैं कि इस संसार में दूध तो सभी पीना चाहते हैं, परन्तु गाय नहीं बाँधते हैं

ttha बाजार का अशुद्ध दूध पैसे (पुण्य) से खरीदकर मदहोश होकर अपना समय गंवाते हैं.

फिर जब वे बीमार होते हैं, तो उनके यह पैसे भी खत्म हो जाते हैं,

तब वे परम आकुलित होकर दीन-हीन अवस्था में रहने को मजबूर हो जाते हैं।

इसी तरह इस संसार में सुख तो सभी चाहते हैं,

परन्तु कस्तूरी के मृग की तरह यह सुख हमारे अन्दर ही है, यह नहीं जानते हैं.

फिर दिन-रात भक्ति पूजा रूपी मेहनत करके थोड़े से पुण्य रूपी पैसे कमाते हैं

फिर उससे सुखाभास रूपी अशुद्ध दूध खरीद कर उसको पीकर पुनः मदहोश हो जाते हैं।

इस तरह धीरे-धीरे इस त्रस पर्याय (अधिक से अधिक 2000 सागर) का पुण्य क्षीण होने लगता है.

इस त्रस पर्याय के पुण्य के ख़त्म होते ही प्रत्येक जीव पुनः अपने अनादि के स्थाई निवास निगोद (नरक से भी नीचे का अत्यन्त निम्न कोटि का स्थान) में पहुँच कर अनन्त-अनन्त दुख उठाता रहता है।

अतः इस त्रस पर्याय की सच्चाई को पहिचानकर हर भव्यात्मा को इस त्रस पर्याय के पुण्य के नष्ट होने से पहले ही चेत कर अपना भला कर लेना चाहिये।

हे मेरे चैतन्य प्रभो, मैं जो भी लिखता हूँ, वह खुद की आत्मानुभूति, आत्मज्ञान, आत्मवैभव, निजी अनुभव और नय, न्याय एवं वैज्ञानिक प्रमाणों के आधारों पर ही लिखता हूं.

इस निकृष्ट पंचम काल में मेरे द्वारा प्रस्तुत सिर्फ शुद्ध चैतन्य तत्व की बात को पसंद कर आज हजारों लोग मुझे फालो कर रहे हैं और मेरे लेख बहुतायत से फेसबुक, वाट्सअप और अन्य जगहों पर पोस्ट कर रहे हैं; इसके लिए मैं आप सभी का अत्यंत आभारी हूँ.

आप सभी से मेरा विनम्र निवेदन है कि अगर मेरे किसी भी लेख से आपको अपने

अंदर जाने में सहायता मिलती हो, तो उसे सेव करके बार-बार पढ़ें;
विश्वास कीजिये कि इस तरह के चिन्तन-मनन से आपको आपके अनन्त गहराई में समाये निज-परमात्मा की हर बार नई-नई गहराइयों के दर्शन होंगे.
मेरा यह भी निवेदन है कि मेरे लेखों में से अगर आप को कोई एक लेख या कुछ गद्यांश या उनके कोई अंश अच्छे लगते हों, तो आप उन्हें निसंकोच भाव से अपनी तरफ से कापी-पेस्ट कर फेसबुक पर या अन्य किसी भी जगह पर अपने अकाउंट से पोस्ट कर इस कोटि-कोटि जीवों को चैतन्य-चमत्कार से जोड़ने के जनकल्याणकारी लोकहित के इस ज्ञान-यज्ञ में अपनी भी आहुति डाल कर मुझे कृतार्थ करें.
ॐ शांति

17. ज्ञानी बनने के लिए ज्ञानी महापुरुष के अन्तर्मन को जानें

1. हे चैतन्य प्रभो, द्रव्य से, गुण से और पर्याय से भी आप शुद्ध चैतन्य परमात्म-स्वरूप ही हो.
2. ज्ञानी महापुरुष हर समय जो भी बताते हैं, समझाते हैं और लिखते हैं, वह अपने आत्मानुभूति, आत्मज्ञान, आत्मवैभव, निजी अनुभव और नय, न्याय एवं वैज्ञानिक प्रमाणों के आधारों पर ही कहते हैं.
3. उनके प्रत्येक लेख सामान्य होते ही नहीं हैं.
4. वे तो मात्र मानव-कल्याण के लिए, प्रत्येक जीव के हित के लिए ही लिखते हैं.
5. जैसी उनकी द्रष्टि, कथन और लेख होते हैं, वैसे अन्य कोई व्यक्ति, अगर वह ज्ञान-स्वरूपी नहीं है, तो वह लिख ही नहीं सकता है.
6. सच्चे जिज्ञासु को हर बार उसके हर शब्द में चैतन्य चमत्कार, निज-परमात्मा की नई-नई गहराइयों के दर्शन होते हैं.
7. श्रीमद राजचंद्रजी कहते हैं कि ज्ञानी के प्रत्येक शब्द में अनंत आगम समाये रहते हैं.
8. आगे श्रीमदजी समझाते हैं कि -

प्रत्यक्ष सद्गुरु सम नहीं,
परोक्ष जिन उपकार
एवो लक्ष थया विना
उगे न आत्म विचार

हे प्रभो, इस बात को अच्छी तरह से समझ लो कि कोई भी व्यक्ति या पूर्व में हो गये समस्त ज्ञानी जन और समस्त भगवंत भी आपके लिए प्रत्यक्ष सद्गुरु के समान हितकारी नहीं हैं, क्योकि प्रत्यक्ष सद्गुरु के लक्ष के बिना आपके मन में आत्म-विचार पैदा भी नहीं हो सकते हैं.

9. अतः हे प्रभो, पुण्य और पाप दोनों से रूचि को हटकर

10. ज्ञानी महापुरुष के अन्तर्मन को जानने के लिए उसके हर शब्द को बार-बार पढ़ कर उसमें समाये अनंत आगम शास्त्रों को समझने की कोशिश करो.
11. तभी आपका शाश्वत कल्याण निश्चित ही होगा.
12. तभी आपको चैतन्यदेव की शीतल शांति मिलेगी.

18. शरीर आश्रित कर्मो का शमशान

कहा जाता है कि जो भी व्यक्ति शमशान के पास अपना घर बनाता है,
उसके खाने में शमशान की चिता की राख मिल जाती है.
इसी तरह से इस संसार में आज तक हमने अनादिकाल से हो रही चौरासी लाख योनियों में बार-बार शरीर धारण करने के बाद जो अनंत बार मृत्यु पायी है,
उस मृत्यु का मुख्य कारण हमारा यह प्रिय शरीर ही रहा है
इसके बार-बार जलने से हमे मृत्यु मिलती रही है.
अतः हमारी यह देह ही हमारा कर्मो का शमशान है.
हमारे बार-बार के मरण की चिता से उड़ रही कर्मों के शमशान की चिता की राख हमारे आत्मदेव के चारो ओर फ़ैल रही है.
इस कर्मों के शमशान की चिता की राख से हमारा आत्मदेव हर समय घिरा हुआ रहता है.
हे प्रभु, अब आप भी सच्चाई पहचानो और इस शरीर रुपी शमशान से प्रेम कर इसके पास अपने आत्मदेव के प्रेम का भवन नहीं बनाएं.

नहीं तो जब भी आप भोजन कर रहे होगे, उस समय आपके खाने में शरीर आश्रित कर्मो के शमशान की चिता की राख मिलती ही रहेगी.

बहुत गंभीर बात है भाई कि आज तक आपने जितने भी शरीर धारण किये हैं, वे सभी सिर्फ और सिर्फ आपकी अपनी भूल के कारण ही हुए हैं.

आज इस संसार में आपको चारो ओर जो विभिन्न तरह के प्राणी दिख रहे हैं, वे सभी यह बात सिद्ध करते हैं कि चौरासी लाख योनियाँ होती ही हैं.

जिस तरह आज वे वहाँ पर उस-उस कीड़े-मकोड़े की हीन योनी में हैं, उस जगह पर आप भी पूर्व में निश्चित ही पैदा हुए होंगे

अगर आपने अपना कल्याण नहीं किया, तो फिर से आप वहां पर पहुँच जावेंगे.
इसलिये थोडा तो विचार कीजिये कि आज आपको अगर किसी भी एक छोटी सी यात्रा के लिए जाना होता है,
तो आप उस यात्रा की कितनी तैयारी करते हैं;
किन्तु कुछ दशको बाद होने वाली आपकी इस -
1. अनंत यात्रा की आपने क्या तैयारी की है?
2. अगर नहीं, तो अब इस जन्म के बाद आगे की आपकी यात्रा में आपका क्या होगा?
3. अब आप कब तक इस शरीर आश्रित कर्मो के शमशान के पास रहकर मुर्दा कर्मों की चिता की राख से मिश्रित भोजन करते रहोगे?
4. हे देव, अब तो आप अपने चैतन्य सम्राट को पहचान कर, उसी में समां कर इस शरीर आश्रित कर्मो के शमशान से दूर हट जायें.

19. आपके आत्मदेव का शाश्वत एलबम

हे ज्ञान प्रभाकर, आप बहुत ध्यान से इस बात पर भी विचार करो कि जब आप अपने परिवार की, अपने सम्बन्धियों की, अपनी शादी की, अपनी यात्रा की एलबम देखते हो तो कितने खुश होते हो।
इस एलबम के फोटो को खुद तो उत्साह से बार बार देखते ही हो, साथ ही अपने सभी इष्ट मित्रों को भी दिखाते हो।
फेसबुक पर भी इन सभी फोटो को अपलोड कर खुश होते हो.
क्या कभी आप ने विचार किया है कि इस संसार में जितने भी मनुष्य आप को दिखते हैं;
उस-उस योनी में आप ने भी अनन्त बार जन्म-मरण किया है।
जिस-जिस स्थान को देखकर आप प्रसन्न हो उठते हो,
वहाँ पर भी आप ने अनन्त बार जन्म मरण किया है।
अतः यह मान लो कि जो कुछ भी आप देखते हो वह सब आप की आत्मा के

फोटोग्राफ ही हैं।
हर समय जो कुछ भी दिखता है वह सब आप की ही आत्मा का एलबम है।
फिर भी अगर आप भयभीत नहीं हो तो यह यह महान आश्चर्य की बात है।
अतः इन दिखने वाले सभी जीवों पर तो करुणा करो,
साथ ही अपने पर भी करुणा करो।

इस संसार को दर्शाने वाली अपनी आत्मा की एलबम से डरो
ताकि आप अपना उद्धार स्वयं कर अपनी आगामी समस्त योनियों का नाश कर सको
साथ ही फिर आप भी अन्य प्राणियों का भी उपकार कर सकोगे।
ॐ शांति

20. आपका कल्याण किस तरह सम्भव है?

1. अनादिकाल से हो रहे अपने प्रवास में प्रत्येक संसारी जीव ने पांच प्रकार के परावर्तन अनंत बार किये हैं

2. इस तीन लोक की हर भूमि, जगह पर भी आपने अनन्त बार जन्म लिया है.

3. आप मनुष्य भी अनन्त बार बने हो और हर धर्म में आपने अनन्त बार जन्म लिया है.

4. आत्मधर्म या जैन धर्म में भी आपने अनन्त बार जन्म लिया है.

5. शास्त्रों के अनुसार मनुष्य भी आप इतनी बार बने हो कि आपके अकाल मरण के वियोग में अगर आपकी इन सभी जन्मो की माताओं के आंसू इकट्ठे किये जाएँ, तो लवण समुद्र भर जाए, फिर भी आंसू बचे रह जाएंगे.

6. दीक्षा भी आपने इतनी ज्यादा बार ली है कि अगर आपके पिछी-कमंडलों को इकठ्ठा कर लिया जाए तो सुमेरू पर्वत भी छोटा पड़ जायेगा.

7. ग्यारह अंग का ज्ञान, असंख्य शास्त्रों का ज्ञान भी आपके अनन्त बार कर लिया है कि उसके सामने वर्तमान का आपका यह ज्ञान समुद्र के सामने बूँद के समान है.

8. तो फिर आपका अब कल्याण किस तरह सम्भव हो सकता है?

9. प्रत्येक सच्चे जिज्ञासु तथा मुमुक्षु को यही विचारना योग्य है.

21. क्या आप अपने चैतन्य-स्वभाव से च्युत हो सकते हैं?

इस अनंत संसार में आज तक कोई भी जीव, कभी भी अपने चैतन्य-स्वभाव से च्युत हुआ ही नहीं है;
किन्तु मोह रुपी मदिरा के वशीभूत होकर वह कल्पना में ऐसा मान लेता है कि वह च्युत होकर इस संसार में भ्रमण कर रहा है.
अतः वह इस सपने को अपनी अशुद्धि जान इसे हटाने की व्यर्थ कोशिश में जुट जाता है. लेकिन कोई भी सपना तो सपना ही रहता है,
अतः जो जीव इस सच्चाई को समझ कर मोक्ष महल को अपना मान लेता है, उसका संसार रुपी सपना अपने आप ही दूर हो जाता है.
अहो, भगवान् आदिनाथ की आयु 84 लाख पूर्व (एक पूर्व=84 लाख गुणा 84 लाख वर्ष) की थी,
उसमे 83 लाख पूर्व तक वे राज्यावस्था में रहे;
उनको बल और शक्ति भी बहुत थी,

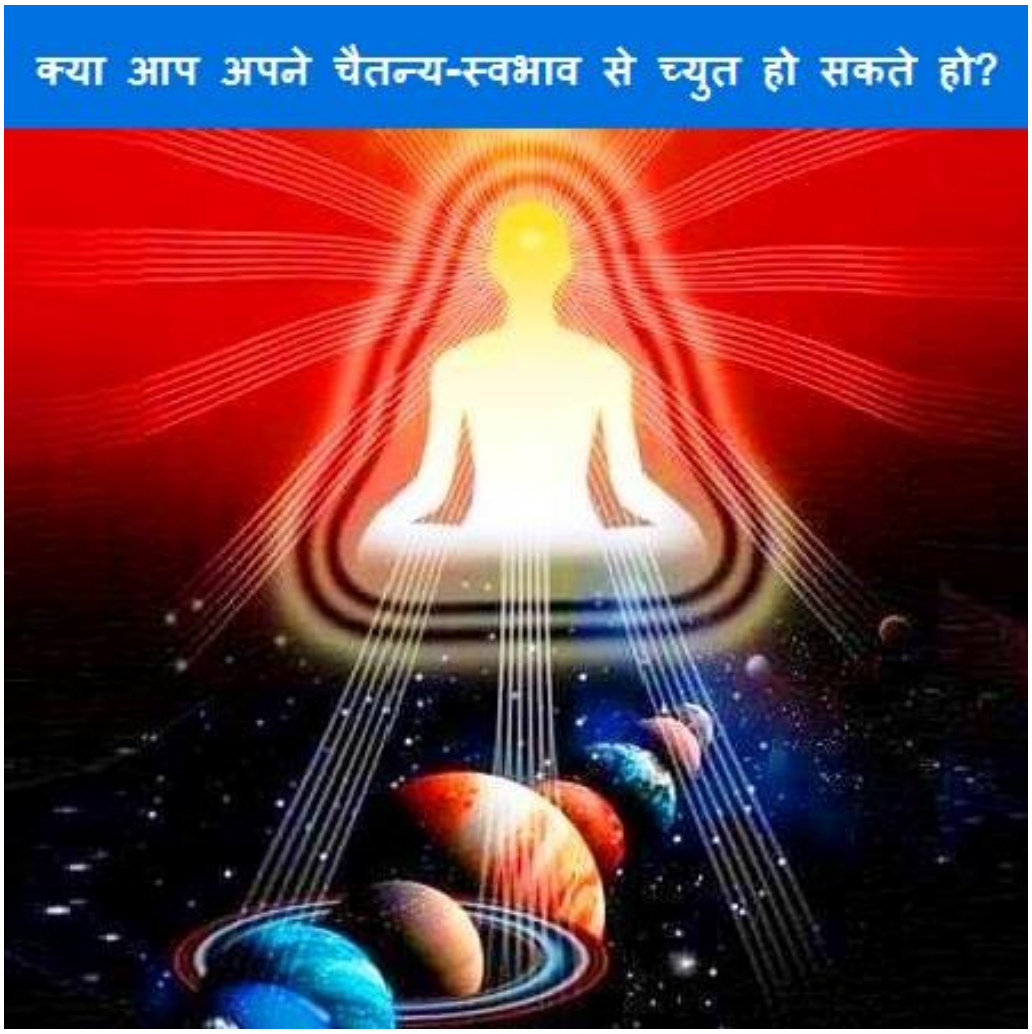

फिर भी उन्होंने हठ पूर्वक इससे पहले ही चरित्र ग्रहण नहीं किया.
भरत चक्रवर्ती की अन्तरंग की तैयारी बहुत ही उच्च कोटि की थी, कि वस्त्र त्यागते ही उनको केवल ज्ञान हो गया था.
इतनी तैयारी के बल पर वे अगर चाहते तो कभी भी अपना काम कर सकते थे,
फिर भी उन्होंने हठ पूर्वक पहले से ही मुनि अवस्था धारण नहीं की.
कारण यह है कि वे जानते थे कि चरित्र की अवस्था जब आनी योग्य होगी, तभी आयेगी.
हम में न पहले कोई कमी थी,
न अब है,
क्योकि जो पर्याय जब आना होगी, तभी आयेगी.

फिर आगे आने वाले समय में उस तथाकथित अशुद्धि को दूर करने का प्रश्न ही कहाँ से हमारे मन में उठ सकता है?
आत्मदेव के प्रेमी सभी लोगो के लिए भी यही सोचना योग्य है.
• ॐ शांति.

22. भगवान के ज्ञान पटल पर सब अंकित है

शास्त्रों में आता है कि किसी बैल गाड़ी के नीचे अगर कोई कुत्ता चल रहा है,
तो थोड़ी दूर चलने के बाद वह कुत्ता अपने मन में घमंड से भर जाता है कि वह स्वयं उस बैल गाड़ी चला रहा है,
जबकि वास्तव में तो उस गाडी को चलाने वाला गाड़ीवान ही है.
यह संसारी जीव भी इसी भ्रम में ही जी रहा होता है.
महान वैज्ञानिक श्री आइन्स्टाइन ने कहा भी है कि -
EVENTS DO NOT HAPPEN;
THEY EXIST AND CAN BE SEEN ON THE TIME SCALE.
आइन्स्टाइन के अनुसार कोई भी घटना घटती नहीं है, बल्कि वह तो काल के गर्भ में छुपी ही रहती है तथा उसको कोई भी बदल नहीं सकता है.
लेकिन हम उसे टाइम स्केल नामक मशीन (जो अभी बनी नहीं है) पर देख सकते हैं.
हिन्दू धर्म भी मानता है कि हो ही वही, जो राम रचि राखा.
यानी कि जो भी कुछ इस संसार में होता है,
उसको भगवान श्रीराम ने पहले से ही रच दिया था. इसलिए ही वह घटित हो रहा है.
जैन धर्म भी कहता है कि हर घटना या अवस्था या पर्याय निश्चित ही रहती है
जिस क्रम में उस घटना को अनंत भगवान देख रहे हैं,
वह घटना या पर्याय उसी तरह और उसी रूप में अपने निश्चित क्रमानुसार ही होती है.

इस तरह क्रमबद्धपर्याय के महान सिद्धांत का प्रतिपादन होता है कि हर घटना या पर्याय निश्चित ही है तथा अपने उदय काल में आयेगी ही आयेगी.

इस तरह इस संसार में हर घटना निश्चित ही है और हमारे सभी सिद्ध भगवंत उसे अपने-अपने ज्ञान-पटल (आज के सन्दर्भ में टाइम स्केल) पर उसे हर समय देख ही रहे हैं.

इस तरह होनहार या कार्यत्व में कहीं पर भी दोष नहीं है.

अगर इस बात पर आप पूर्ण रूप से विश्वास करते हैं,

तो आप भी कर्तत्व और कार्यत्व का अंतर समझ कर समस्त पर्यायों के परिणमन को साक्षी भाव से, वीतरागी भाव से, ज्ञाता-द्रष्टा पने से स्वीकार कर इस संसार में हो रहे सभी तथाकथित शुभ और अशुभ परिणामों को देखते हुए अपने आत्मदेव के

अकर्तापने को स्वीकार कर यह मान लेंगे कि भगवान के ज्ञान पटल पर सब घटनाएँ अंकित ही है.

इस बात को स्वीकारते ही आप भी भगवान बनने की दिशा में अपना पहला कदम उठा लेते हैं.

23. कोई भी पर्याय आपकी है ही नहीं

1. हर पर्याय पर है, आपकी है ही नहीं;
2. क्योकि हर पर्याय के साथ पर जुड़ा हुआ है,
3. अतः वह तो पराई है,
4. अब उसकी चिंता करना छोड़िये.
5. मोक्ष भी एक पर्याय है अतः वह भी पराई ही है,
6. अतः उसका भी मोह छोड़े.

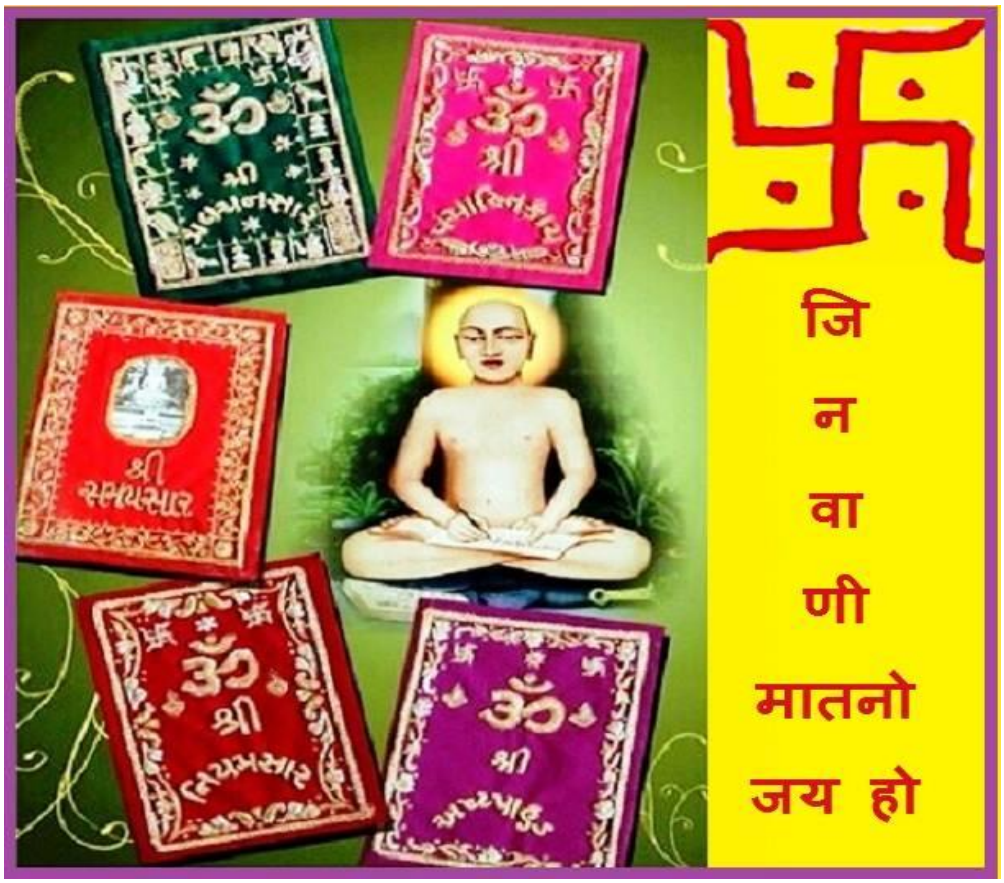

7. फिर इस संसार की कोई भी अच्छी या बुरी पर्याय या घटना की बात तो करने योग्य ही नहीं हो सकती है.
8. हे प्रभो, आप सिर्फ चैतन्य, ध्रुवधाम, अखंड, अविनाशी तत्व ही हैं,
9. बस इस बात पर जम जाइये, रम जाइये तथा इसमें ही समां जाइए.

24. क्या आपकी मेहनत बेकार जा रही है?

1. हे चैतन्यदेव, आप जानते ही हैं कि हमारे आत्म-द्रव्य में अनंत गुण होते हैं.
2. प्रत्येक गुण की हर समय एक-एक अवस्था या पर्याय उस गुण से निकलती रहती है.
3. इस तरह हमारे द्रव्य में एक साथ अनंत पर्यायें प्रति समय उदित होती हैं और नष्ट होकर दूसरे समय में दूसरी पर्यायें उदित होती है.
4. शास्त्रों के अनुसार सिर्फ लगभग 21 गुणों की ही विभाव पर्याय आती हैं और अन्य सभी अनंत गुणों की स्वभाव पर्याय ही निकलती हैं.

5. अतः जब आपके अनंत गुणों में से मात्र लगभग 21 गुणों की ही प्रति समय विभाव या अशुद्ध पर्याय निकलती है,

6. तो यह तो आपके समुद्र बराबर गुणों के सामने बूँद बराबर अधुद्धि ही हुई;

7. फिर आप क्यों पूरे द्रव्य को अशुद्ध मानकर अपने आपको विकारी मान लेते हो?

8. क्या आपका यह मानना उचित है?

9. अगर किसी व्यक्ति के पास अरबों-खरबों सोने के सिक्के हों और

10. वह देखता है कि उसमे से मात्र 21 सिक्के खोटे हैं;

11. अब आप ही बताइये की क्या वह अपनी पूरी संपदा को ही खोटी मानकर, 12. उसे फेंक कर उनकी जगह दूसरी संपदा को लाने की कोशिश में जुट सकता है?

13. अहो, अनादिकाल से आपने यही किया है और आपके ऐसे सभी प्रयत्न हर बार निष्फल ही हुए हैं.

14. अगर आप अब भी नहीं संभले,

15. तो इस जन्म में की गयी आपकी सभी मेहनत फिर से बेकार चली जायेगी.
16. क्या अब इस जन्म में भी आप ऐसा होने देंगे?

25. चैतन्यदेव का स्पष्ट निर्णय करें

1. हे चैतन्यदेव, आप केवल मनुष्य शरीर मात्र नहीं हो,
2. बल्कि चैतन्य आत्मा हो,
3. चैतन्य सम्राट हो.
4. तथा ये शरीर, मन और बुध्दि आदि आपके भृत्य हैं,
5. जो आपके आदेशानुसार कार्य करते हैं.
6. अतः आप मात्र चैतन्य आत्मा ही हो,
7. जो न कर्ता है, न भोक्ता है.
8. इसलिए आप तो सर्वदा मुक्त ही हो.
9. तथा यह मुक्ति ही आपका स्वभाव है.
10. अतः आपका आत्मदेव ही परमात्मा है
11. आपका आत्मदेव ही द्रष्टा है.
12. इससे भिन्न कोई द्रष्टा नहीं है.
13. आपका आत्मदेव ही मुक्त ही है,
14. आपका आत्मदेव किसी भी बंधन में बंधा ही नहीं है

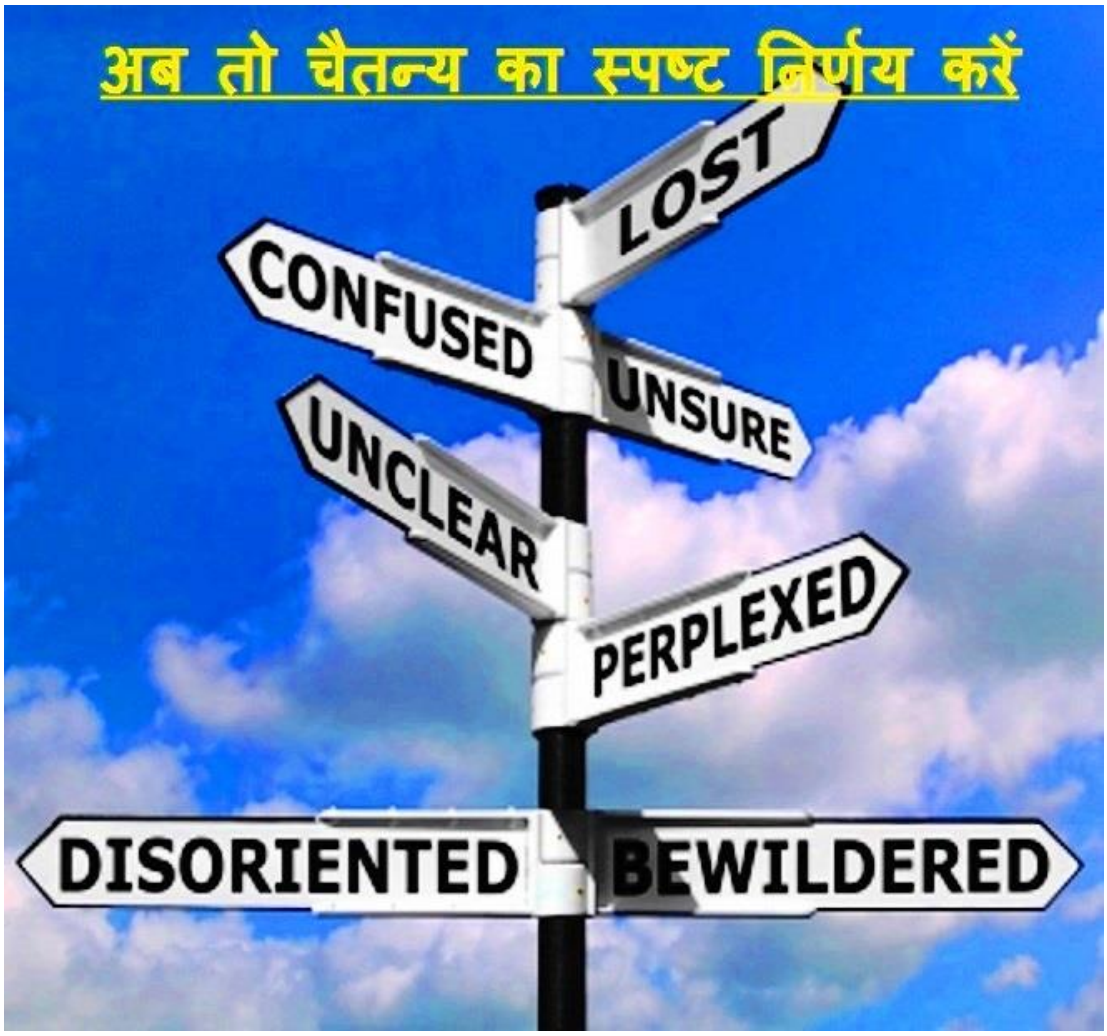

15. लेकिन अज्ञानी ही आत्मा से भिन्न

16. किसी एक ईश्वर को द्रष्टा,

17. कर्म-फल प्रदाता एवं कर्ता मानते हैं;

18. ज्ञानी ऐसा नहीं मानते हैं.

19. संसार के तो हर कार्य में आप अत्यंत रूचि दिखाते हो, हर काम में स्पष्ट निर्णय लेते हो.

20. अतः अब अनंत अक्षय सुख को पाने के लिए भी आपको स्पष्ट निर्णय करना चाहिए.

21. क्या आप अपने निज चैतन्यदेव को पाने के लिए भी ऐसा स्पष्ट निर्णय करना चाहेंगे?

26. चैतन्य-नयन या ज्ञान-चक्षु को पाने का सरल मार्ग

श्रीमद राजचंद्रजी समझाते हैं कि -

"बिना नयन पावे नहीं. बिना नयन की बात
सेवे सद्गुरु के चरण, तो पावे साक्षात."

1. हे चैतन्य प्रभो, आप खुद तो बिना ज्ञान-चक्षु या नयन या आँख के ही हो,
2. फिर आप अपनी आँखों से नहीं दिखने वाले आपके चैतन्य-नयन यानी कि निज चैतन्य भगवान को किस तरह प्राप्त कर सकते हो?

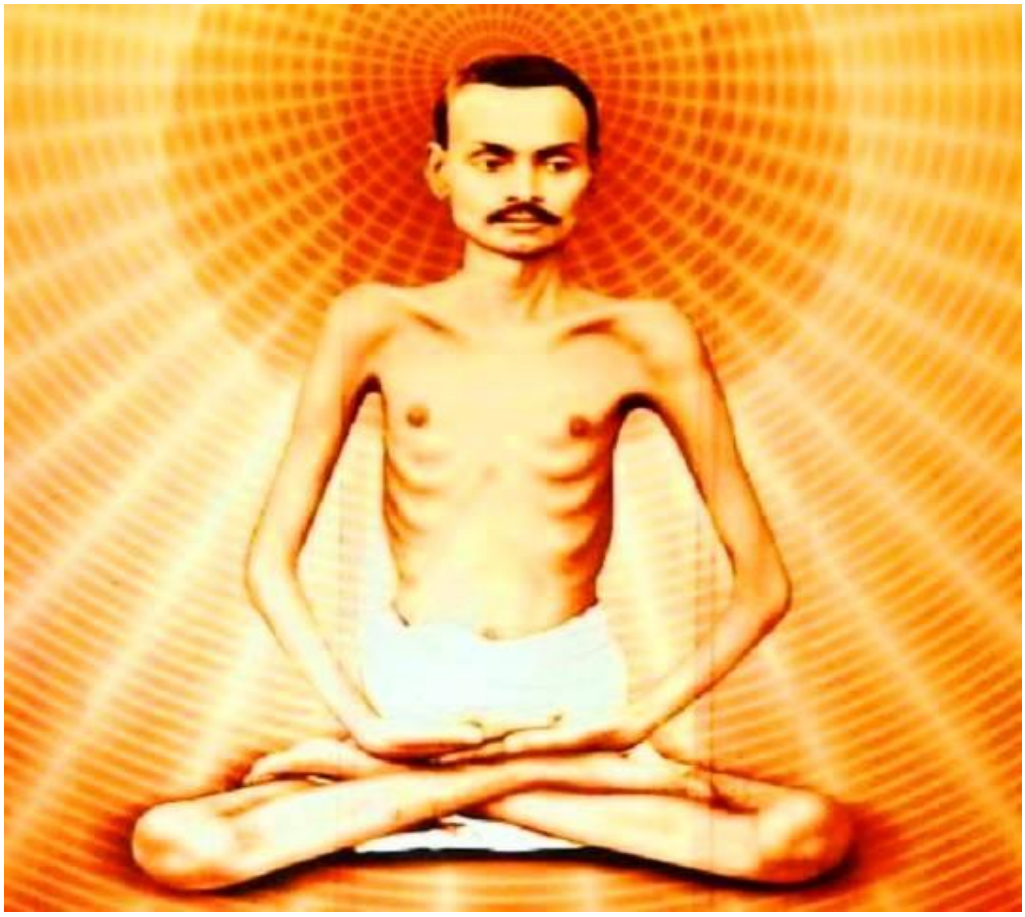

3. हाँ, एक ही रास्ता या मार्ग है कि अगर आप प्रत्यक्ष-सद्गुरू के चरणों की सेवा

करोगे,

4. तब आपको अपने चैतन्य परमात्मा के निश्चित ही साक्षात दर्शन होंगे.

27. सम्यकदर्शन सहित चाण्डाल भी पूज्य है

परम पूज्य श्री समन्तभद्र आचार्य रत्नकरण श्रावकाचार गाथा 04 में समझाते हैं कि -

सम्यकदर्शन सहित एक चाण्डाल को भी गणधर देवों ने माननीय देव-तुल्य पूज्य कहा है.

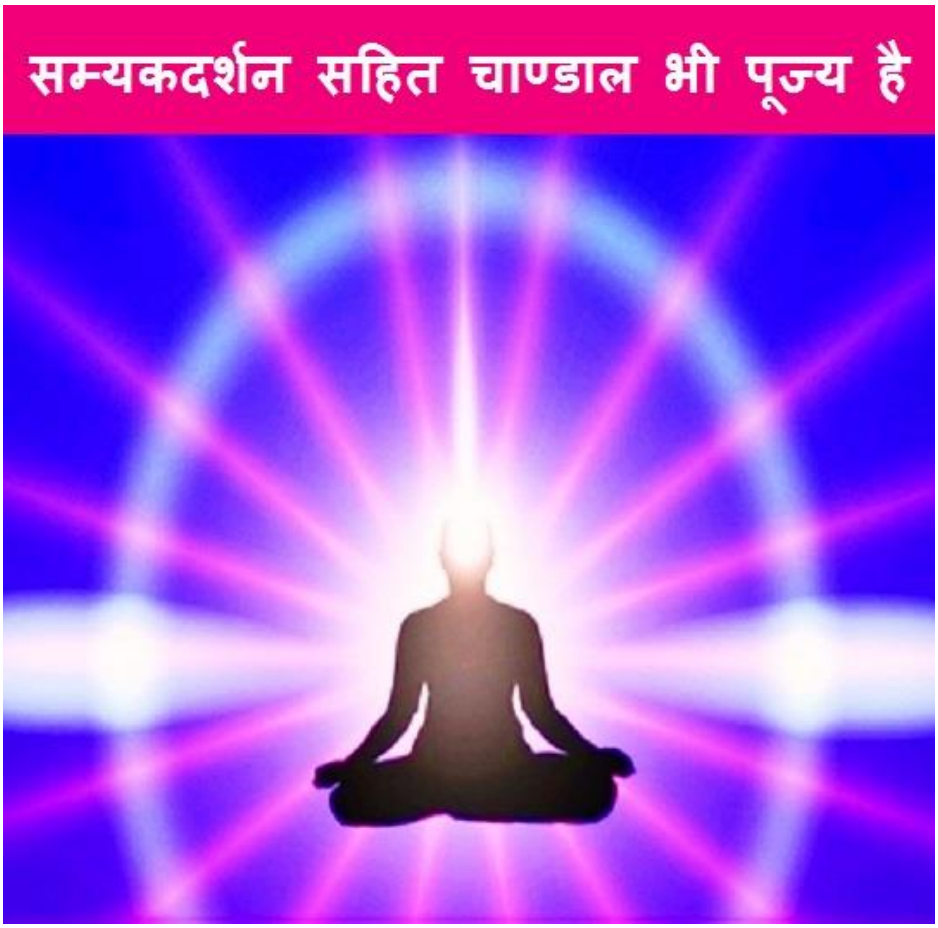

वह जीव तो ऐसा ही होता है जैसे किसी भस्म में छिपी हुई अग्नि की चिंगारी हो.
वह पवित्र आत्मा शरीर रूपी भस्म में छिपा हुआ है.
इस तरह उसका आत्मदेव तो पवित्र ही है.
क्योकि वह भव्यात्मा अन्तरंग में प्रवेश कर चैतन्य परमात्मा बन गया है.
अब वह महात्मा शीघ्र ही मुक्ति-महल में जाएगा.
इस बात को जानकर आप भी अब अन्तरंग में प्रवेश कर चैतन्य परमात्मा बनें.

28. उत्तम बम्हचर्य धर्म

हमारे चैतन्य आत्मा में अनंत धर्म होते हैं,
लेकिन फिर भी आत्मा के दस धर्मों को मुख्य करके प्रति दिन
हम अपना आत्म-अवलोकन करते हैं.
हम उत्तम बम्हचर्य धर्म की पूजा में यह विचार करते हैं -

शील बाढ़ नौ राख
बम्ह-भाव अंतर लाखो
करी दोनों अभिलाख
करहु सफल नरभव सदा

हमारे चैतन्य आत्मा में सांसारिक लिप्तता के कारण हो रही अशुद्धि या मिथ्यात्व के प्रतीक इस संसार का त्याग कर अपने खुद के बम्ह में चर्य यानी लीन रहना ही उत्तम बम्हचर्य धर्म कहलाता है.

आज इस बम्हचर्य धर्म पर हम संक्षेप में चर्चा करते हैं -

इस बम्हचर्य धर्म का पालन व्यवहार और निश्चय से दो तरह का होता है –

1. व्यवहार बम्हचर्य धर्म –

इस संसार में दिख रहे सभी लोग, बहिन, माता, बेटी आदि के प्रति किसी भी प्रकार के आसक्ति या काम-वासना के भाव नहीं रखना,

उनके प्रति करुणा और वात्सल्य भाव रखकर उनकी हर तरह से मदद करना

उनके कल्याण की हमेशा कोशिश करना ही व्यवहार बम्हचर्य धर्म कहलाता है.

2. निश्चय या उत्तम बम्हचर्य धर्म –

इस संसार में दिख रही सभी असंख्य वस्तुएं और उनके प्रति हो रहे हमारे रागादी भाव तो वास्तव में हमारे चैतन्य आत्मा में घुसे हुए असंख्य कर्म-कंटक ही हैं, जो हमको प्रति पल छेद-भेद रहे हैं.

अतः प्रत्येक जीव को चाहिए कि वह काम-वासना और विषयों में अपनी आसक्ति को छोडकर तथा सभी विषयों और कषायों को त्याग कर बम्ह यानी कि अपने निज स्वरुप में चर्य यानी रमण करे.

फिर सभी के कल्याण के लिए अपनी पाँचों इन्द्रिय और मन को वश में करके मुनि-व्रत धारण करने का प्रयत्न करे.

इस तरह से जो भी जीव अभी घर में ही रहकर अपनी तृष्णा को घटता है
तथा जिसे अब इस संसार में कोई भी रूचि नहीं रह गयी है,
वही जीव उत्तम बम्हचर्य धर्म को धारण करता है,
उसे ही अनंत-अनंत भवों के दुखों से मुक्ति मिलती है.

अतः जो जीव अपने अन्तरंग की शुद्धि करके उत्तम बम्हचर्य धर्म को धारण करके फिर मुनिमुद्रा धारण करके अपने चैतन्यदेव का वीतरागी परिणति के साथ ज्ञान और ध्यान करता है, उसके ही सभी कर्म रुपी बंधन चूर-चूर हो जाते हैं.

क्योकि निश्चय से तो जो आपकी चैतन्य आत्मा है,
उसे जानना, मानना और उसी में रमण करना और इस संसार के मोह का त्याग करना ही उत्तम बम्हचर्य धर्म कहलाता है.

बाकी इस संसार की सभी क्रियायें तो सिर्फ मिथ्यात्व या झूठ की ही श्रेणी में ही आती हैं.

बम्हचर्य के साथ उत्तम शब्द जीव के सम्यक्त्व गुण का परिचायक है.

इस सम्यक्त्व गुण को अंगीकार करने से ही जीव उत्तम बम्हचर्य धर्म को अंगीकार करने का पात्र बनता है.

अतः हर व्यक्ति को चाहिए कि वह अपनी निज शक्तिसम उत्तम बम्हचर्य धर्म का पालन करे.

प्रत्येक जीव को चाहिए कि वह उत्तम बम्हचर्य गुण के धनी मुनिराज या ज्ञानवान

व्यक्ति की अत्यंत विनय करे और उसके बताये मार्ग का अनुसरण करे,
ताकि वह खुद भी धर्म के दस लक्षणों को समझ कर ज्ञानवान हो सके.
ऐसे अति कल्याणकारी उत्तम बम्हचर्य धर्म को धारण कर सभी जीव अपना कल्याण करे,
यही मंगल भावना भाते हैं.

29. निगोद के कांटे को निकालें

जो निकट भव्यात्मा अपने स्वयं के वर्तमान के सुख-दुख में और
निगोद के दुःखों से कोई अन्तर नहीं मानता है
तथा ऐसे मिथ्या सुख एवं दुःखों को हमेशा के लिये दूर करने की
चेष्टा में सदा प्रयत्नशील रहता है;
उसी महा-मनीषी को समस्त अरहन्तादिदेव मुमुक्षु के रूप में देखते है, जानते है।
हे चैतन्य प्रभो, प्रत्येक मनुष्य अनादिकाल से
समुद्र बराबर समय तो निगोद में रहा है,
सिर्फ बूंद बराबर समय के लिये ही वह निगोद से बाहर निकल पाया है।
अहो, श्री केवली भगवन्त द्वारा बताये गये इन शब्दों को सुनकर जो आत्मन अपने वर्तमान के बूँद सरीखे सुख-दुख को गौण कर,

अपने समुद्र बराबर निगोद के दुख को मुख्य करता है,
वह शीघ्र ही इन दुखों को दूर करने में जुट जाता है।
फिर उसे वर्तमान के सुख-दुख तो कुछ भी नहीं लगते है।
अरे भाई, जिसके पैर में कोई कांटा चुभा हुआ हो,
वह अगर सोने चांदी के बर्तनों में भोजन करे,
तो उसको दर्द नहीं होगा, ऐसा तो हो ही नहीं सकता है।
वह तो लगातार हर समय दर्द से चिल्लायेगा, तड़फेगा ही सही।
इसी तरह हे परमात्मा, अभी वर्तमान में आपके पांव में मिथ्यात्व का, निगोद का कांटा लगा हुआ है।
अब आप इस घनघोर भीषण दुःख की पीड़ा से तड़फ़ो तो सही.

वर्तमान के आपके काल्पनिक और आभासी सुख आपको इस निगोद के कांटे के अनन्त दुख के सामने सुख रूप कैसे लग सकते है?
अतः हे मोक्ष के युवराज, अब आप अपनी द्रष्टि को वर्तमान से हटाकर निगोद के दुखों पर लगाओ और उन्हें हटाने में लग जाओ,
तभी आप इस लोक के पार उतर कर अपने मोक्ष महल में जाकर अनन्त सुख में रमण कर सकेंगे।

30. उत्तम त्याग धर्म

हमारे चैतन्य आत्मा में अनंत धर्म होते हैं,
लेकिन फिर भी हम पर्युषण पर्व पर आत्मा के दस धर्मों को मुख्य करके प्रति दिन
अपना आत्म-अवलोकन करते हैं.
हम मंदिरजी में पूजा करते हुए यह विचार करते हैं -

दान चार परकार
चार संघ को दीजिये
धन बिजुली उनहार
नरभव लाहो लीजिये

हमारे चैतन्य आत्मा में सांसारिक लिप्तता के कारण हो रही अशुद्धि या मिथ्यात्व के प्रतिक इस संसार का त्याग कर जो आत्म-शुद्धि की सम्यक पर्याय प्रगट होती है, उसे उत्तम त्याग धर्म कहते हैं.

आज इस त्याग धर्म पर हम संक्षेप में चर्चा करते हैं -

1. अक्सर लोग धन या पैसे के दान को ही त्याग धर्म धर्म समझ लेते हैं,
2. लेकिन शास्त्रों में तो दान भी सिर्फ चार प्रकार का बताया है.
3. औषधि दान,
4. अभय दान,
5. शास्त्र दान
6. आहार दान
7. शास्त्रों में कही पर भी रूपये या धन के त्याग को दान नहीं कहा है.

8. जिस तरह से बाढ़ के पानी की गंदगी अगर हमारे घर के में घुस जाती है,
9. उसी तरह से यह धन रुपी बाढ़ की गंदगी हमारे चैतन्य घर में अगर आ गयी है,
10. तो उसे दोनों हाथों से बाहर निकल देना चाहिए,
11. तभी हमारा चैतन्य घर स्वच्छ और निर्मल रह सकता है.
12. औषधि दान, अभय दान, शास्त्र दान और आहार दान को भी व्यवहार से ही दान कह सकते हैं.
13. अब हे चैतन्य प्रभो, आप विषयों में अपनी आसक्ति को छोडकर तथा सभी विषयों और कषायों को त्याग कर उत्तम सम्यकदर्शन को धारण करें,
14. फिर अपनी पाँचों इन्द्रिय और मन को वश में करके सभी के कल्याण के लिए प्रयत्न करे.
15. अतः जो भी जीव इस तरह से उत्तम त्याग धारण करता है,
16. उसे ही अनंत-अनंत भावों के दुखों से मुक्ति मिलती है.
17. अतः जो जीव अपने अन्तरंग की शुद्धि करके उत्तम त्याग धर्म को धारण करके
18. जप, त्याग करके अपने चैतन्य का वीतरागी परिणति के साथ ज्ञान और ध्यान करता है,
19. उसके ही सभी कर्म रुपी बंधन चूर-चूर हो जाते हैं.
20. अतः जो जीव अपने चैतन्य के अनुभव में लीन रहता है,
21. त्याग गुण का पालन करता है, वह प्राणी हमेशा सुख पाता है.
22. क्योकि निश्चय से तो जो आपकी चैतन्य आत्मा है,
23. उसे जानना, मानना और उसी में रमण कर संसार का त्याग ही उत्तम त्याग धर्म कहलाता है.
24. बाकी इस संसार की सभी क्रियायें तो सिर्फ मिथ्यात्व या झूठ की ही श्रेणी में ही आती हैं.
25. अतः हर व्यक्ति को चाहिए कि वह दर्पण के समान निर्मल और स्वच्छ रहकर अपनी निज शक्तिसम उत्तम त्याग धर्म का पालन करे.

26. त्याग के साथ उत्तम शब्द जीव के सम्यक्त्व गुण का परिचायक है.
27. इस सम्यक्त्व गुण को अंगीकार करने से ही जीव उत्तम त्याग धर्म को अंगीकार करने का पात्र बनता है.
28. प्रत्येक जीव को चाहिए कि वह त्याग गुण के धनी ज्ञानवान व्यक्ति की अत्यंत विनय करे और उसके बताये मार्ग का अनुसरण करे,
29. ताकि वह खुद भी धर्म को समझ कर ज्ञानवान हो सके.
30. सभी जीव ऐसे अति कल्याणकारी उत्तम चैतन्य धर्म को धारण कर अपना कल्याण करे,
31. यही मंगल भावना भाते हैं.

31. चैतन्य-प्रभु बनने का मार्ग

हे आत्मदेव, शब्दों में तो आपने अनंत बार भाया है कि आपका आत्मा का स्वरूप तो -

1. सहजानंदी शुद्ध-स्वरूपी है,
2. अनादि-निधन है,
3. चैतन्यघन है,
4. परमज्योतिस्वरूप है,
5. त्रिलोकपति है,
6. अनंत शक्तिपुंज है,
7. अनंत गुणाधिपति है,
8. साक्षीभाव से विचरण करने वाले हैं,
9. अदभुत अलौकिक है,
10. परमेश्वर है,
11. भगवान-आत्मा है,
12. लेकिन ऐसी भावना भाकर अपने आपको स्वीकार करने से आपको कौन रोक रहा है?

13. हे प्रभो, ऐसे अपने चैतन्य-स्वभाव को पहचानकर अब आप बस इस विलक्षण स्वरूप को हृदयंगम कर इसी में जम जाओ, रम जाओ, समा जाओ;

14. तभी आपका कल्याण हो सकता है।
15. हे प्रभो, जब तक आप रात को रात नहीं मानोगे,
16. तबतक आपके दिन को दिन कहने का प्रमाण क्या है?
17. उसी तरह आप चाहे हर समय आत्मा-आत्मा या दिन-दिन कहा करो,
18. परन्तु आपके उस कथित आत्मा का प्रमाण क्या है,
19. क्योंकि आपने रात को रात नहीं समझा है,
20. फिर यह तो अनादिकाल से चल रही घनघोर मिथ्यातत्व की काली रात है।

21. मोक्षमार्ग प्रकाशक में आता हैं कि शराबी की बात का प्रमाण क्या;
22. क्योकि कभी वह मां को मां कहता है तो कभी मां को पत्नी कहता है।
23. इसी तरह हे प्रभो, जब तक आपकी इस आत्मतत्व में सच्ची रूचि नहीं होगी,
24. जब तक आपको इस संसार में अंधेरा ही अंधेरा नही दिखेगा,
25. जब तक आप इस अंधेरे को दूर करने का प्रयत्न नही करोगे,
26. तब तक हे प्रभो, आपका कल्याण नहीं होगा,
27. तथा तब तक आप पामरता को त्याग कर प्रभु नही बन सकोगे।
28. बस अब चैतन्य-प्रभु बनने का निर्णय अब आपको ही करना है.

32. असंख्य शास्त्रों का क्षयोपशमज्ञान

1. हे प्रभो, आपने ग्यारह अंग के असंख्य शास्त्रों के क्षयोपशम ज्ञान को भी अनंत बार प्राप्त किया है.
2. लेकिन आप अभी अपने वर्तमान के अति तुच्छ ज्ञान पर मोहित हो रहे हो,
3. जरा विचार तो करो कि इस ज्ञान को आप कहां पर रख रहे हो,
4. क्योंकि आपको तो अपने खुद के आत्मदेव का तो पता ही नहीं है।
5. फिर आपका अति मेहनत से कमाया यह ज्ञान किस फोल्डर या किस फ़ाइल में कहाँ पर जा रहा है?
6. हे चैतन्य प्रभो, आपका यह ज्ञान सबको जान रहा है,
7. परन्तु जिसे उसको जानना चाहिये,
8. उसका तो इसे पता ही नहीं लग पा रहा है।
9. अतः जो यह आपका क्षयोपशम ज्ञान है,
10. वह तो हाथी के दांत की तरह होता है,
11. जिससे शरीर की शोभा तो होती है,
12. किन्तु आत्मदेव का कोई भला नहीं होता है.
13. हे प्रभो, जल्दी ही कोई भी हाथी दांत का लोभी शिकारी आयेगा

14. तथा इस दांत के लिये हाथी की जान ले लेगा।
15. इस तरह आपका यह क्षयोपशम ज्ञान ही आपके अंहकार का कारण बनेगा.
16. तथा आपके समस्त सतकर्मो को नष्ट कर पुनः आपको अधोगति में ले जायेगा.
17. वर्तमान में आप जो शास्त्रज्ञान रूपी क्षयोपशम ज्ञान बढ़ा रहे हो,
18. वह तो साबुन की टिकिया जमा करने के समान है।
19. आपका अध्ययन कई वर्षो से चल रहा है
20. तथा अब तो आपके पास कई टन साबुन की बट्टियां ग्यारह अंग रूपी ज्ञान की भी जमा हो गयी होगी,

21. किन्तु उससे आपको क्या लाभ हो सकता है,
22. क्योंकि आपके आत्मदेव की चादर तो अभी भी मैली ही है।
23. अत: चिन्ता तो आपको इस चादर की सफाई की होना चाहिये,
24. जिसके लिये अधिक से अधिक साबुन की एक टिकिया ही पर्याप्त है।
25. सच्चाई यह है कि साबुन की बट्टी रूपी क्षयोपशम ज्ञान को आप कितना भी जमा कर लो,
26. लेकिन वह अपने आप खुद से आपकी चादर को साफ तो नहीं कर सकता है।
27. इससे यह भी प्रतीत होता है कि आप मात्र बट्टियों को जमा करने में ही खो गये हो।
28. हे प्रभो, बात तो आप बारम्बार आत्मा की करते हो,
29. पर ध्यान तो आपका बट्टियों को इकठ्ठा करने में ही है.
30. अन्यथा पहली बट्टी से ही अपनी चादर को साफ कर अनंत काल पहले ही इस संसार से अलग होकर हट गये होते।
31. अतः अब इस जन्म को व्यर्थ न जाने दें.
32. तथा क्षयोपशम ज्ञान को पाने का लोभ छोड़कर निज चैतन्यदेव को ही पाने की सतत कोशिश करें.

33. बोधिदुर्लभ भावना

दुर्लभ है निगोद से थावर
अरु त्रस गति पाना
नर काया को सुरपति तरसे
सो दुर्लभ प्राणी
उत्तम देस सुसंगती दुर्लभ
श्रावक कुल पाना
दुर्लभ सम्यक दुर्लभ संयम
पंचम गुण ठाना
दुर्लभ रत्नत्रय आराधन

दीक्षा का धरना
दुर्लभ मुनिवर को व्रत पालन
शुद्ध भाव करना
दुर्लभ तैं दुर्लभ है चेतन
बोधि ज्ञान पावे
पाकर केवलज्ञान नहीं फिर
इस भव में आवे
इस जीव के लिये निगोद से निकल कर स्थावर के बाद
फिर त्रस गति पाना बहुत दुर्लभ है,
उससे भी दुर्लभ मनुष्य गति है,
जिसके लिये तो देवता लोग भी तरसते हैं.

इस मनुष्य भव में भी उत्तम देश,
सुसंगति मिलना,
श्रावक कुल मिलना,
फिर रत्नत्रय की आराधना करना,
सम्यक्त्व प्राप्त होना और
पन्चम गुणस्थान मिलना और भी ज्यादा दुर्लभ है.
दीक्षा का धारण करना,
मुनिवर के व्रत पालन करना और
शुद्ध भाव करना उत्तरोत्तर दुर्लभ हैं.
इससे भी अधिक दुर्लभ तो बोधि ज्ञान या केवलज्ञान की प्राप्ति करना है,

क्योंकि इसे प्राप्त करने के बाद फिर कोई भी इस अत्यंत दुखदायी भव-भ्रमण में फिर नहीं आता है.

34. उत्तम संयम धर्म

हमारे चैतन्य आत्मा में अनंत धर्म होते हैं,
लेकिन फिर भी हम आत्मा के दस धर्मों को मुख्य करके प्रति दिन
अपना आत्म-अवलोकन करते हैं.
हम मंदिरजी में रोज सुबह पूजा करते हुए यह विचार करते हैं -
काय छहों प्रतिपाल
पंचेंद्री मन वश करो
संजम-रतन सम्हाल
विषय चोर बहु फिरत हैं
इक घड़ी मत बिसरो करो नित
आव जम मुख बीच में
अतः हमारे इस आत्मा में असंयम या अशुद्धि या मिथ्यात्व के अभाव रूप जो शुद्धि की सम्यक पर्याय प्रगट होती है, उसे उत्तम संयम धर्म कहते हैं.
आज इस संयम धर्म पर हम संक्षेप में चर्चा करते हैं -
1. इस संसार में हमे पृथ्वीकायिक, जलकायिक, अग्निकायिक, वायुकायिक और वनस्पतिकायिक तथा एकेंद्रिय तथा त्रसकायिक सभी जीवों के प्रति करुणा करना चाहिए तथा उनकी रक्षा करने का प्रयत्न करना चाहिए.
2. हमें अपनी पाँचों इन्द्रिय और मन को वश में करके सभी के कल्याण के लिए प्रयत्न करना चाहिए.
3. अहो, जिस संसार से डर कर अनंत तीर्थंकर भाग गये हैं,
4. उस संसार की मोह रुपी कीचड में अब आप क्यों फंसना चाहते हो?
5. एक पल को भी जीव को भूलना नहीं चाहिए कि वह यमराज रुपी मगरमच्छ के जबड़ों के बीच में ही पड़ा हुआ है.

6. अतः जो भी जीव इस तरह से उत्तम संयम धारण करता है,
7. उसे ही अनंत-अनंत भावों के दुखों से मुक्ति मिलती है.
8. इसलिए इस संयम-रत्न को बहुत सम्हाल कर रखना चाहिए

9. क्योकि इस संसार में इस चैतन्य-हीरे को लूटने को आतुर बहुत से विषय चोर फिर रहे हैं.
10. अतः जो जीव अपने अन्तरंग की शुद्धि करके संयम को धारण करके जप, तप करके अपने चैतन्य का वीतरागी परिणति के साथ ज्ञान और ध्यान करता है, उसे ही उत्तम संयम धर्म का पालन करना कहलाता है.
11. अतः जो जीव अपने चैतन्य के अनुभव में लीन रहता है,

12. संयम गुण का पालन करता है, वह प्राणी हमेशा सुख पाता है.
13. क्योकि निश्चय से तो जो आपकी चैतन्य आत्मा है,
14. उसे जानना, मानना और उसी में रमण करना ही उत्तम संयम कहलाता है.
15. बाकी इस संसार की सभी क्रियायें तो सिर्फ मिथ्यात्व या झूठ की ही श्रेणी में ही आती हैं.
16. अतः हर व्यक्ति को चाहिए कि वह दर्पण के समान निर्मल और स्वच्छ रहकर संयम धर्म का पालन करे.
17. प्रत्येक जीव को चाहिए कि वह संयम गुण के धनी ज्ञानवान व्यक्ति की अत्यंत विनय करे और उसके बताये मार्ग का अनुसरण करे,
18. ताकि वह खुद भी धर्म के दस लक्षणों को समझ कर ज्ञानवान हो सके.
19. अतः आज हमे चाहिए कि हम इस मिथ्यात्व की अग्नि को सम्यक संयम भाव रुपी जल से बुझा दे.
20. क्योकि निश्चय से तो अपने चैतन्य स्वरुप में ही रमण करना ही उत्तम संयम धर्म है.
21. संयम के साथ उत्तम शब्द जीव के सम्यक्त्व गुण का परिचायक है.
22. इस सम्यक्त्व गुण को अंगीकार करने से ही जीव उत्तम संयम धर्म को अंगीकार करने का पात्र बनता है.
23. अतः सभी जीव ऐसे अति कल्याणकारी उत्तम संयम धर्म को धारण कर अपना कल्याण करे,
24. यही मंगल भावना भाते हैं.

35. कोल्हू का बैल

जब भी मैं किसी भी पशु को देखता हूँ,
तब मुझे उनकी बेबसी और दुःख-पीड़ा को देखकर बहुत बैचैनी होती है और
तब मैं भी उसी तरह के अपने अनंत जन्मो की कल्पना कर
उसकी पीड़ा की अग्नि की ज्वाला में खुद भी झुलसने लगता हूँ.

फिर मैं सोचता हूँ कि मैंने तो ये सब भक्ति-पूजा, व्रत-जप-तप आदि अनंत बार किये हैं, लेकिन आज तक मेरा कल्याण नहीं हुआ है

तथा मैं भी किसी कोल्हू के बैल की तरह ही इस संसार की चतुर्गति की चौरासी लाख योनियों में ही चक्कर लगा रहा हूँ.

अहो, आप जानते ही हैं कि कोल्हू के बैल की आँखों पर पट्टी बांध दी जाती है, फिर उसे कोल्हू के चारो ओर चक्कर लगाने पड़ते हैं.

इस तरह चक्कर लगते हुए वह सोचता है कि आज मैं दिन भर में पचासों मील या किलोमीटर चला हूँ;

परन्तु उसे पता ही नहीं चलता है कि वो तो अपनी धुरी के ही चक्कर लगा रहा है।

उसकी आँखों पर पट्टी इसीलिये बांधी जाती है कि उसका यह मिथ्या अभिमान कायम रहे और वो बिना घबड़ाये कोल्हू के चक्कर लगाता रहे।

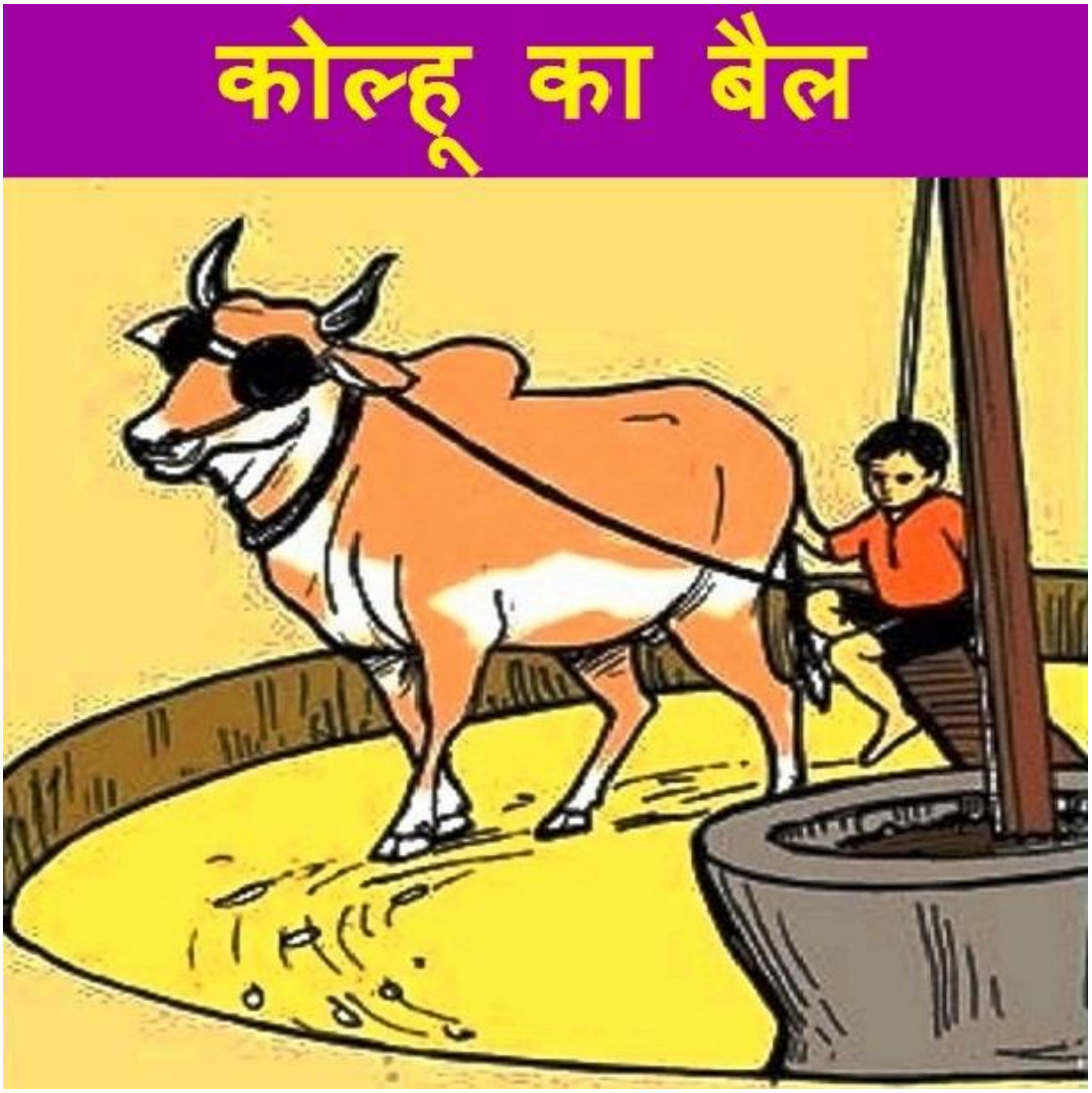

इसी तरह से हे चैतन्य प्रभो, आपकी आँखों (ज्ञानचक्षु) पर भी पट्टी बंधी है और इसीलिये आप देख नहीं पा रहे हो कि वास्तव में आप भक्ति-पूजा, जप-तप, नियम-संयम करते हुए अपनी शक्ति का मिथ्या प्रदर्शन करते हुए चतुर्गति रूपी कोल्हू के ही चक्कर लगा रहे हो।

इस तरह की मेहनत करते हुए आप सोचते हो कि आप बहुत अच्छे कार्य कर पुण्य कमा रहे हो;

परन्तु वास्तव में इस तरह के कार्य करने से तो आप सिर्फ चतुर्गति की चौरासी लाख योनियों में ही चक्कर लगा रहे हो।

इससे जो आपको यह थोड़ा सा पुण्य मिल रहा है,

वह वास्तव में पापानुवर्ती है और वह शीघ्र ही घनघोर आपको भीषण दुःख उपजावेगा।
अतः शास्त्रों में ऐसे पुण्य को भी पापानुवर्ती पुण्य के रूप में ही गिना जाता है।
निरपेक्ष भाव से देखो, साक्षी भाव से कहो, या ज्ञाता-द्रष्टापने से कहो,
वास्तव में तो प्रत्येक जीवात्मा अपनी आत्मा रूपी धुरी के ही चक्कर लगा रहा है।
उससे कभी बाहर न गया है और न ही जा सकता है।
अनन्त केवली भगवन्त प्रत्येक मनुष्य की इस यथास्थिति को प्रत्यक्ष हर समय देख रहे हैं।
अतः आप भी वस्तु-स्वरूप को पहचानो कि आप वास्तव में चैतन्य-सम्राट ही हो और अनादिकाल से अपने आत्म-स्वरूप से बाहर गये ही नहीं हो।
बस फिर अब आपके लिये मात्र एक ही कार्य बचा हुआ है और वह यह है कि आप अब अपनी ज्ञानचक्षु पर बंधी मिथ्यात्व की पट्टी को हटाने का पुरूषार्थ कर लो.
हे आत्मदेव, क्या आप ऐसा करना चाहोगे?

36. लोक भावना

लोक अलोक अकाश मांहि थिर
निराधार जानो
पुरुष रूप कर कटी भये षट
द्रव्यन सों मानो
इसका कोई न करता हरता
अमिट अनादि है.
जीव रु पुद्गल नाचे यामें
कर्म उपधि है
पाप पुण्य सों जीव जगत में
नित सुख दुःख भरता
अपनी करनी आप भरें सर

औरन के धरता
मोह कर्म को नाश मेटकर
सब जग की आसा
निज पद में थिर होय लोक के
शीश करो वासा

आकाश द्रव्य लोकाकाश और अलोकाकाश के भेद से दो प्रकार का होता है.
यह स्थिर रहता है तथा किसी के आधार से नहीं है.
लोकाकाश का आकार इस तरह का होता है

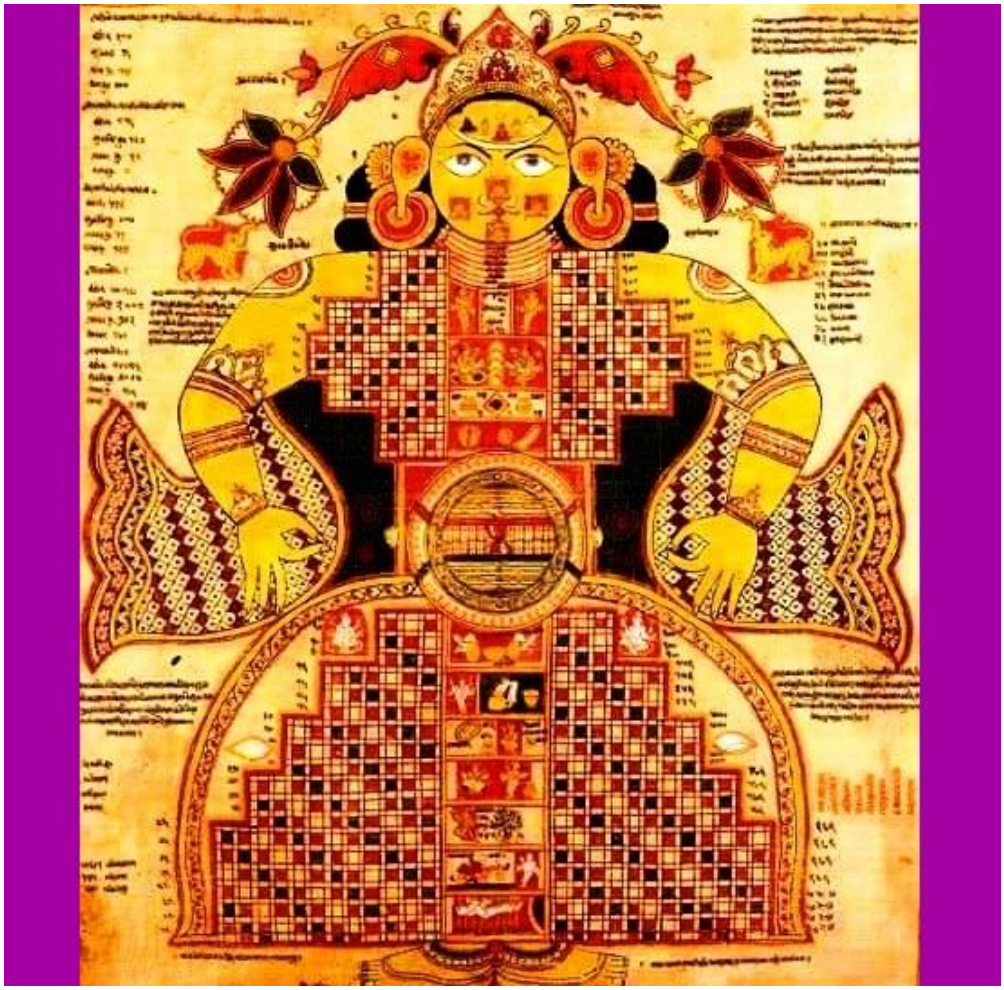

जैसे कोई पुरुष कमर पर दोनो हाथ रख कर खड़ा हो.
इस आकाश का न कोई बनाने वाला है और न ही कोई इसे मिटाने वाला हो

सकता है.
ये तो अनादि अनन्त ही सत्तावान ही रहता है.
इसी में छहों द्रव्य रहते हैं.
छहों द्रव्यो मे चार द्रव्य तो स्थिर ही रहते हैं,
मात्र पुद्गल और जीव द्रव्य ही इस आकाश में अपने-अपने कर्मोपाधि के कारण चलायमान रहते हैं.
इस संसार में यह जीव पुण्य और पाप के कारण सुख और दुख भोगता रहता है,
परन्तु स्वयं अपनी करनी को दोष न देता हुआ कर्मो को ही दोष देता हे.
इसलिये हे चैतन्य प्रभो, अब आप भी मोह्नीय कर्म का नाश कर,
समस्त सान्सारिक भोगों की आशा का त्याग कर
अपने निज पद मे स्थिर होओ,
ताकि लोक के अग्र भाग यानि सिद्ध शिला में आप भी हमेशा के लिये निवास कर अक्षय अनंत सुख को प्राप्त कर सकें.
ॐ शांति.

37 संसार चक्र

जब आप किसी जिन-मंदिर में दर्शन को जाते हैं,
तब आपको संसार-वृक्ष का एक मार्मिक चित्र दिखाई देता है.
आइये पहले हम इस चित्र के कथानक पर चर्चा कर लें.
एक बार एक व्यक्ति किसी घनघोर जंगल से गुजर रहा था.
अचानक एक जंगली हाथी उसकी और झपटा.
बचाव का कोई दूसरा उपाए न देखकर वह भागने लगा.
फिर भी हाथी तेजी से उसके समीप आता जा रहा था.
तभी एक बरगद के पेड़ की लटकती शाखाएं उसके हाथ में आ गयी.
वह व्यक्ति तत्काल उन डालियों को पकड़ कर ऊपर चढ़ कर लटक जाता है.
कुछ देर बाद उसकी दृष्टि में नीचे की ओर जाती है, तो वह देखता है कि नीचे एक कुंआ है.

उस कुएं में कई भयानक विशाल अजगर उसके नीचे गिरने पर उसे खाने के लिए टकटकी लगा कर उसकी प्रतीक्षा कर रहे हैं.
भय से व्याकुल हो उसने ऊपर की और देखा, तो पाया कि पेड़ की वो डालियाँ जिनसे वह लटका हुआ है;
उन्हें एक सफ़ेद और एक काला चूहा कुतर कुतर कर काट रहे हैं.
तथा वह हाथी भी गुस्से में पेड़ के तने को जोर-जोर से तोड़ने का प्रयत्न कर रहा होता है.
इन सब घटनाओं से वह व्यक्ति अत्यंत भयाक्रांत हो जाता है.
उसे अब अपनी मौत सामने खड़ी दिखती है.
अतः वह जोर-जोर से बचाव-बचाओ चिल्लाने लगता है.
तभी वहां से एक विमान में गुजर रहे देवी-देवता उसे देखते हैं और उस मनुष्य को इतनी बड़ी विकट स्थिति में देख कर करुणा करके उसे समझाते हैं कि तुम जल्दी से हमारे विमान में आ जाओ, हम तुम्हे सुरक्षित जगह पर पहुंचा देंगे.
वह मनुष्य विमान में चढ़ना ही चाहता है, तभी पेड़ पर लगे शहद के छत्ते से टपकती शहद की एक बूंद उसके मुंह में आ जाती है.
इस मधुर स्वाद के सामने वह अपने संकट को भूल जाता है और मदमस्त होकर उस मधु की टपकती हर बूंद को पीने लगता है.
देवी-देवता उसे मधु का लोभ छोड़कर विमान में चढ़ने के लिए बहुत समझाते हैं, लेकिन वह कहता है कि बस थोड़ा सा मधु और पी लूँ, थोड़ा सा मधु और पी लूँ फिर चढ़ता हूँ.
कुछ ही देर में सफ़ेद और काले चूहे उस डाल को काट देते हैं, जिससे वह व्यक्ति लटका हुआ था.
तत्काल ही वह व्यक्ति गिरकर उन अजगरों का भोजन बन जाता है.

वे देवी-देवता भी उस व्यक्ति की इस मोही प्रवृत्ति को देख कर अत्यंत दुःख और आश्चर्य प्रगट करके चले जाते हैं.

हे प्रभो, इस चित्र को देख कर आप सोचते होगे कि कितना बेवकूफ है वह व्यक्ति, जो जरा से शहद के लोभ में अपनी जान गवां बैठा.

साथ ही यह भी सोचते होंगे कि अच्छा है कि हम लोग जंगल के पास नहीं रहते हैं और अब हमें इस तरह के खतरे का कभी सामना नहीं करना पड़ेगा.
लेकिन सच्चाई यह है कि अनंत सिद्ध भगवंत तो आपको अभी ही भव-वन या जन्म-मरण के इस जंगल में ही जीवन की डोर से लटका हुआ देख रहे हैं.

1. वे समझा रहे हैं कि यह जीवन बड़ा ही क्षणिक और नश्वर है.
2. इसका हर एक सेकंड आपको मौत की ओर धकेल रहा है.
3. शहद या मधु की तरह ये सभी सांसारिक सुख भी अस्थायी ही हैं, काल्पनिक ही हैं.
4. इस चित्र में दर्शाया हाथी मृत्यु या काल के समान आपको कुचलना चाहता है,
5. अष्ट कर्मों के विकराल अजगर भी हर जगह आपकी मृत्यु की प्रतीक्षा कर रहे हैं.
6. काले तथा सफ़ेद चूहे के समान दिन और रात आपकी आयु को हर समय कुतर रहे हैं.
7. फिर भी आपको भोग और वासना रूपी यह शहद बड़ा ही स्वादिष्ट लग रहा है.
8. देवी-देवता आपको करुणावश अनंत अक्षय सुख के विमान में चढ़ने के लिए बुला रहे हैं,
9. लेकिन थोड़ा और इन भोग-विलास का आनंद ले लूँ, फिर चलता हूँ;
10. ऐसा कह कर आप अनंत सुख के इस विमान में नहीं बैठ रहे हो.
11. फिर जल्द ही आपकी आयु का नाश होकर आपकी मृत्यु आ जाती है.
12. हे प्रभो, ऐसे ही इस संसार में रह रहे सभी मनुष्य भी भोग-विलास के इन सांसारिक सुखों को मधु के समान रसीले मान कर उसी को भोगने में खोये रहते हैं
13. तथा सद्गुरु की शिक्षा को भूल कर अनंत अक्षय सुख के विमान में नहीं बैठते हैं और शीघ्र ही मृत्यु को प्राप्त होते हैं.
14. इसी कहानी का नाम संसार चक्र है.
15. क्या आप इस संसार से छूटना चाहते हैं?

16. अगर आप ऐसा चाहते हैं, तो सद्गुरु के अनंत सुख के इस विमान में बैठ जाइए.
17. फिर वे आपको अनंत अक्षय सुख के मुक्ति-धाम में ले जावेंगे.

38. चतुर्गति का चक्र

हे चैतन्यदेव, चतुर्गति का यह चित्र में बताया चक्र आपको बताता है कि किस तरह से आप इस भव-समुद्र में छटपटा रहे हैं.
अतः अब इस जन्म में सिर्फ एक बार तो चिन्तन, मनन और विवेचन करे कि -
1. हे प्रभो, प्रत्येक जीव समुद्र बराबर बार देवगति में तो पंचेन्द्रिय संज्ञी तिर्यंच गति से सीधे ही पहुँच जाता है, लेकिन बूँद सरीखे बहुत कम जीव इस तिर्यंच गति से नरक में पहुँचते हैं.
2. इस तरह पंचेन्द्रिय संज्ञी तिर्यन्च गति से देव गति जाने का तो तीन लोक का सबसे बड़ा त्रिलोकीय राज-मार्ग है.
3. इस तरह जो देवगति तिर्यंच सरीखी हीन गति से आये जीवों से भरी पड़ी हो, क्या वहां पर आप भी जाना चाहते हैं?
4. इसी तरह पंचेन्द्रिय संज्ञी तिर्यंच या मनुष्य गति से बहुत सारे जीव जब नरक पहुँचते हैं, तब बूँद सरीखे बहुत थोड़े जीव किसी भी गति से मनुष्य गति में पहुँचते हैं.
5. यह तीन लोक का चतुर्गति का चक्र है.
6. इससे यह सिद्ध होता है कि यह मनुष्य भव कितना ज्यादा दुर्लभ है क्योंकि इस मनुष्य भव के एक-एक सेकण्ड की कीमत असंख्य देव भव से भी ज्यादा है.
7. फिर भी बड़ा आश्चर्य होता है कि इतना बहुमूल्य मनुष्य भव पाने के बाद भी यह जीव अपने चैतन्य-परमात्मा को छोडकर सिर्फ एक देव भव पाने की लालसा में खुद को नष्ट कर लेर है.
8. तथा शुभ कार्यों को करने की इच्छा से दया, दान, व्रत-जप-तप आदि करके अपना यह मनुष्य भव खो देता है

9. फिर अपनी बहुमूल्य त्रस पर्याय का नाश करके पुनः एकेंद्रिय और निगोद में पँहुच जाता है.

10. क्या आप इस शास्त्रोक्त कथन को सही मानते हैं?

11. अगर हाँ, तो इससे बचने का उपाय अवश्य करें.

39. सच्चे देव-शास्त्र-गुरु का त्रिभुज ही संसार को नष्ट करता है

आगम शास्त्रों में आता है कि -

1. सच्चे देव-शास्त्र-गुरु को जानना ही सम्यकदर्शन है.
2. सच्चे देव-शास्त्र-गुरु की प्राप्ति ही मोक्ष मार्ग है.
3. सच्चे देव-शास्त्र-गुरू की सच्ची श्रद्धा ही आत्म-प्राप्ति का कारण है.
4. सच्चे देव-शास्त्र-गुरु की त्रिवेणी के मिलने से ही अनादिकाल से जीव का परिभ्रमण ख़त्म हो सकता है.
5. सच्चे देव-शास्त्र-गुरु के त्रिभुज से ही इस अथाह संसार को कैद कर नष्ट किया जा सकता है.
6. सच्चे देव-शास्त्र-गुरु की त्रिवेणी तो जीव की सम्यकज्ञान गंगा के प्रवाह के लिए मूलभूत जरुरी है.
7. तभी जीव का शाश्वत कल्याण निश्चित हो सकता है.
8. अनादिकाल से प्रत्येक जीव ने अनंत बार समवशरण में जाकर साक्षात केवलज्ञानी देव को अनंत बार पाया है.
9. ग्यारह अंग में समाये असंख्य शास्त्रों का ज्ञान भी जीव को अनंत बार हुआ है.
10. अतः देव और शास्त्र की दो भुजाओं को तो जीव ने अनंत बार पाया है,
11. प्रत्येक प्राणी ने अपने भ्रम, मोह और अज्ञान के कारण सच्चे सद्गुरु का अनंत बार समागम मिलने पर भी उसे सद्गुरु के रूप में स्वीकार नहीं है,
12. अतः आजतक इस त्रिभुज की सद्गुरु की तीसरी भुजा न मिलने के कारण वह इस अथाह और असीम संसार को इस देव-शास्त्र-गुरु के त्रिभुज में कैद नहीं कर पाया है.
13. परिणामस्वरुप वह इस संसार में अनंत काल से जीवन-मरण की भीषण वेदना से तप्त हो रहा है.
14. इसी कारण वह अनादिकाल से अभी तक अपने अनंत भव-भ्रमण के अन्त को प्राप्त नहीं कर पाया है.
15. तो फिर प्रश्न उठता है कि आपके निज के कल्याण के लिए आज आपका वर्तमान का साक्षात और प्रत्यक्ष सद्गुरु कौन है?
16. हे प्रभो, आपको सच्चे देव और सच्चे शास्त्र तो अनंत बार मिले हैं और अभी

भी उपस्थित ही हैं, लेकिन आज अगर आपको अपना कल्याण करना है तो आपको अभी ही सच्चे देव-शास्त्र के साथ ही साक्षात और प्रत्यक्ष सद्गुरु को भी खोजना ही होगा, तभी आप अपने निज-चेतन स्वरूप को पा सकते हैं, अन्यथा नहीं.

17. परम श्रध्देय राजचन्द्रजी समझाते हैं कि सतपुरूष का योग होने के पश्चात् आत्म-ज्ञान कुछ भी दुर्लभ नहीं है.

18. प्रत्यक्ष ज्ञानी सद्गुरु को जो यथायोग्य रूप से जानता है, वह ज्ञानी हो जाता है, क्रमश: ज्ञानी हो जाता है।

19. अतः श्रीमदजी के अनुसार अन्य कुछ मत शोध, मात्र एक सतपुरूष को ही शोध (पहिचान) और उसके चरणों में सर्वभाव समर्पण करके वर्त. फिर मोक्ष की प्राप्ति न हो, तो मेरे से (मोक्ष) ले जाना.

20. अतः आगम शास्त्रों (परोक्ष ज्ञानी) से दिशा लेकर प्रत्यक्ष ज्ञानी की खोज करो;

क्योकि जो साक्षात प्रत्यक्ष ज्ञानी को पहचानता है, वह खुद भी ज्ञानी बन जाता है.
21. श्रीमदजी ने कहा भी है -
प्रत्यक्ष सद्गुरू सम नहीं, परोक्ष जिन उपकार.
एवो लक्ष्य थया विना, उगे न आत्म विचार
परोक्ष में अगर जिन भगवान भी हो, तो भी वे प्रत्यक्ष सद्गुरु के समान उपकारी नहीं हैं, क्योकि प्रत्यक्ष सद्गुरु के बिना आत्म विचार ही उत्पन्न नहीं होते हैं.
22. सच्चे सद्गुरु के आश्रय के बल से जीव का अगर इस भव में कार्य न हो पाए और आयु का अंत हो जाए, तो जो सद्गुरु के द्वारा दिए संस्कार रहते हैं, उसके बल से जीव अपना कार्य अगले जन्म में अवश्य कर लेता है.
23. हमारे समस्त तीर्थंकर, समस्त हो चुके ज्ञानी तो जंगल के मार्ग में भटक रहे जीव के लिए ध्रुव तारे या दिशा सूचक यंत्र की तरह हैं. उनसे दिशा तो मिलती है, लेकिन दशा नहीं सुधरती है. आपकी दशा तो प्रत्यक्ष ज्ञानी के हाथ में हाथ देने से ही सुधरेगी.
24. हे चैतन्य प्रभो, देव और शास्त्र तो आपको अनंत बार मिले हैं, लेकिन फिर भी इस संसार का अंत नहीं हुआ है. अतः अगर आपको इस संसार को नष्ट करना है, तो प्रत्यक्ष सदगुरू की तीसरी भुजा का सहारा लेकर इस संसार रुपी कर्मो की अग्नि को घेर कर त्रिभुज में कैद कर इस संसार को हमेशा के लिए नष्ट कर अपना शाश्वत कल्याण कर लें.

40. केवली भगवन्त तो अभी ही सभी भव्य जीवो को अपने पास देख रहे हैं

हे चैतन्य चमत्कार प्रभो,
1. हमारी आगे होने वाली अनंत काल की सभी अनंतानंत पर्यायों को केवली भगवंत तो अभी ही देख रहे हैं
2. हमारी सभी पर्याये तो वे जैसी हैं, वैसी ही साफ़ प्रत्यक्षवत अभी ही देख रहे हैं
3. अहो, उनके द्वारा देखी हर पर्याय सत ही होती है

4. अतः उसे आप कुछ भी मानो, वह तो शुद्ध ही कहलाती है.
5. इसलिए अगर आप भी खुद को भव्य मानते हैं,

6. तो अनंत सिद्ध भगवंत तो अभी ही आपको मोक्ष में अपने पास विराजित रूप में भी देख रहे हैं.
7. वे यह भी देख रहे हैं कि अब आप आपके संसार काल से अनंत गुना ज्यादा समय तक उनके साथ ही विराजित रहेंगे.
8. इस तरह आपकी आज तक हुई सभी संसार की पर्यायों से भी अनंत गुना ज्यादा तो आपकी सिर्फ एक केवलज्ञान की पर्याय ही हैं.
9. वो जो भी देखते हैं, वह प्रत्यक्षवत ही देखते हैं.

10. अतः अब आप भी मान लो कि अभी भी आप उनके ही पास बैठे हैं और अनंत काल तक विराजित ही रहेंगे.
11. बस इस बात को सोच-सोच कर ही मेरा मन अत्यंत प्रफुल्लित हो उठता है.

41. अपने विलक्षण चैतन्य स्वरूप को हृदयंगम करें

अनंत केवली भगवान देख रहे हैं कि -

1. यह जीवात्मा अनादिकाल से अपने चैतन्य-स्वरूप को भूलकर
2. अमावस्या की घनघोर काली अंधियारी रात रूपी इस द्रश्यमान जड़ संसार में पड़ा हुआ है.
3. अत्यंत तीक्ष्ण मोह रूपी मदिरा का सेवन किया होने के कारण
4. इसे स्वप्नवत अवस्था में यह संसार अत्यंत प्रिय लग रहा है।
5. अपने निज चैतन्य-स्वरूप को भूलकर पर-पदार्थों को अपना मान रहा है,
6. संसार के समस्त जड़ पदार्थों को चेतन मानकर उसका आलिंगन कर रहा है,

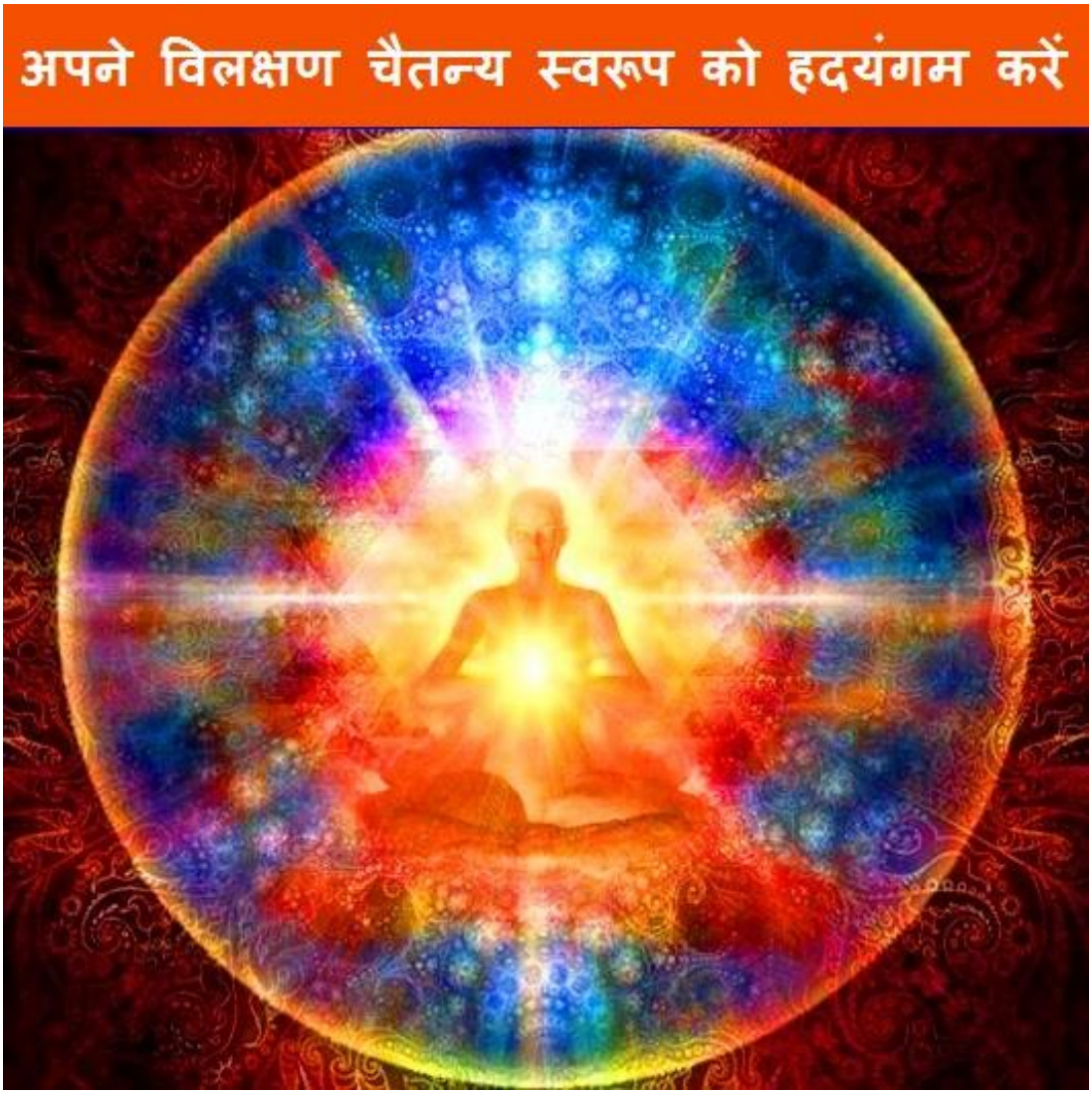

7. उन्हें अंगीकार कर रहा है।

8. हे प्रभो, अभी आप भी इस संसार की वास्तविकता को नही पहचान रहे हो।

9. आपको पांच इन्द्रिय और मन द्वारा प्रदर्शित यह संसार ही सच्चा लग रहा है।

10. इसी में आप अनुकूल और प्रतिकूल पदार्थो की कल्पना कर सुख-दुख का वेदन कर रहे हो।

11. कदाचित आपके महान पुण्योदय से श्री सदगुरू आपको इस जगत की सच्चाई को समझा रहे हैं.

12. हे प्रभो, सदाकाल रहने वाला सच्चा सुख आपके आत्मदेव में ही है,

13. लेकिन अभी आप भ्रम वश यह मान रहे हो कि जैसा सुख वर्तमान में कभी-

कभी आपको मिल रहा है,

14. उसी जाति का ही कोई उत्कृष्ट सुख आपके आत्मदेव में होगा।

15. तब आप ऐसे सुख दायक चैतन्यदेव को पाने की कामना, इच्छा करने लगते हो,

16. किंतु जिस तरह वंध्या के पुत्र की शादी असंभव है,

17. उसी तरह आपकी भी इसी तरह की खोटी मिथ्या मान्यता होने के कारण

18. आपको आपके आत्मदेव की प्राप्ति आज तक असंभव हो रही है।

19. अब आज इस भव में सद्गुरु अत्यन्त करुणावश आपको समझा रहे हैं कि

20. हे प्रभो, शब्दों में तो आत्मा का स्वरूप आपने अनंत बार भाया है कि आप -

21. सहजानंदी शुद्ध स्वरूपी हो,

22. अनादि निधन हो,

23. चैतन्यघन हो,

24. परमज्योति-स्वरूप हो,

25. त्रिलोकपति हो,

26. अनंत शक्तिपुंज हो,

27. अनंत गुणाधिपति हो,

28. साक्षीभाव से विचरण करने वाले हो,

29. अदभुत अलौकिक हो,

30. परमपिता परमेश्वर हो,

31. भगवान-आत्मा हो,

32. चैतन्य परमात्मा हो,

33. किंतु ऐसी भावना भाते हुए भी

34. अपने स्वयं के चैतन्यदेव को स्वीकार करने से आपको कौन रोक रहा है?

35. हे प्रभो, ऐसे अपने चैतन्य स्वभाव को पहचानकर

36. अब आपको बस इस खुद के विलक्षण स्वरूप को हृदयंगम कर

37. इसी में जम जाना चाहिये,

38. रम जाना चाहिये,

39. समां जाना चाहिये;

40. तभी आपका शाश्वत, निर्मल, अक्षय सुख का प्रवाह संभव हो सकता है।

42. मुक्तिपथ का पथिक

हे चैतन्य प्रभो, आपके अपने खुद के -

1. आत्मा के मार्ग को,
2. सत्य के मार्ग को,
3. कल्याण के मार्ग को
4. धर्म के मार्ग को,

पाने के लिये इस संसार में कोई बहुत मेहनत नहीं करनी पड़ती है।

बस द्रष्टि को समस्त संसार से समेटकर स्वमुखी करना पड़ता है।

इसके लिये आप कहीं पर भी खड़े होओ;

1. चाहे देव गति में होओ,
2. मनुष्य गति में होओ
3. तिर्यंच गति में होओ
4. नरक गति में होओ,

बस अपनी द्रष्टि की दिशा बदलकर उसे आत्ममुखी कर लो।

फिर तो हर जीव की अपनी-अपनी सामर्थ है;

मुक्तिपथ पर कोई जीव -

1. पैदल चलता है,

2. कोई बैलगाड़ी में,

3. कोई मोटरकार में,

4. कोई हवाईजहाज से

5. भरत चक्रवर्ती सरीखे जीव अल्प समय में राकेट की भांति

गमन कर अपने मोक्ष महल में जाकर विराजते हैं।

अत: समस्त विकल्पों का त्याग करके,

अपने आप की रूचि करके चलना शुरू कर दें.
बस फिर आपका कल्याण निश्चित ही हो जायेगा.

43. आत्म-दर्पण स्वच्छ, निर्मल, शुद्ध ही है

हे चैतन्यदेव, अनादिकाल से प्रत्येक प्राणी अपनी अज्ञानता से,
अपने जड़पने से,
अपने अनन्तभवों का खुद ही नाश कर रहा है.
फिर भी दूसरों को हीन मानकर,
उन्हें उपदेश देकर समझाने की कोशिश कर रहा है कि
मेरी बात सही है और आपकी गलती यह है.

अतः अब सभी लोगो को इस जन्म में थोड़ा यह भी विचार करना चाहिये कि -

1. हम कौन हैं?
2. हम कहां से आये हैं?
3. कहां पर हमको जाना है?
4. हमारा स्वरूप कैसा है?
5. हमको अपने आपको कैसा मानना है,
6. हमको अपने आपको कैसे पहिचानना है?
7. क्या हम त्रिलोकपति हैं?
8. क्या हम चैतन्य परमात्मा हैं?

9. क्या परमात्मा को कोई रोक सकता है?
10. अगर आप अपने आप को परमेश्वर मानते हो,
11. तो फिर आपको अपने आप को पाने से कौन रोक रहा है?
12. जिस तरह किसी भी दर्पण की स्वच्छता का पैमाना
13. हम उसमें झलकते हुये पदार्थो की स्पष्टता को ही मानते हैं,
14. उसी तरह वास्तव में यह जो कर्मो की प्रतिच्छाया या विकार आपको दिख रहा है,
15. वह वास्तव में आपकी विकारी पर्याय की अशुद्धता न होकर,
16. आपके ही आत्म-दर्पण की स्वच्छता, निर्मलता, शुद्धता को ही सिद्ध करता है
17. क्योकि अगर आपका दर्पण शुद्ध होगा, तभी तो अच्छी और बुरी सभी तरह की वस्तुएँ उसमे स्पष्ट दिखेंगी.
18. इस बात को समझने और मानने से आपका भी निश्चित ही कल्याण होकर अक्षय अनंत सुख मिलेगा.

44. ईश्वर बनने का मार्ग

परमपूज्य आचार्यश्री पद्मनंदी मुनि एकत्वसप्तति गाथा 18,19 में अत्यंत करुणा पूर्वक समझाते हैं कि जो भी भव्य प्राणी अपने आत्मा को -

1. अजन्मा,
2. एक,
3. अकेला,
4. परम पदार्थ,

5. शांत स्वरुप,
6. सर्व रागादि उपाधि से रहित,
7. आत्मा के द्वारा खुद को जानकार आत्मा में ही स्थिर रहता है;
8. वही मोक्ष मार्ग में चलने वाला है,
9. वही आनंद स्वरूपी अमृत को भोगता है,
10. वही पूज्यनीय है,
11. वही जगत का स्वामी है,

12. वही प्रभु है,
13. वही ईश्वर है.

45. पर्याय या अवस्था में फेरफार असंभव है

भरत चक्रवर्ती न चाहते हुए भी बहुत काल तक अविरत सम्यग्द्रष्टि ही रहे थे. वे तो चक्रवर्ती थे, उनकी शक्ति भी बहुत थी और बल भी अतुलनीय था, फिर भी उन्होंने पर्याय में फेरफार नहीं किया. आखिर क्यों?
आदिनाथ भगवान तो चौरासी लाख पूर्व की आयु में से तिरयासी लाख पूर्व की आयु तक अविरत सम्यग्द्रष्टि ही रहे. वे तो तीर्थंकर थे, शक्ति भी अपार थी, बल भी अद्भुत था, फिर भी उन्होंने तिरयासी लाख पूर्व की आयु तक पर्याय में कभी भी फेरफार करने की कोशिश नहीं की. आखिर क्यों?

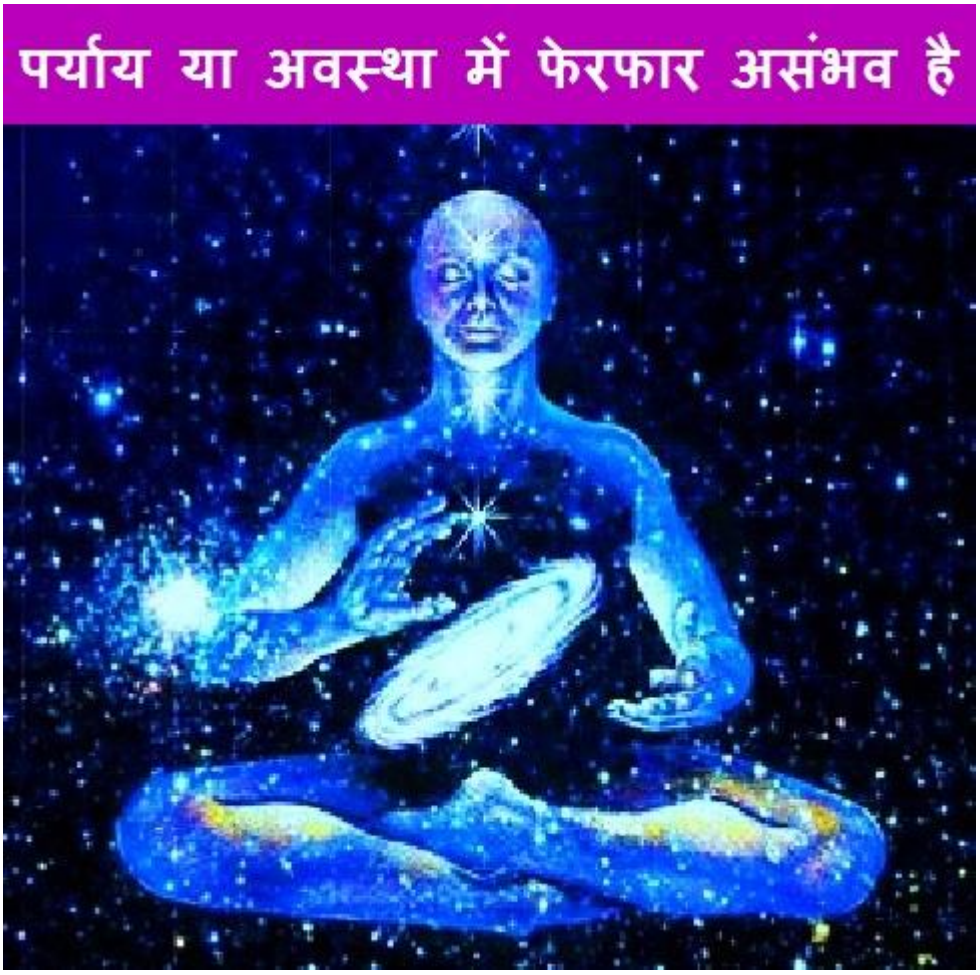

अनादिकाल से आज तक के अनन्त काल में आपने भी चौरासी लाख योनिओं में अनन्त बार जन्म-मरण किया है,
सभी शास्त्र अनन्त बार पढ़े हैं,
फिर भी अगर आपका कल्याण नहीं हुआ है,
तो आखिर इसका कारण क्या हो सकता है?
अतः अब आप भी मान लें कि पर्याय में फेरफार असंभव है,
अब इस संसार में अच्छा क्या हो सकता है?
तथा इस संसार में हमारा किस बात से बुरा हो सकता है?
इसलिए यह संसार अब हमारी द्रष्टि से ओझल हो ही जाना चाहिये.
अतः अब आप भी अपने खुद के कल्याण के लिए एक पल के लिए इस बात पर विचार तो करें.

46. क्या चैतन्य-सम्राट भीख मांग सकता है?

1. हे प्रभो, क्या इस संसार का कोई भी चक्रवर्ती सम्राट किसी भी व्यक्ति से कोई भी वस्तु की भीख मांग सकता है?

2. अरे, वह तो अपने छः खंड के विशाल राज्य के अनुपम वैभव और 96 हजार रानियों के साथ आमोद-प्रमोद में ही निमग्न रहता है.

3. इसी तरह आपका चैतन्य-सम्राट भी कभी भी भीख नहीं मांग सकता है और अपने चैतन्यदेव के वैभव एवं अद्भुत गुणों से युक्त अपनी अनंत जीवन-संगनियों में ही निमग्न रहता है.

4. अहो, इस तरह की चैतन्यदेव से परिणमित या ओत-प्रोत भावना हो, तो वह भावना फलती ही है।

5. राग-द्वेष में से जो भावना उदित नहीं हुई हो, ऐसी यथार्थ भावना ही सच्चा फल देती है।

6. यदि यह निर्मल भावना नहीं फले, तो इस तीन लोक को ही शून्य होना पड़ेगा या फिर इस चैतन्य द्रव्य का ही नाश हो जायेगा।

7. परन्तु ऐसा कभी भी न हुआ है और न ही होगा, क्योकि चैतन्य के परिणाम के साथ प्रकृति भी बंधी हुई होती है,

8. ऐसा ही वस्तु का स्वभाव होता है.

9. यह अनन्त तीर्थंकरों की कही हुई बात है.

10. हे प्रभो, अब आप भी इस बात को स्वीकार कर लो कि आप ही वह चैतन्य सम्राट हो.

11. तथा अब आप किसी से कोई भी वस्तु की भीख माँगना बंद कर दें.

12. बस फिर आपका भी अक्षय अनंत सुख का प्रवाह शुरू हो जाएगा.

47. कोई भी जन्म लेने जैसा होता ही नहीं है

1. अहो, परम पूज्य आचार्यों ने तीर्थंकर गोत्र-कर्म को भी विष वृक्ष कहा है. वे समझाते हैं कि -

2. जिस भाव से तीर्थंकर गौत्र बंधता है;

3. वह भाव भी विष है;

4. विष कुम्भ है।

5. तीर्थंकर के अवतार को विष का फल तो तीर्थंकर ही कह सकते है।
6. विष के फल में से विष ही झरता है।
7. अमृत के फल से अमृत झरता है।
8. तीर्थंकर की तो जाति ही भिन्न है।
9. तथापि तीर्थंकर जैसो की यह स्थिति होती है।
10. इस तरह से वास्तव में कोई भी जन्म लेने जैसा होता ही नहीं है।

48. परमाणु के समान हम भी अमर हैं

1. इस संसार में जैसे परमाणु सदाकाल अस्तित्व में रहते हुए अमर होते हैं,
2. वे कभी भी नष्ट नही होते है.

3. तथा वे अपार और विशाल परमाणु शक्ति से संपन्न होते हैं.

4. इसी तरह हम भी अमर ही हैं और कभी भी नष्ट नही हो सकते है, तथा हम भी सर्व शक्तिशाली हैं.

5. तथा जैसे एक परमाणु दूसरे पदार्थ से क्रिया करके अन्य पदार्थ बनाता है

6. इसी तरह हम भी अच्छे-बुरे पदार्थों या वस्तुओं को गृहण या त्याग की क्रिया कर सुख-दुःख पाते है, तथा दूसरा जन्म भी लेते है.

7. तथा जैसे प्रत्येक परमाणु ने इस संसार के हर परमाणु से क्रिया कर सभी तरह के यौगिक बनाएं हैं,

8. इस तरह इस संसार में दिखने वाले सभी प्राणियों से हमने भी राग-द्वेष की क्रिया कर सम्बन्ध बनाएं हैं.

9. अतः आज हमे दिखाई दे रहे ये सभी प्राणी भी किसी न किसी जन्म में हमारे ही निकट के सम्बन्धी या रिश्तेदार रहे हैं.

10. अतः यह सम्पूर्ण शश्य-श्यामला वसुंधरा ही हमारा कुटुंब है.

11. अतः हमें इसमें निवास कर रहे सभी लोगो का भला करना चाहिए, परिणामस्वरुप हमारा भी शरीर, मन और अंतर आत्मा से भला हो सकेगा. तभी आप भी बीमारियों से भी मुक्त होकर स्वस्थ रह सकेंगे.

12. मन में प्यार, स्नेह, अपनापन और भाईचारा होने पर ही मन नीरोगी होता है तथा जिससे सभी लोग हमेशा स्वस्थ ही रहेगे.

13. अतः अब आपको भी दूसरे लोगों के प्रति अपने मन में हो रही कड़वाहट या घृणा को हटाकर उनको भी चैतन्य परमात्मा मानकर उनकी सेवा करनी चाहिए.

14. ऐसा करने से आप भी आप भी अपनी ज्ञान-चेतना से स्वस्थ हो जायेंगे.

15. स्वस्थ आत्मदेव का ही स्वस्थ मन और स्वस्थ शरीर की प्राप्ति संभव है.

16. फिर आप भी अपने परमात्म-स्वरुप को पा सकेंगे.

17. अतः अब आप भी भगवान महावीर के बताये मार्ग पर चलकर -

a) भक्त से भगवान बने और सबको भी भगवान बनने की प्रेरणा दें.

b) पामर से परमात्मा बने और सबको भी परमात्मा बनने की प्रेरणा दें.

c) खुद से खुदा बने और सबको भी खुदा बनने की प्रेरणा दें.

d) अधम से ईश्वर बने और सबको भी ईश्वर बनने की प्रेरणा दें.

18. मेरे इस कथन की वैज्ञानिकता एवं तार्किकता पर मैं हर तरह की चर्चा करने के लिए तैयार हूँ.

49. क्या केवलज्ञान की अनंत पर्यायें आपके द्रव्य में अभी ही विराजित हैं?

हे चैतन्य प्रभो, सभी मनुष्यों, सभी जीवों के अन्दर अनन्तज्ञान नामक एक गुण होता है.

अनन्तज्ञान के समान ही ऐसे महा शक्तिशाली, देदीप्यवान अनन्त गुण आपके

अन्दर भी भरे पड़े हैं.
अनंतज्ञान गुण की एक पर्याय केवलज्ञान नामक होती है.
ऐसे केवलज्ञान की अनंत पर्यायें भी हर भव्य जीव के अंदर अभी भी भरी हुई हैं.
अतः केवलज्ञान की अनंत पर्यायें आपके द्रव्य में अभी भी विराजित हैं.
शास्त्रों के अनुसार हर केवलज्ञान की पर्याय में तीन लोक के समस्त जीवों की और समस्त पदार्थों और द्रव्यों की त्रिकाल की समस्त पर्यायें समायी हुई रहती हैं.
इसीलिए शास्त्रों में कहा गया है कि आपके केवलज्ञान द्वारा समस्त संसार को पी लिया गया है.
अब जो यह संसार आपको दिखाई दे रहा है,
वह आपके ज्ञान का ही फैलाव है.
अब आपके केवलज्ञान में हर जीव की अनंत काल बाद भी आने वाली पर्यायें माला के मोती की तरह अनंत तीर्थंकर भगवंतों को क्रमशः एक के बाद एक क्रमबद्ध दिखाई दे रही हैं.

इससे यह सिद्ध होता है कि प्रत्येक द्रव्य का परिणमन एकदम स्वाधीन है,
कोई किसी के आधीन नहीं और प्रत्येक जीव द्रव्य परमात्मा है,
फिर एक परमात्मा दूसरे परमात्मा के आधीन कैसे रहेगा?
जिन महावीर भगवान का हम रोज वन्दन करते हैं,
उन्होंने ही हमारे कल्याण के लिए यह वस्तुस्वरूप समझाया है.
अब अगर आप भी यह बात स्वीकार करते हैं, तो आपके राग-द्वेष कम होंगे,
तब आप भी लोक कल्याण और वीतरागता की ओर अपना कदम बढ़ायेंगे.
तथा शीघ्र ही आपका भी मोक्ष महल में अनंत काल के किये अनंत सुख में रमण होगा.
जो जीव नित्य निगोद से आज तक निकले ही नहीं हैं और कभी भी निकलेंगे ही नहीं, उन्हें भी भगवान महावीर परमात्मा बताते हैं, तो फिर हम कौन होते हैं जो

किसी को भी गलत बतायें?

वास्तव में तो जब हम किसी की ओर एक ऊँगली उठाते हैं, तब तीन ऊँगली हमारी ओर ही उठी रहती हैं. भटके हुआ जीव तो वास्तव में तो हमारी करुणा के ही पात्र हैं.

मनुष्य भव पाकर भी अगर वे अपना कल्याण नहीं कर पा रहे हैं, तो हमें उनके भले का मार्ग बताने की कोशिश करना चाहिए और अगर वे जैन हैं तो हमें उन पर विशेष करुणा होना चाहिए कि पता नहीं, अब कितने काल बाद उन्हें पुनः यह मनुष्य जन्म और जैन कुल मिलेगा?

यह जानकर अगर हम अपना भला कर लेते हैं, तभी तो हम दूसरों को जिनवर प्रणीत सच्चा मार्ग बता पाएंगे.

अतः इस आत्मधर्म या जैन धर्म को अंतरमन से स्वीकार करने की ओर तथा भगवान महावीर के सच्चे अनुयायी बनने की तरफ यह पहला कदम आपको उठाना ही चाहिए.

50. सांसारिक दलदल से बचें

1. हे प्रभो, □□□□ □□ □□□□ □□□ □□□□□ का दलदल होता □□,
2. □□□□ □□ □□□ □□□ □□□□ हैं.
3. □□ □□ □□□, □□□□ □□□ □□□ □□□□□ □□□□□ व्यक्ति □□□□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□□गा,

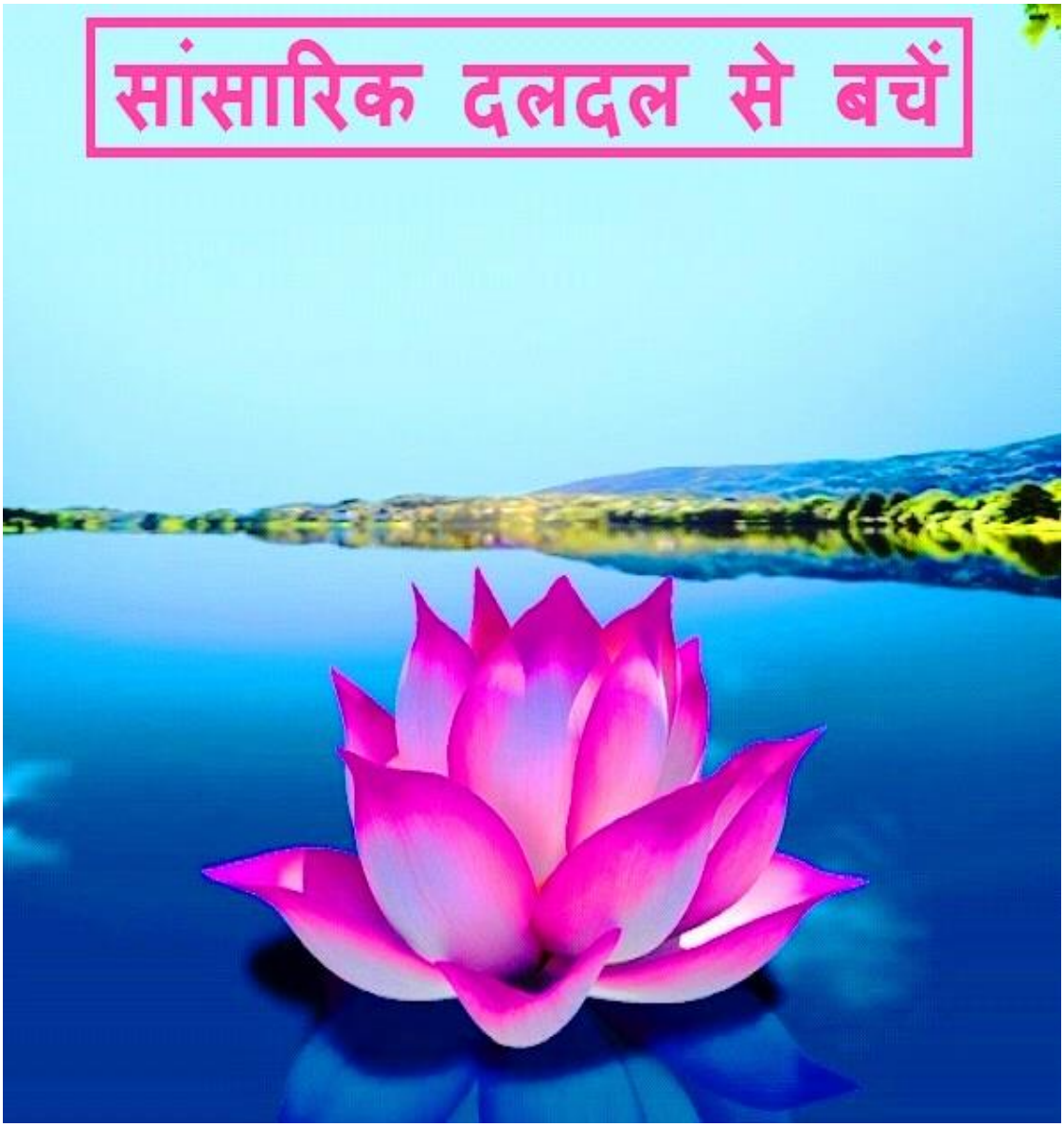

4. □□ □□ □□□□ □□ □□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□ □□□□□□,
5. □□ उ□ □□□□ □□□ □□□□□ □□□□□□
6. वह □□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□□ □□□□ □□□□□,
7. □□□□ □□ □□ □□□□ □□□ □□□□□ □□□ □□□□□□
8. □□□ □□ □□□ □□□ □□ □□□□□ □□
9. □□ □□□□ □□□ □□□□ □□□ □□□□□ □□□□ □□ □□ □□□□ कर ले□□□

10. □□ □□□□□□□□ □□□ □□ □□□□ □□□ □□□□□ □□□□ □□□ □□ □□□ □□ तरह ही होते हैं.

11. □□ □□□□□ □□□ आपको □□ भी □□□ □□□ □□□ हैं,

12. □□□□□ आप □□□ □□□□ हो और जिन□□ □□□□ की आप □□□□□□ □□□□ हो,

13. □□□□ □□□□□□ □□□□ होता □□,

14. □□ □□ जरा आप □□□ □□.

15. □□□ आप □□ □□□□□ □□□□ □□□□ □□□ □□□□□ □□□ □□□□ हो और

16. □□ □□□□□□□□ □□□ □□ □□□□ □□,

17. □□ □□□ □□ □□□ □□ □□□□□□ □□ आगे आप □□□□□ □□ □□□□□□ □□शि□ □□□□ हो,

18. □□□□ □□ □□□□ □□□ □□ □□□□□□ □□□□□ □□□ □□□□ हो।

19. □□□ □□ □□□ □□□ □□ □□□ □□ □□ जब आप □□ □□□□ □□□ □□□□ □□□ □□□ □□□□ हो।

20. □□ □□□□ □□ □□□□□□ □□ आपको □□□□□ □□□□□ □□□□ □□□□□ □□

21. तब आप □□□ □□ □□□□-□□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□ हो.

22. □□ □□□□□ □□ □□ □□□□□□ भव आप को □□□□ □□, □□ □□□□□□□□ □□□

23. □□□□ □□□□□□□□ □□□ □□□□ □□□ □□ □□□□□□□ □□□□ □□ □□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□ □□□ □□ □□□□□,

24. □□□□□□ निगोद और तिर्यंच के जन्मों के □□□□ □□□ □□□□-बहुत मुश्किल □ □□□□□□□

51. अधोगति के निकृष्ट भवों से बचें

हे चैतन्य प्रभो, क्या आप जानते हैं कि अनंत केवली भगवंत आपको अभी कैसा देख रहे हैं,

वह तो अभी भी देख रहे हैं कि आप अपने चैतन्य-महल में ही रह रहे हो.

लेकिन स्वप्नवत अवस्था में रहते हुए आप मान रहे हो कि आप संसार के भोग-विलास में रमण कर रहे हो.

इस तरह अपने चैतन्य-महल में रहते हुए आप बहुत ज्यादा विचित्र व्यवहार कर रहे हो.

क्योकि अपने पड़ोस में रह रहे इस संसार के सभी जड़ कर्मों को

आप अपनी अशुद्धि या गंदगी मानकर व्याकुल हो रहे हो

फिर खुद ही उन्हें दूर या नष्ट करने की कोशिश कर रहे हो.

लेकिन अनादिकाल से आज तक के आपके स्वयं के इतिहास में आपको कभी भी इन्हें साफ़ करने में सफलता नहीं मिली है.
क्योकि जो दाग आप में हैं ही नहीं,
उन्हें आप दूर कैसे कर सकते हो?
श्री सतगुरू अत्यंत करुणा करके आपकी ज्ञान-खिड़की बार-बार साफ़ करके आपको बता रहे हैं कि आप तो हमेशा से ही –

1. स्वच्छ हो,
2. निर्मल हो,
3. अविकारी हो,
4. शुद्ध हो,
5. ज्ञान-पुंज हो,
6. चैतन्य हो,
7. परमात्मा हो.
8. क्या कोई भी परमात्मा कभी भी अशुद्ध हो सकता है?
9. फिर भी आप इन जड़ कर्मों को
10. अपनी अशुद्धि या गंदगी मानकर व्याकुल हो रहे हो,
11. जबकि वे तो आप में हैं ही नहीं.
12. अतः हे प्रभो, अब तो जड़-कर्मों की गंदगी को अपनी मानना छोड़ो.
13. फिर आपका शाश्वत-कल्याण निश्चित ही होगा.
14. हे प्रभो, आप तो अनादिकाल से
15. अपनी मूढतावश अपने जड़पने से
16. अपनी अनन्त उत्कृष्ट मोक्ष पर्यायों का नाश खुद ही कर रहे हो.
17. अब अगर आपने इस जन्म में अपना कल्याण कर लिया,
18. तो फिर आप भी आगामी होने वाले इन अधोगति के निकृष्ट भवों से बच कर अक्षय अनंत सुख के सरोवर में निमग्न हो जायेंगे.

डॉ. स्वतंत्र जैन के प्रति
लोगो के ह्रदयोदगार
तथा स्नेह पूरित भावाभिव्यक्ति

Kripashankar Pandey

डॉ॰साहब ! एक वीतराग सन्यासी जैसा गहन आध्यात्मिक चिन्तन और एक महान कर्मयोगी की तरह नरनारायण की निस्वार्थ सेवा..
आपके व्यक्तित्व के इन दो पहलुओं ने मेरी दृष्टि में आपको एक सच्चा महात्मा घोषित किया है..
आपके चरणों में मेरे प्रणाम निवेदित हैं..!
हार्दिक कृतज्ञता..! अहोभाव..!!
मेरी शुभकामना है कि आप ऐसे ही गीतोक्त कर्मयोग के मार्ग पर चलकर स्वरूपस्थ हों ...!!
ॐ.....!

Mangilal Chandan
श्रीमद् जी तो दूसरे महावीर थे.
इसमें कोई संका नहीं, कोई सनदेह ही नहीं !
बहुत ही सुन्दर लेख लिख कर आपने लोगों को जागृत किया हैं

धन्य हैं आप Dr स्वतंत्र जी
आपकी विचार श्रेणि अति उत्तम हैं
आपकी विचार धारा आत्मा से परमात्मा तक पहुचाने में मार्ग दर्शक हैं
आदरणीय पंडितजी श्री फुलचन्दजी शास्त्रीजी की तरह
आप के भी उच्चविचार हैं
खूब खूब अनुमोदना

Poczta kwiatowa bydgoszcz
June 1, 2017 at 1:44 pm

Undeniably believe that which you said.
Your favorite justification appeared to be on the net
The simplest thing to be aware of.
I say to you,
I definitely get irked
While people think about worries
That they plainly don't know about.
You managed to hit the nail upon the top
And defined out the whole thing without having side effect,
People can take a signal.
Will likely be back to get more.
Thanks

Manu Bharradwaj
साधुवाद महोदय !
आपकी हर पोस्ट मानव उत्थान की है।
ईश्वर सदा आपके साथ रहें।

Anurag Goel

आपका कार्य बहुत प्रशंसनीय और अदभुत है और हम सभी को सामाजिक सरोकार की प्रेरणा भी देता है
आपकी लगभग सभी पोस्ट मैं share करता हूँ और
यथा सम्भव उसका print अपने institute में भी लगाता रहता हूँ
आप इसके लिये बधाई के पात्र हैं
कृपया pdf मेरे id पर भी भेजने की कृपा करें जिससे ज़रूरतमंदों को उपलब्ध कराई जा सके
धन्यवाद

Abhishek Jain

5 star*

अद्भुत है डॉ० साहब,

आपका यह एक महान कर्मयोगी की तरह नर-नारायण की निस्वार्थ सेवा

तथा एक वीतरागी सन्यासी जैसा गहन आध्यात्मिक चिन्तन.

Sulochana Dagli

Dr.Sahib
Paranam
aapko hardik badhai
aap ek Adhayatam jagat ke ek Tejesvi Prakash Stambh hai
aapke nishara me hum sab prakashsit ho rahe hai
aapka yai karya hum sabko adhayatam punj se bandhe rakh raha hai
aap hamare aadarsh hai

Mangilal Chandan

बहुत ही सुन्दर लेख हैं

धन्य हैं आप

जैन धर्म के रत्नों में आप भी एक

रत्न हैं ....

डॉक्टर स्वतंत्र जैन

प्रणाम सा.

Poczta kwiatowa radom

May 31, 2017 at 5:22 pm
If some one wishes expert view concerning running a blog afterward
I propose him/her to pay a quick visit this web site,
Keep up the nice work.

Swami Roopam

बहुत ही हृदयगामी

प्राञ्जल

शिक्षायुक्त

सर्वकल्याणी

बौध प्रदाता

और क्या क्या नही ?

वाह यही है सत्य ।

इसीलिए राजा लोग नंगें ही पाँव चल कर महात्माओं का सानिंध्य पाने जाया करते थे।

Dinesh Chandra Shah

डॉ.साहब, आप पञ्च परमेष्ठी का स्मरण करते हैं,
ज्ञायक में रमण करते हैं,
मिथ्यात्व का वमन करते हैं,
इसलिए मै आपको नमन करता हूँ ।

Poczta kwiatowa 24h

May 31, 2017 at 4:59 pm
I enjoy the efforts you have put in this,
Appreciate it for all the
Great posts.

Rana Thakur

Sir aapki post or jankari ko Mene bahut se ese logo ko batya he Jo doctor ki fees na de pane ke Karan bacho ko na dikha pate the.

Nimonia jesi Kai binaries sahi ho gai he sir.
Sabse pehle to Mene hi apne bête ko diya tha treatment.
Bilkul sahi ho gya aapka bhut bhut aabhar mere or mere jese logo ka.
Kal ek bujurg ko khasi ki dava lakar di
Badi Kush thi aaj mili.
Boli beta meri khasi sahi ho gai
Pese dene lagi
Me bola Amaa ji meri to bête ko laya tha, vo sahi ho gya
Ab aapke kaam aa gai
Aap sirf dua de.

Ye hamre group ki dava he.

Maa Tara —
5 star*
बहुत ही सुन्दर एवं अनुकरणीय विषय जिसे अपनाकर स्वस्थ शरीर रखा जा सकता है।
डॉ.साहब का अनेक धन्यवाद् जो लोगों को सही मार्ग दर्शन कर रहे हैं।
जय माँ तारा !

Kamal Kumar Johari

बार बार मन आपको प्रणाम करता है और यह आवाज आती है कि
इस युग मे आप महान पुरुष है
इसलिए पुनः प्रणाम

Onkar Singh Rana

5 star*

Bahut khoob Ji,
kaya baat hai Ji,
Sir main bhi thoda bahut Ayurveda ka gyan rakhta hoon,
aur logo ko batata rehta hoon Ji,
aapki post padh kar maza aa gaya Ji,
may Sahib Ji bless you.

Sumer Jat Muktiya –

5 star*

आप समाज कल्याण के लिए जो कार्य करते है उन के लिए आप को बहुत बहुत साधुवाद

CP Gupta —

5 star*

Aap bahoot achha kary Manav Sewa ke liye kar rahey h,bahoot kam log kartey h, sarahniy kary ke liye many many thanks

Pushpendra Naik

मैंने 1973 में आयुर्वेद एवं एलौपैथी से इंटीग्रेटेड स्नातक परीक्षा उत्तीर्ण की है, तत्कालीन वरिष्ठ प्राकृतिक चिकित्सक डा० खुशीराम शर्मा दिलकश के मार्गदर्शन में 1975 में उ०प्र० प्राकृतिक चिकित्सा परिषद से प्रशिक्षण प्राप्त किया है
अपने 40 वर्ष से भी अथिक चिकित्सा व्यवसाय के अनुभव के आथार पर मैं निःसंदेह कह सकता हूँ कि डा० स्वतंत्र जैन के कथन से पूर्ण सहमत हूँ
एंजियोप्लास्टी या बाईपास सर्जरी के अपने लाभ हैं परन्तु जहाँ तक मैं समझ रहा हूँ कि डा० जैन गैर जरूरत सर्जरी के प्रति जनचेतना जगाने का सराहनीय कार्य कर रहे हैं

Tikendra Sahu —

5 star*

Bahut prabhawit hu aapki sewa bhawna se.....sahej k rakhane yogya jankariya aapke dwara d jati hai.bahut km log aapke jaise hote hai.pranam

Vasudeo Chandwani

मेरे गूरुजी पूज्यनीय श्री तरूणसागर जी महाराज आप ही की तरह
ज्ञान की गंगा प्रवाहित करते रहते है

Mamta Jaindaga
Aap Bhagwan ke avatar me is dharti pr aaye ho.....
my first God is Mahavir n second is U Sir

Sudhir K Srivastava
Priya Dr. Jain, saprem vande.
Aapne "SWASTH RAHO SWASTH KARO" post mere
e-mail par bheja, maine ise padha.
Mai aapko kin shabdo me dhanyavad dun
samajh nahi aa raha,
phir bhi aap mera hardik dhanyavad sweekar karen.
Mera aapse vinamra nivedan hai ki aap apne anubhoot prayogon ki jankari mere mail par bhejne ki kripa karte rahe,
aapka sada abhari rahunga.

Manu Bharradwaj
धन्यवाद इंजिनियर+डॉ. जैन
उस सब के लिए जो आपने मुझे व मेरे द्वारा भेजे emails पर भेजा।
साथ ही उस सब के लिए जो आप मानवता के लिए कर रहे हैं।
ईश्वर आपको और शक्ति तथा दीर्घायु प्रदान करे।
अस्तु। पुन:धन्यवाद !

Vikas Shivhare
Respected sir aapne bahut acchi jankari di thank you sir
Adv. Sanjeev Abrol
Cell 9855200503
Thanks doctor sahib for this wonderful book.
I am very thankful to u.
I will forward this book to all of my friends.
Regards

Virendra Sharma
अत्यन्त सेवामूलक एवं गरिमामय कार्य।
इस महान कार्य की जितनी प्रशंशा की जाए, कम ही होगा।
पराशक्ति प्रेरित कार्य हेतु माँ भगवती सदैव सहयोग करें एवं आप सपरिवार पर उनकी कृपा बनी रहे।
आपका कल्याण हो।

Cp Jain
Aapka prayas bahot he sarahniya he.

Dharm ke kshetra me bhi aur swasthya ke kshetra me bhi
Bahot he achha lagta he aapke articles padhkar.

Sumer Jat
Muktiya — 5 star
आप समाज कल्याण के लिए जो कार्य करते है,
उन के लिए आप को बहुत बहुत साधुवाद

Sanjiv Kumar Swarnkar
Muktiya — 5 star
This is a very useful and good healts information

Deepak Ladha —
5 star⁎
Very good service provided by you thanks for these types of service

NandKishore Darak
डॉक्टर सां आपके लेख तो स्वास्थ्य के लिए क्रान्तिकारी है

Davinder Dhillon —
5 star⁎
Very nice very much good tips
Very important & beneficial

Vasudeo Chandwani
भाईजी आप की कोई पोस्ट गलत हो नहीं सकती ।
हर पोस्ट से ज्ञान गंगा का अमृत मिलता है ।

Anand Singh
Dr swatantar jain saab ki jai ho
Bhart ka veer real hero

मनोरंजन पाल आर्य
डॉ. साहब प्रणाम
आपका एक पीडीएफ है मेरे पास स्वस्थ रहे स्वस्थ करे.
इस पीडीएफ के द्वारा मैंने मैंने बहुतो को उपचार बताया जिसे बहुत लाभ भी हुआ
जिसमे से ओरिसा के एक भाई का एपेंडिस ठीक किया
पीलिया ठीक किया !
क्या आपके पास और दूसरा भी कोई पीडीएफ फ़ाइल है

क्योंकि मुझे एक भी फलेरिया के बारे में पूछा था
मैंने उसे उपचार तो बता दिया
क्योंकि एक बार आपका पोस्ट आया हुआ था फेसबुक में वही बताया है
क्या कोई और पीडीएफ है
आपके पास जिसमे इस भी बीमारी के उपचार बताया हुआ हो
क्योंकि उस पीडीएफ में फलेरिया का उपचार नही है
धन्यवाद

स्नेहलता जैन —
5 star*
आपकी जन कल्याण और विश्व सुख, शांति और समृद्धि की भावना अत्यंत सराहनीय है.

Dharmendra Singh Parihar —
5 star*
बहुत ही सुन्दर प्रयास ! ईश्वर आपको सफलता प्रदान करे |

Dinesh Chandra Shah
Aap adhyatma jagat ke Dedipyaman nakshatra ho

Raju Raju —
5 star*
Guru ji aap mahan hi ni swarth aap jan sewa kurtay hi aap ko mera koti koti parnaam

Divya Jain —
5 star*
Dr sir, lakho logo ki duaye apke sath hai.
Bhagwan lambi umar de apko

Sumit Motwani
Sir me apke diye upchar fb pr dekhta hu.
apko naman jo aap sub ka sochte hai.

Nandan Mahalwal
Shadhey Dr Muktiya Ji.
SAMAJ. KO DI JANE WALI SEWA KE LIYE
HAM AAP KAA " SAMMAN " KARTE HAIN.
DHANYAWAD. BHAIYA JI

Rohit Singh

Dr sir parnam sir mai apki batai dwai 2 moth she kha RHA hu colistrol kam krne ke liye muje bhut fayda ho RHA h lekin sir mane blood test karwaya h avi to baki sab thik h lek in sir mera thaioraid tsh 6.16 a RHA h Jo Jada h plzz sir muje thairoid normal karne keep liye dwai btaye sir dil se dua deta hu apko ap sakchat bhagwan ho

Pushpa Sethi Maggu
Thanks for yr great efforts towards the right diection to people in this professional world

Anand Singh
Dr swatantar jain h to hosla buland h thanks

Ashish Bhandari
अंधत्व की पीड़ा।अद्भुत अलौकिक लेख।
हम जैसे अज्ञानियों को राह दिखाने वाला।
आपका अनंत उपकार

Kamalakar Dhabulkar
Koi Magaveer bankar kis roop me janm leta hey aur Dukhiyo ki seva karta h.
Example aapka hi - Din dukhiyo ki anwarat seva hi Dharm

रूद्र नाथ निखिल
प्रिय डॉक्टर साहब नमस्कार
आपकी इस सेवा को देखकर ह्रदय प्रसन्न हो गया है,
आप जैसे डाक्टर बहुत कम मिलते हैं इस धरती पर,
आप जन कल्याण और समाज की जो सेवा कर रहे हैं उसके लिये में ह्रदय से आपका बहुत बहुत स्वागत और धन्यवाद करता हूँ,
मैं महादेव से प्रार्थना करता हूँ की महादेव और धन्वन्तरि आपको यश कीर्ति के साथ उत्तम स्वास्थ्य और दीर्घायु प्रदान करे

Pushpa Maggu
Sir u are truly work for the people & god bless u with good health and longevity

Naresh Nayak
Thanks sirji. aap ka kam kalyug me bhagvan jaisa hai
Aapko or koi mandir jane ki jarurat nahi.

Shantnu Sharma
dr sar lakho logo ki duaye apke sath h bhagwan lambi umar de apko

Kripashankar Pandey
हे महात्मन्..! सादर नमन् और अहोभाव..!
समस्त धर्मों का चरम उद्देश्य अनन्त काल के लिये स्वरूपस्थिति ही है।
जब तक यह देह है इसके लिये सेवा ही परमधर्म है जो आपके आचरण में सुस्पष्ट है। भगवान् महावीर की स्थिरचित्तता मैं भी इसी जीवन में अनुभूत कर सकूँ ;
इस हेतु आप महानुभाव का आशीर्वाद और स्नेह मुझे पुस्तकरूप में प्राप्त हो...
यह मेरे लिये परमसौभाग्य होगा...!!
मेरा पता ह.... डॉ० कृपा शंकर पाण्डेय C/O श्री लाल चन्द्र मिश्र E.W.S. 44 , नीमसराँय कालोनी मुण्डेरा चुंगी, जनपद-इलाहाबाद उत्तर प्रदेश, पिनकोड- 211014

M Azam Siddiqui
Sir aap Jesé ho to sansar me koe Bemar nahe hoga

Sk Pandey
Is jankari ke liye aapko jitna bhi very nice thanks bola jai vah kam hi hai.
Thank~~~~~~~~~~~~~~~~~~s

Jagjeet Jandu
Dear doctor sabh I have downloaded your books and prescribing the medicine to our known free of cost as you proclaimed that we have to make india allopathic free so I am also striving a little in this direction.regards j s jandu

Rajesh Gupta
डॉक्टर साहब आप मानवता की बहुत बड़ी सेवा कर रहे हैं।

Mukesh Singh
Namaste sir..
Aapke dwara di gai jankari kafi upyogi hoti hai aur sabse mahawapurna hai aapki niswarth sewa
Jaha aaj ke date me log ek dusre ke dushman bane hain, jyada se jyada dhan kamane ka swarth hai wahi aapki ye nishwarth sewa prashansniye hai aur is kary me shayad aapke dharm ka bhi mahatwapurna yogdan hai
Aapki post mai gahanta se padhta hu.

Yogesh Arya
डा. सहाब नमस्कार मेरे लिऐ बेहद गर्व की बात है कि आप जैसे महान व्यक्तित्व मेरी मित्र सूची की शोभा बढाऐ हुऐ हैं हर रोज आपकी पोस्ट स्वास्थय की दृष्टि से बेहद महत्व पूर्ण जानकारी से परिपूर्ण होती है मैं आपकी सभी पोस्ट अक्सर पढता हूँ आपसे निवेदन है अपनी अब तक की सभी पोस्ट कृपया मेरे ईमेल पर भेंजने की कृपया करें

Anil Mathur
सराहनीये कदम है आपका... ईश्वर आपको लम्बी आयु दे

Nitin Singhal
I am doing it every day after learning it from you and its very helpful... highly recommended... thanks for all the wonderful info

Mahesh Jaiswal
डां0 साहब सुप्रभात आप को समाज के लिए इन सराहनीय कार्य के लिए धन्यवाद

Gopal Narayan
अति महत्वपूर्ण जनहित कार्य कर रहे हैं ..दिर्घायु

Anand Singh
Jain saab you are real hero of India

Vishal Satija
Dr sir It's nice and a great work for humanity ki ap Bahaut sare facts Bina kisi personal benefit k share karte h. Thanks alot for that.

Cherry McGill
ap manavta ki sew ka bot acha kam kar rhe h

Rohit Singh
Hath jodkar parnam karta hu Dr sir apko logo ka bhala kar rhe h ap lakho duaye milegi apko

Pushpendra Naik
I think that due to essence of my good karmas I have to know about you yesterday by your post on cardiac treatment. I am also an ayurvedic professional, retd. as distt. ayurvedic officer, Lalitpur, U.P. in 2011. Individually I am studying and working about Spiritual Treatment and now interested to work under your guidance.

Hansa Rohit —
5 star⁕
apka prayas achha hai
Aur logo ki duvao se jarur
Aap safal hinge.....
Aur achhe kaam me
Bhagvan bhi sath deta hai
All the best

Vinay Vishwas

Thank you Sir....Thank you very much....I am filled with gratitude for what you are doing for humanity.....thanks a lot..

नरेंदर कुमार भादू

बहुत ही सुंदर विचार हैं चिरंजीवी भव सदा सुखी रहो शुभ प्रभात

Sudhir Rathi

आपके लेखो को पढ़कर सुख मिलता है

Rohit Singh

dr sar ap mahan ho bhagwan apka bhla kre garibo ki lakho duaye apke sath h

Kamal Kumar Johari

sir, i arrang satsang on every sunday and convey ur message to each participants. They are also being benifited. I shall feel obliged if u send me ur book to me

B.k. Chatter

Wah kya khub ati sunder salah rog ko jad se samapt karne ka aachuk nuskha, bahut Bahut aanumodna

Prabhat R. Sharma

Great source of life you provide to all. Well done Sir

M Azam Siddiqui

Sir aap Jesé ho to sansar me koe Bemar nahe hoga

Dev Khandelwal

koti koti dhanyvad aapka

Kripashankar Pandey

इस कलियुग में आप स्वरूपस्थिति की बात करते हैं, यह तो अद्भुत है.

निश्चित ही आपका कल्याण शीघ्र ही होगा.

Ankush Sharma

Aapka amulya samay dekar jankari dene ke liye bahut -bahut aabhar

B.k. Chatter

Wah kya khub ati sunder hamesha swath rahne ka ati uttam upay

Kripashankar Pandey

हे महात्मन्..! आप द्वारा प्रेषित मुक्तियाँ (पुस्तक) मुझे प्राप्त हो गयी है ! विभिन्न युक्तियों तथा उदाहरणों के माध्यम से आत्म तत्त्व को उपदेशित करने वाली यह पुस्तक स्वरूपस्थिति हेतु साधक के लिये पाथेय है..!
आप की इस अकारण करुणा का पात्र हो कर मैं आपके प्रति हार्दिक कृतज्ञतापूर्वक अहोभाव से भर गया हूँ ।
आपके लिये बस यही शुभकामना है कि आप इस देहपर्यन्त नरनारायण की सेवा हेतु पूर्ण समर्थ रहें तथा देहोपरान्त अनन्त काल के लिये स्वस्वरूपस्थ हों ...नतशीश नमन्.

Kamal Singh Shekhawat
Thanks sir ji bhagwan aspko lambi umar de

Navneet Jagatramka
Nice job, great to see a man like u working for social cause

Sudhir Rathi
आपके इस सेवाभाव को नमन

Visu Parmar
पहले तो आपको बहुत बहुत धन्यवाद सर जी
और आप जो ये कार्य कर रहे है वो बहुत ही सराहनीय है

Meenu Jain
Sir jai jinendra
Aapka mere or meri family pe anant upkar hai,
Kyuki maine jeene ki aas hi chhod di thi
Aapke disha nirdesh ne jeevan badal diya

Ramesh Kumar
बहुत अच्छा कार्य कर रहे है आप

Pushpa Maggu
U are doing great job for awareness of people may god bless u sir

Suresh Goswami Anupam
अतिसुन्दर मानवतावादी अनुकरणीय मिशन।बहुत बहुत साधुवाद।

Anshul Vashishtha
Thank you sir ji.... Hats off to ur sense of charity

Rohit Singh

Sar ap mahan h ap logo ka dukh dur kar the h bhagwan apko sada khus rakhe m dil se dua de RHA hu Sar apko

Vineet Krgoel
Dr Saab Namaskar ..sir your posts are really helpful towards humankind. Thanks a lot sir

Amarsingh Rajpurohit
Sir aapka Yeh nek kary desh k liye bahut kam ayega

Seema Seema
Bahut bahut dhanyavad .ap ne bahut achi salah de

Ashok Kumar Gangwal
Dr. Sab
बहुत बहुत धन्यवाद इससे बहुत लोगों को फायदा होगा

Tushar Dutt
सर आप नि:स्वार्थ एक बहुत अच्छा काम करते है वो भी बिना किसी फीस के

Sushil Dubey
आप की पोस्ट पढ़ कर प्रसन्नता मिलती है। साधुवाद ।

Arun Pathak
Sir koti - kot Parnam

Mayank Jain
Sir apko koti koti naman

Manorama Rani
I am very thankful for your help and hope it will help my daughter. Thanks once again and hope u will show your guidance to the needy

Amar Nayak
अतिसुन्दर। अद्भूत

Devendra Nath
Heartiest thank from deep of soul for posting valuable informations . Salute .....Salute.... Dr

Anil Mathur
Great thought sir ji.....We will try to give our best for this thing....Thanks.....

Anil Mathur
Amazing effort by you Dr. sahab ji...Thanku so much

Rohit Singh
Dr Sar namste Sar apnea Jo dwai btai thi colistrol kam Karen keep liye muje bhut fayda ho RHA h

Kailash Bohra
शानदार साधुवाद

Anil Mathur
शानदार शानदार शानदार शानदार शानदार शानदार शानदार

Ram Kumar Ballan
डॉक्टर साहब नमस्कार
बहुत ही सुन्दर कार्य
परमपिता परमात्मा आपको दीर्घायु करे

Mayank Jain
जय जिनेन्द्र
For supporting nd guiding me
I m grateful to u sir

Anshul Vashishtha
Dr satyanarayan thanx for sharing such a valuable information
After reading ur articles I am profoundly impressed

Anshul Vashishtha
U r doing an amazing job sir

Gulshan Jain
डॉक्टर साहब, आप बहुत नेक कम कर रहे है। बधाई। कृपा करके अपनी उपयोगी किताबे Gulshan.jain@gmail.com पर भेज दे। धन्यवाद।

Rana Thakur
sir aapki is post ki hum bhut absykta thi bina mange hi hi moti mile aapka hardik dhanyabaad

Ranjeet Singh Yadav
आज के वक्त मैं यदि कोई इतनी लाभकारी जानकारी
समाज की भलाई के लिये समय निकाल कर
निस्वार्थ बाँटता है,
यह सोच काबिले तारीफ है,

इतनी सुंदर सोच को हम दिल से सम्मान सहित सलाम करते हैं।

Vikas Shivhare
Sar mene aapki side par jaakar aapko msg karna chaha lekin nahi ho raha.
sar me ye kahna chahta hoo ki aap bahut hi shandar docter hai aur minded bhi.
aap free me logo ko rog ki teatment batate hai aur bade pyar se,namrta se baat bhi karte hai
aap best ho sar.
me apne mobile ka net ka recharg kewal aapke teatmet ko padne ke liye.hi karta hoo.
sar me iss samay bahut pareshan hoo.
Lekin me aapase milne indore jaroor aaonge kewal aapse milne aur aapko paas se dekhne ke liye aap best ho sar Charan sparsh sar

Yasmeen Budhwani
डॉक्टर सांब आप जो ये सेवा कर रहे है बहोत बडी मिसाल है
बहोत बडी सेवा कर रहे है
आपके लीये जोबी दुवा माँगे कम ही है
भगवान आपको ख़ुश ओर सुखी रखे,
ये मेरी प्रार्थना है भगवान से.

Harish Chandra Joshi
Thank you for this useful information.
It is really positive way of thinking and good cause for the humanity.
Thank you once again

Subodh Kumar Mishra
डॉ साहब प्रणाम
मै आप का बहुत आभार मानता हूँ
जिस तरह से आप निस्वार्थ भाव से सेवा कर रहे है
वैसा प्रमाण मिलना कठिन है।

Rana Thakur
Ati utaam yogdaan he sir aapka samaj ke prati.

Varun Mishra
हे महामानव, आपका मार्गदर्शन शारीरिक व अध्यात्मिक रुप से सबलता प्रदान करती है।

Durga Joshi
Dr. Shab ko thanks kahuga or sabhi dosto ko ye bhi batauga ki mai bhi dr. shab se Skin ka treatment le raha hu or mujhe 80% thik ho gaya hai.

Aap sabhi pathako ko batana chahuga ki 3 year's se maine English medicine liya tha, magar bimari kam ke jagah badh raha tha.

Kavi Anand Jain Akela
आपका परामर्श मानव मूल्यों की धरोहर है.

Meenu Jain
Jab kisi ko aapki dawa batati hu n,
usko aaram mil jata h
to bhut achha lagta h

Varun Mishra
आपका हर दवाई और विचार मानवीय जीवन के लिए अमूल्य है। इसे आत्मसात कर मानव का शारीरिक, मानसिक व अध्यात्मिक रुप से स्वस्थ व सबल जीवन जी सकता है।
हे महामानव ! आपको शत शत नमन व वंदन।

DrKishan Swaroop Sharma
एक अति सुंदर, कामयाब तथा जीवनोपयोगी पोस्ट के लिये आपको हमारी ओर से कौटी-कौटी धन्यवाद- जय श्री राधै. ..राधै जी की

Neeku Gupta
Aap se Accha Paropkari Insan is Puri Darti par no Milega Sir
Ni SWarth Sava Bhav Sir Aap Bhagwan h Ap Sir Pujniy hai.

Tikam Jain
Jai jinendra sa prnaam sa.
Aapki hr post sadhak ke liye praan vaayu ka kaam krti he.
Aatm pipasu ke liye to amrit hi he.
Chintan Krte Krte Rom Rom Pulkit Ho Jata He Aur Avrnniy Anubhav Hota He.

Anil Garg
पता नहीं कितने लोगों के जीवन में स्वास्थ्य का उजियारा किया होगा आपने डाक्टर साहब और वो भी निस्वार्थ।

Manju Singh
Good Morning Sir. I have reading all your health posts which I have found extremely helpful.
You are doing a very noble service.
Kindly give some advice and treatment of Thyroid .
Can it be cured permanently through homoeopathic treatment and medication.

Anil Garg
सौभाग्यशाली हैं वो जिनके दिल में दूसरों के लिए दर्द है।
आपको हृदय से प्रणाम डाक्टर साहब।

Ramdulare Gupta
डाक्टर साहब प्रणाम आपके आशीर्वाद से मै ठीक हूँ. आपके द्वारा बताई दवाओ से अब मै दूसरो को भी लाभान्वित करा रहा हूँ.

Aadityaa Sharma
आपको प्रणाम।
समाज के लिए आपके विचार, अपने अनुभव, समाधान, ललक
आपकी कितनी भी सराहना करे तो भी कम है।
कहने के शब्द नही मिल रहे।
मै अपनी भावना व्यक्त नही कर पा रहा हूँ।
कोटि कोटि नमन।

Neeku Gupta
Sir ji Ap to Bagwan ho
Sir ji Ap Roj New Acchi Daba Aur Gyan Ki Jankari Post Kar Rahe ho.

Subodh Kumar Mishra
डॉ साहब बहुत बहुत आभार
मै आपके ही सहारे हूँ
आपके ऊपर बहुत विश्वास है ।

Deepak Dewnani
डॉ. साहब ,सादर नमस्कार,
मैं नियमित रूप से आपकी सभी पोस्ट को पढ़ता हूँ।
इनसे काफी महत्त्वपूर्ण जानकारी प्राप्त होती हैं।
आपके द्वारा किया गया यह कार्य प्रशंसनीय है
एवं लोक कल्याण हेतु सराहनीय है।

Nishit Sharma
बहुत ही अच्छी जानकारी दी गई है
डाक्टर साहब बहुत आभार व्यक्त करते हैं
आगे भी इस तरह हमारा जीवन में मार्ग सुझाये.

Surender Kaushik

Nice Dr sahib. Great service to mankind.

Chandrakant Singh

Very very useful lines.

thank you so much.

Ramkumar Sharma

Sir ko naman
aap bahut hi punnaya ka Karya kar rahe hai

Manju Singh

Good Evening Sir.
Your prescribed medicines are very effective.
I am really thankful to you.
You are so genuine.

Shivam Saxena

Sir mai swath raho swath karo koi bhi bimari ho
Uski dava puri tarahe se fayda kar rahi hai
Thanks sir

Ramdulare Gupta

डाक्टर साहब प्रणाम आपके आशीर्वाद से मेरा शुगर लेवल बिना दवा के ठीक रहता है.

आपके द्वारा बताये गये इलाज को मैने अपने घर परिवार और गाँव मे बहुत लोगो को दिया है.

सभी को बहुत जल्दी आराम मिलता है.

आपके द्वारा बताया गया बुखार का इलाज बहुत ही प्रभावशाली है.

जिसको भी दिया है शत-प्रतिशत सकारात्मक परिणाम मिले हैं.

Narayan Lal Choudhary

Aapka every treatment 100% useful rhata hai.

Aap sir world ke best doctor ho.

Aapke btayi gyi medicine se mere ko aur mere dost ko bhoot benifit hua hai.
Ek request hai maine upper likha hai body vibration aur stage phobia ke baare mai advice digeye plzz.

Rana Thakur

Dhanyawad sir
Aaj hi le lunga mene aapki bataya anusaar kai treatment liye he or
Dusro ko bi bataya he

Jinse bhut hi fayda ho raha he.
Logo ki duaye aapko mil rahi he sir.

Kailash Chandra Khandelwal
उत्तम स्वास्थ्य हेतु अत्यन्त उपयोगी,हितकारी,जानकारियों के लिए अनंत आत्मीय साधुवाद। बधाई।

Harry Suyal
muktiya — 5 star
This is excellent to help us every time
this is excellent to help us every time

Rana Thakur
आपका बहुत बहुत आभार जो इन्गलिश दवाओ से होने बाली परेशानी ओर लुटने से बचने मै सहायता की हम आपके इस प्रयास को ओरो को भी बताता हूं जिससे गरीब जन मानस फायदा ले सके ओर सुख से रहे. आपका कोटि कोटि आभार.

Atul Singh
muktiya — 5 star
जीवन में स्वस्थ्य शरीर के लिये अति उपयुक्त पेज है,
पाये निरोग व साफ सुथरी जिन्दगी !

Kadar Khan
muktiya — 5 star
Salute dr swatantra jain...
Sacchi manav sewa koi aap se seekhe

Girish Vyas
reviewed muktiya — 5 star
Aapke jese sahi doctor sahab nahi dekha .
Great work.
Aapke pas har bimari ka ilaj he

Hansa Rohit
muktiya — 5 star
Bhagvan ne aapko bahot achhi socha di he.
Aur aajke dorme logo ko
Aapke jese ki sahi me jarurat he sir.
Bhagvan aapko bahot sakti de
Aapka prayas achha hai
Aur logo ki duvao se jarur
Aap safal hinge.....
Aur achhe kaam me

Bhagvan bhi sath deta hai
All the best.

Vipin Garg
muktiya — 5 star
बहुत अच्छा कार्य है
अगर जनता का इस पर विश्वास बनाए रखे
तब जिन्दगी मे किसी को एलोपेथिक दवाईयां खाने के कारण अलसर का भी सामना नही करना पड़ेगा

Jitendra Bhadauriya
Apka koi jod nahi hai sir
Aap logo ke liye God ho.
Jo itna app sochte ho.
Apki sari poste vardaan hai
Thanks

Chetna Kanchan Bhagat
आप दोनों ही मेरे लिए प्रेरणा रूप हो
आपके प्रेम, लोक कल्याण की भावना व सामाजिक उत्तर दायित्व की अमिट छाप मेरे मन ह्रदय में सदा से है।

Kadar Khan
Muktiya — *5 star*
Salute Dr Swatantra Jain...
Sacchi Manav sewa koi aap se seekhe.

Jeetendra Singh
Muktiya — *5 star*
Really very helpful humanity...
Dr swt....is goodman

Arvind Singh
Muktiya — *5 star*
He is great man who serving humanity unconditionally.

Jagannath Tanty
Aap ki saari baatein mere lie Amrit baan hai aor yaha bahot achhi baat hai ki main bhi kisi ke kaam aunga Dhanyabaad sir, my Gmail is

Deepak Rajput
Rajiv Dixit ji ke bad drswatantra jain ji ko maine dekha h jo is desh ke liye dil se kaam krte h warna sab lootne ka hi sochte h.

Arvind Singh
He is great man who serving humanity unconditionally

Sneh Jain
Aapki posts bindas hoti hai aur bilkul real.sach
bahut dukh hota hai
chand rupees ke liye marijo se khilwad karte hai doctors

Rana Thakur
धन्यवाद सर, कल दवाई लाता हूं
सर आपके सहयोग से हम अब काफी टाईम से किसी के द्वारा नही लुटे है
नही तो हमारी तनख्वाह का ज्यादा भाग डाक्टर साहब की फीस मे खर्च हो जाता था.

Lalit Sharma
Swasthya aur Sresth-jeevan kaise haasil ho....is disha me aapka
marg-darshan bahot anmol h....
kripaya apna aashirwaad baye rakhiyega....
dhanyawaaaad

Pawan Sharma
आपकी सेवा को नमन है डॉक्टर साहब

Rohit Singh
logo ke dukh ka niwaran karne wale dr sar m apko parnam karta hu

Piyush Jain
So Graceful. God Bless u.

Jitendra Jain Bhavya Atmn
Dr Swatantra jain ji kya Face pr Saralta h,
सबका दुख दूर करने वाले डॉक्टर, आपको सादर जयजिनेन्द्र

Devendra Pandey
Apke bare m bhut suna h
Garv hota h Hume apke sath jud k
thank you sir

Ashok Patil
Very good.
Feeling pleasure n proud of you after reading your post.
I read you for the first time.

Pc Bargot

सर में दो साल से आयुर्वेदि और एलोपेथी दवाई खाई और फिर बाद में होम्योपैथी लेकिन किसी भी दवाई से लाभ नही हुआ सिर्फ आपके द्वारा बताई गई दवाई से लाभ हुआ

Prakash Maan
You are really so great
Perhaps God have chosen you sir ji carry on please.

Tripurari Sharma
आपकी सेवा व सेवा भावना की जितनी तारीफ की जावे वो कम है

OM Singh
A Great person on a great mission.
He always helps people

Pawan Sharma
नमनः है आपकी सेवा को डॉक्टर साहब

Jeenu Bhansali Jain
Bahut hi badiya...
Anmol Jaankaari share karne ke liye.
aapko tahedil se Dhanyawaad aur naman karta hu,

-: डॉ. स्वतंत्र जैन एक परिचय :-

डॉ. स्वतंत्र जैन सा. एक प्रख्यात निःस्वार्थ डॉक्टर, लोक कल्याणकारी और मानवाधिकार के क्षेत्र के मनीषी, जनहित, प्रेरणादायी और आध्यात्मिक लेखक हैं.

देश और विदेश के लाखों लोगो तक डॉ. सा. के मुक्तियाँ ट्रस्ट द्वारा निशुल्क पहुंचाया जा रहा उ□□□□ रोगी के परिवार □□ □□□□□□ □□□□ □□ □□□□□□□□ □□□□ □□□□□□□ □□.

आपकी बताई नेचरल होम्योपैथी की दवाई रोगी के शरीर की प्रतिरक्षा प्रणाली को मजबूत कर लोगो को स्वस्थ बनाती है और रोग से पूर्ण लाभ देती है.

आज तक लाखों लोगों ने उनके □□ □□□□□ को लिया है □□ □□ □□□□ □□□□ हुआ □□.

साथ ही डॉ. सा. की भावना है कि उनकी इस नेचरल होम्योपैथी की पद्धति का विदेश में भी प्रचार-प्रसार कर सम्पूर्ण विश्व के लोगो को इसका लाभ पहुंचाना चाहते हैं.

साथ ही डॉ. सा. के मुक्तियाँ विश्व शांति, सुख समृद्धि ट्रस्ट द्वारा हर देश में समवशरण सेवा मंदिर काम्प्लेक्स की स्थापना का अति विशाल कार्य भी शुरू किया जाना है.

ये सभी एक हजार आठ समवशरण सेवा मंदिर काम्प्लेक्स दीन-दुखी, बेबस, लाचार तथा बीमार व्यक्ति को भोजन, औषधि, शिक्षा तथा सुरक्षा देंगे तथा फिर उनको सर्वांग सुखी कर सहजानंदी शुद्ध स्वरूपी चैतन्य भगवान के ज्ञान का दिव्य-प्रकाश प्रदान कर पामर से परमात्मा बनने की प्रेरणा देते रहेंगे.

इन सभी समवशरण सेवा मंदिर काम्प्लेक्स में सम्पूर्ण मानव समाज के कल्याण लिए चार प्रकार के दान या सेवा की व्यवस्था रहेगी –

a. औषधि दान या सेवा
b. शास्त्र दान या ज्ञान सेवा
c. अभय दान या सुरक्षा प्रदान करना
d. आहार दान या पौष्टिक भोजन प्रदान करना

पूरे विश्व में ऐसे 1008 समवशरण सेवा मंदिर बनाना है.

आप अन्तर्राष्ट्रीय मानवाधिकार संगठन के इन्दौर शहर के अध्यक्ष एवं मध्यप्रदेश राज्य के उपाध्यक्ष भी हैं.

आप मानवाधिकार के क्षेत्र में अतुलनीय जनहितकारी कार्य कर रहे हैं.

प्राणी मात्र के चैतन्य-सम्राट की बात करने वाले आपके आध्यात्मिक लेख भी आपकी खुद की आत्मानुभूति, आत्मज्ञान, आत्मवैभव,

निजी अनुभव और नय, न्याय एवं वैज्ञानिक प्रमाणों के आधारों पर ही लिखे गये होते हैं.

अतः आप चाहे तो उनकी लिखी सभी आध्यात्मिक पुस्तको को भी उनकी वेब साईट से डाउन लोड कर सकते हैं.

डॉ. सा. का जन्म एक जनवरी 1949 को भोपाल में हुआ था और आपने इंजीनियरिंग की डिग्री मौलाना आजाद कालेज आफ टेक्नोलाजी, भोपाल से प्राप्त की।

फिर आपने म.प्र. विधुत मंडल में विभिन्न पदों पर रहते हुए अत्यंत कुशलता एवं कर्मठता के साथ अपना कार्य निष्पादित किया एवं अधीक्षण यंत्री पद से समय पूर्व सेवानिवृत्ति ले ली।

आपने डॉक्टर आफ मेडीसिन (वैकल्पिक चिकित्सा) की उपाधि भी प्राप्त की। आपके पास आने वाले सभी पीड़ित और परेशान लोगों की दुख, बीमारी और समस्याओं का उपचार, परामर्श, सलाह एवं इलाज आप निस्वार्थ भाव से करते हैं।

आपने विभिन्न धार्मिक एवं सामाजिक संस्थाओं के अध्यक्ष एवं सचिव पद पर रहते हुए बहुत ही निपुणता के साथ उन संस्थाओं के कार्य को आगे बढ़ाया है।

आपके लेख सन्मति संदेश दिल्ली एवं अन्य पत्रिकाओं, समाचार पत्रों में छपते रहे हैं।

आपके द्वारा लिखी गई पुस्तके निम्नानुसार हैं -

1. मुक्तियाँ
2. मुक्तिशिखर
3. MUKTIYA THE ULTIMATE FREEDOM (अंग्रेजी)
4. MUKTIYA RAYS (अंग्रेजी)
5. छहढाला
6. मुक्ति-धारा
7. मुक्ति किरण
8. मुक्ति-पथ
9. मुक्ति-कुंज
10. मुक्ति महल
11. मुक्ति दीप
12. मुक्ति मार्ग
13. मुक्ति सुख
14. मुक्ति तरंग
15. मुक्ति दर्पण

आपकी वेबसाइट www.muktiya.com पर आपके सभी लेख और पुस्तके उपलब्ध हैं।

आपकी शैली अत्यंत सरल, सुबोध, शास्त्रोक्त, वैज्ञानिक एवं तर्क संगत है।

आत्मा जैसे गंभीर एवं दुरूह विषय को भी आप अपने तर्क एवं उदाहरण द्वारा इतने सहज रूप में समझाते हैं कि आत्मा की सत्ता को ही नकारने वाला श्रोता भी उस पर विचार करने को मजबूर हो उठता है।

आपकी स्पष्ट उदघोषणा है कि जिस तरह हर नागरिक को राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री बनने की स्वाधीनता है,

उसी तरह आत्मा के क्षेत्र में भी प्रजातंत्र की ही प्रतिष्ठा है। यहाँ पर भी प्रत्येक प्राणी अपनी आत्मा को गृहण कर अपना कल्याण कर परमात्मा बन सकता है।

वर्तमान में आपके द्वारा निम्न कार्य और केंद्र संचालित किये जा रहे हैं -

1. □□□□□□□□□□□□□□□□ □□□□□□□□□□□ □□□□□□ □□□□□□□ के अध्यक्ष के रूप में आपके □□□□□□□ □□□□□□□, □□□□□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□□□ □□ □□□ □□ □□□ □□□-□□□ □□□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□□□, □□□□□□□ □□ □□□□□□□□□□□ □□ केंद्र और राज्य सरकारों के समक्ष रख कर उन्हें □□□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□ □□□ □□□

2. लोक हित, प्राणिमात्र के कल्याण के लिये आपके प्रवचन छः माह तक भास्कर टी.वी. पर आते रहे हैं।

3. फेसबुक और Samadhan समाधान ग्रुप पर भी आपके लेख और बीमारियों के उपचार से सम्बंधित लेख आते रहते हैं.

4. देश-विदेश के हजारो लोग उनकी बीमारियों और परेशानियों के निवारण के लिए आपसे सम्पर्क करते रहते हैं.

आपके द्वारा संचालित निशुल्क संस्थायें और कार्य इस तरह हैं -

1. मुक्तियाँ विश्व शांति, सुख, समृद्धि ट्रस्ट –

संसार में हर ओर आज लड़ाई, झगड़ा, मार-पीट, हिंसा आतंकवाद आदि दिखते हैं, उससे मुक्ति पाने की दिशा में प्रत्येक मनुष्य अगर अपने सर्वजनहितकारी स्वरूप को स्वीकार कर हरेक दीन-हीन, दुखी, बीमार, निम्न जाति एवं वर्ण के मनुष्यों को अपने अंतरमन से मुक्त-हस्त से तन, मन एवं धन से मदद करे तो विश्व शांति की कल्पना की कल्पना साकर हो उठेगी; सुख और समृद्धि का साम्राज्य स्थापित होगा। यह कल्पना साकार करने का प्रयत्न करना ही आपका उद्देश्य है।

2. मुक्तियाँ नेचुरल होम्योपथिक हॉस्पिटल –

किसी भी तरह की तकलीफ, परेशानी है, बीमारी अगर आपको है, तो उसकी पीड़ा से आपको मुक्त करने और आपके शरीर की समस्त क्रियाओं को अत्यंत सुचारू रूप से कार्य करने योग्य बनाने और आपकी सभी तरह की शारीरिक पीड़ा से आप मुक्ति पा सकें, यही आपका प्रयत्न है और उद्देश्य है।

3. आप अपने पास आने वाले हर बीमार को दवाई के अतिरिक्त यह सलाह अवश्य देते हैं कि वे रात्रि को खाना और जमीकंद खाना बंद करें.

4. सिर्फ सूर्य तप्त शाकाहारी सादा भोजन ही लें.

5. अपने आसपास की झोपड़पट्टी में रहने वाले किसी गरीब व्यक्ति की हर हफ्ते मदद करें.

6. अध्यात्मिक कैप्सूल के रूप में आपकी पुस्तक मुक्तियाँ की एक-एक मुक्ति तीन माह तक रोज पढ़ें. इससे उनकी नेगेटिव एनर्जी कम होगी और पॉजिटिव एनर्जी बहुत तेजी से बढेगी.

आपके द्वारा सभी को खुद को स्वस्थ रखने और अन्य दूसरे हजारो-लाखों लोगो को भी स्वस्थ करने की प्रेरणा दी जा रही है.

फेसबुक के कई दोस्तों ने बताया है कि उन्होंने अपने गाँव या शहर में डॉ. सा. द्वारा बताई चिकित्सा पद्धति से मरीजों को हर तरह से निशुल्क सलाह देना और उनका उपचार करना भी शुरू कर दिया है. इस तरह इन सेवाभावी लोगो ने न केवल अपने परिवार को स्वस्थ रखा, अपितु अन्य लोगो को भी स्वस्थ बनाये रखने को कोशिश की. साथ ही गरीबों का निशुल्क उपचार भी शुरू कर दिया है और लोगों को इससे बहुत लाभ भी हुआ है.

इस तरह सभी लोग स्वस्थ रहे और अपने आसपास के लोगो को भी स्वस्थ रहने में मदद करे. तथा विश्व-बंधुत्व की ज्योत को जलाये रखने में हमे सहयोग करें.

यदि आप चाहे तो डॉ. सा. के हजारों आध्यात्मिक लेखों को पढ़ने के लिए उनकी लिखी मुक्तियाँ, मुक्ति शिखर, मुक्ति धारा, मुक्ति पथ और मुक्ति कुन्ज आदि पंद्रह आध्यात्मिक पुस्तको को muktiya.com से आप निशुल्क डाउन लोड कर सकते हैं –

इन को रोज पढने से आपकी नेगेटिव एनर्जी निश्चित ही कम होगी और पॉजिटिव एनर्जी बहुत तेजी से बढेगी.

आप सभी को यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता होगी कि डॉ. स्वतंत्र जैन सा. के प्रवचनों और साक्षात्कारों की 15 डीवीडी के सेट सभी जिज्ञासुओं को भेजे जा रहे हैं.

इन सभी 15 डीवीडी के सेट को आपके बताये पते पर कोरियर द्वारा निशुल्क प्राप्त करने के लिए कृपया आप अपना पता और मोबाइल नं. डॉ. स्वतंत्र जैन सा. के मेसेज बाक्स में भेजे.

डॉ. सा. के पचासों विडियो प्रवचन, इंटरव्यूज को यू-ट्यूब पर भी डाल दिया गया है जिनको देखने का लिंक इस तरह से है –

https://www.youtube.com/channel/UCuVsIq6F2zYNLxUNbBqalkg

डॉ. सा. के □सुख की ओर□ के पचासों प्रवचनों को □□-3 में सुनने के लिए आप इस लिंक में जाएँ –

https://we.tl/RoT5BnIbiy

डॉ. सा. के □WAY TO HAPPINES□ के इंटरव्यूज को □□-3 में सुनने के लिए आप इस लिंक में जाएँ –

https://we.tl/1Il2BRAp94

भक्त से भगवान बनें

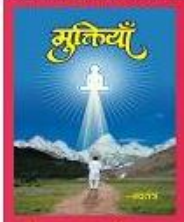

डॉ.स्वतंत्र जैन
Website : www.muktiya.com

धर्म का कार्य सदाकाल सुख देना है अपनी आत्मा को पहिचानकार मानकर एवं गृहणकर आप भी अन्य परमात्माओं के समान अपने सम्पूर्ण सुख को प्राप्तकर अमर हो कर भगवान बन सकते हो।

भक्त से भगवान बनें

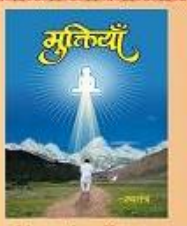

डॉ.स्वतंत्र जैन
अध्यात्मिक चिंतक व लेखक
मो. 94248 76961, 99265 00416
Website : www.muktiya.com

अगर आपको अपनी दीन-हीन अवस्था, दुख, बीमारी, गरीबी, लाचारी, बेबसी परेशान कर रही हैं तो अपने भगवान आत्मा को मानने से आप इन तकलीफो से शीघ्र ही मुक्त होकर सदाकाल रहने वाले सुख को पाकर अमर हो जावेंगे।

भक्त से भगवान बनें

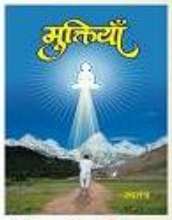

डॉ.स्वतंत्र जैन
अध्यात्मिक चिंतक व लेखक
मो. 94248 76961, 99265 00416
Website : www.muktiya.com

इस संसार में एक परमाणु भी नष्ट नही होता हैं। हर बार वह दूसरे परमाणु से क्रिया कर नया यौगिक (शरीर) बनाता हैं और पुराना यौगिक नष्ट हो जाता है। आप भी एक शरीर (यौगिक) से दूसरे शरीर में भ्रमण करते रहते हो। नये शरीर के धारण करते ही पुराना शरीर नष्ट हो जाता है। इस तरह जब एक सुक्ष्म परमाणु भी इस जन्म-मरण की क्रिया में नष्ट नहीं होता है तो फिर यह मान लें कि आप भी सदाकाल अविनाशक ही हैं अमर ही हैं। पुनः जैसे परमाणु में अपार शक्ति भरी है वैसे ही आप में भी अनन्त शक्ति एवं गुण भरे हुए हैं। इस तथ्य को स्वीकार करने से आप भी भक्त से भगवान बन जाओंगे।

भक्त से भगवान बनें

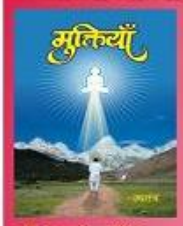

डॉ.स्वतंत्र जैन
Website : www.muktiya.com

आप अनन्त सुख, अनन्त शक्ति, अनन्त ज्ञान, अनन्त शान्ति के भंडार हो एवं वर्तमान में ही त्रिलोकीनाथ भगवान हो।

भक्त से भगवान बनें

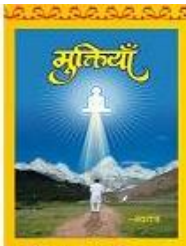

तुम स्वयं ही हो तीन लोक के नाथ

डॉ.स्वतंत्र जैन
अध्यात्मिक चिंतक व लेखक
18, विंध्याचल अपार्ट, एरोड्रम रोड, बम्बोरी
मो. 94248 76961, 99265 00416
Website : www.muktiya.com

भक्त से भगवान बनें

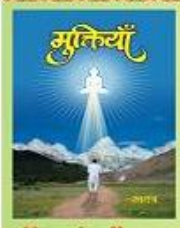

हिन्दु मुस्लिम सिख इसाई

सब ही हैं परमात्मा भाई

डॉ.स्वतंत्र जैन
अध्यात्मिक चिंतक व लेखक
18, विंध्याचल अपार्ट, एरोड्रम रोड, बम्बोरी
मो. 94248 76961, 99265 00416
Website : www.muktiya.com

भक्त से भगवान बनें

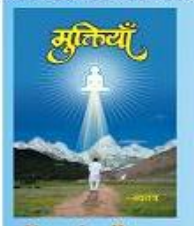

तुम स्वयं सिद्ध-बुद्ध-शुद्ध हो,
एवं सम्पूर्ण ब्रह्मांड के स्वामी हो

डॉ.स्वतंत्र जैन
अध्यात्मिक चिंतक व लेखक
18, विंध्याचल अपार्ट, एरोड्रम रोड, बम्बोरी
मो. 94248 76961, 99265 00416
Website : www.muktiya.com

भक्त से भगवान बनें

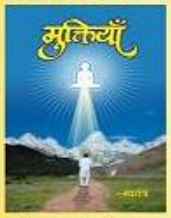

सभी मनुष्य समान रुप से भगवान हैं
चाहे राजा हो या रंक, अमीर हो या गरीब, स्त्री हो या पुरुष
बालक हो या जवान हो या वृद्ध, उच्च वर्ग हो या निम्न वर्ग

डॉ.स्वतंत्र जैन
अध्यात्मिक चिंतक व लेखक
18, विंध्याचल अपार्ट, एरोड्रम रोड, बम्बोरी
मो. 94248 76961, 99265 00416
Website : www.muktiya.com

भक्त से भगवान बनें

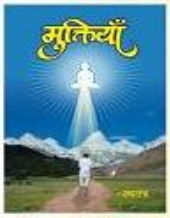

डॉ.स्वतंत्र जैन
आध्यात्मिक चिंतक व लेखक
16, विश्वास नगर, एरोड्रम रोड, बमरौद
मो. 94248 76961, 99265 00416

विश्व बंधुत्व

इस संसार में प्रत्येक प्राणों नें चौरासी लाख योनियों में से प्रत्येक योनी में 'अनन्त बार जन्म–मरण किया हैं। 'आपको दिखने वाला प्रत्येक मनुष्य किसी न किसी जन्म में 'आपका ही पारिवारिक सदस्य, दोस्त 'आदि रहा हैं। इससे यह सिद्ध होता है कि सभी मानव कभी न कभी 'आपके ही माँ, बाप, भाई, बहिन, सम्बन्धी या दोस्त रहे होंगे। 'अतः 'अब प्रत्येक दीन–हीन, दुखी, बीमार, लाचार, बेबस भाई–बहिन के 'अ ंसू पोंछना उनकी मदद करना ही विश्वबंधुत्व की भावना को साकार करना है 'और इस मार्ग पर चलकर 'आप शीघ्र ही भक्त से भगवान बन जा'ओंगे ''